CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पं० विश्वनाथ झा

श्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोशः

'सुधा' संस्कृतहिन्दीव्याख्योपेतः

प्रथमं काण्डम्

R-2396

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमरकोशः

पुस्तकालय

R:264

२२५६
2296

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीमदमरसिंहविरचितः

अमरकोशः

'सुधा' संस्कृतहिन्दीव्याख्योपेतः

[प्रथमं काण्डम्]

व्याख्याकारः
पं० विश्वनाथ झा

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर,
वाराणसी, पुणे, पटना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चम संस्करण : वाराणसी, १९७५
पुनर्मुद्रण : दिल्ली, १९८०, १९८६, १९९९

© मोतीलाल बनारसीदास

मोतीलाल बनारसीदास
बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
८ महालक्ष्मी चैम्बर, वार्डेन रोड, मुम्बई ४०० ०२६
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, चेन्नई ६०० ००४
सनाज प्लाजा, १३०२, बाजीराव रोड, पुणे ४११ ००२
१६ सेन्ट मार्क्स रोड, बंगलौर ५६० ००१
८ केमेक स्ट्रीट, कलकत्ता ७०० ०१७
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
चौक, वाराणसी २२१ ००१

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY
पुस्तकालय

मूल्य MLBD Rs 48.00

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली ११० ००७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस,
ए-४५, नारायणा, फेज-१, नई दिल्ली ११० ०२८ द्वारा मुद्रित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

पुस्तकालय

वर्ग	पृष्ठ संख्या
१. स्वर्गवर्गः	३-२१
२. व्योमवर्गः	२१-२२
३. दिग्वर्गः	२२-३६
४. कालवर्गः	३६-४८
५. धीवर्गः	४८-५६
६. शब्दादिवर्गः	५६-६६
७. नाट्यवर्गः	६६-८२
८. पातालभोगिवर्गः	८३-८७
९. नरकवर्गः	८७-८८
१०. वारिवर्गः	८९-१०७
अमरकोशप्रथमकाण्डस्थशब्दानामनुक्रमणिका	१०९-१३६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीगणेशाय नमः

अमरकोषः

सुधाख्यया व्याख्यया सहितः

प्रथमं काण्डम्

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

हृदि ध्यायं ध्यायं पशुपतिमुमाकान्तमनिशम्
तथा स्मारं स्मारं निजगुरुसुधासिक्तवचनम्।
धिया जिज्ञासूनां सकलपदविज्ञानसहिताम्
सुधाख्यां व्याख्यां वै विरचयति **वाणीशतनयः** ॥

ग्रन्थादि में 'निर्विघ्न समाप्ति के लिए' प्रचलित प्राचीन परम्परानुसार मंगलाचरण अवश्य करना चाहिए। इस अनादि शिष्ट व्यवस्थानुसार मनीषियों ने मंगलाचरण को आशीर्वादात्मक, नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मकरूप से तीन प्रकार माना है। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रारम्भ में श्रीअमरसिंह रचे जाने वाले इस ग्रन्थ की निर्विघ्नतापूर्वक समाप्ति एवं ख्याति के लिए आशीर्वाद-लक्षण मंगलाचरण करते हैं—**यस्य ज्ञानेति।** हे अनघाः! श्रिये अमृताय च यस्य ज्ञानदयासिन्धोः अगाधस्य गुणाः (सन्ति) अक्षयः स धीराः (धियं राति ददातीति, क्विप्, विश्वपावद्रूपम्) सेव्यताम् भवद्भिरिति सम्बन्धः। हे निष्पाप, भोग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान-दया के सागर, गम्भीर (विषयों में अनासक्त), सत्य, शौच, दया आदि गुणोंवाले ब्रह्मनिष्ठ गुरु की (आप) सेवा करें। अथवा—अगाधस्य ज्ञानदयासिन्धोः यस्य अनघा गुणाः (सन्ति), भो धीराः! सः अक्षयः श्रिये अमृताय च सेव्यतामित्यन्वयः।

अगाध ज्ञान और कृपा के समुद्र जिस परमात्मा के गुण निर्दोष हैं, उस परमात्मा की अर्थ और मोक्ष प्राप्ति के लिए (आप लोग) सेवा (आराधना) करें।

अर्थात् बड़े से बड़े गुणी मनुष्योंमें भी कुछ न कुछ दोष लगे ही रहते हैं, केवल एक ईश्वर ही ऐसा है, जहाँ निरवद्य (दोष से असंपृक्त) गुण ही गुण रहते हैं ऐसे ईश्वर का भजन करें, जिससे अर्थ और मोक्ष (अभ्युदय तथा निःश्रेयस, ऐहिक और पारलौकिक सुख) प्राप्त हो। ऐहिक और पारलौकिक सुखसाधन के लिए पुरुषार्थ ४ में अर्थ और मोक्ष ही सर्वाभीष्ट है ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्॥ २॥

लिङ्गज्ञानोपायं दर्शयति

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित्।
स्त्री पुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित्॥ ३॥
भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः।
कृतोऽत्र भिन्नलिंगानामनुक्तानां क्रमादृते॥ ४॥
त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति।
निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक्॥ ५॥

अन्यतन्त्राणि समाहृत्य संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः सम्पूर्णं नामलिङ्गानुशासनं वर्गैः उच्यते इति सम्बन्धः।

मंगलाचरण के बाद अब अभिधेय और प्रयोजनादि (अनुबन्धचतुष्टय) कहते हैं—**समाहृत्येत्यादि**—नाम और लिङ्गज्ञान करानेवाले व्याडि प्रभृति विद्वानों के तन्त्रों (कोषों) को मिलाकर (या संग्रह कर) प्रकरणों से युक्त, अल्प शब्दों वाले एवं अपने शब्दों द्वारा प्रकृति-प्रत्ययों से परिष्कृत सम्पूर्ण नाम और लिङ्ग को बताने वाले शास्त्र को वर्गों में बाँट कर कहता हूँ॥ २॥

प्रायशः रूपभेदेन कुत्रचित् साहचर्यात् च (पुनः) क्वचित् विशेषविधेः स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयमित्यन्वयः।

अब लिङ्ग ज्ञान का उपाय कहते हैं—प्रायशः–प्रायः रूप-भेद से (ङ्यन्त, आबन्त, विसर्गान्त, अमन्त के भेद से) स्त्रीलिङ्ग, पुंल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्गों को समझना चाहिये। यथा—यामिनी, निशा, कालः, गणरात्रम्। कहीं साहचर्य (समीपस्थनिश्चित लिङ्गवाले शब्द के अनुसार) से यथा—तडित्सौदामिनी। कहीं स्त्री, पुं०, नपुंसक के विशेष उपादान (अर्थात् मूल श्लोकों में ही 'पुमान्' 'स्त्री' 'क्लीबं' इत्यादि रूप से विधान) होने से यथा—'भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्' एवं विशेषण पद और सर्वनाम पद के प्रयोग से भी लिंगों का निश्चय करना चाहिये॥ ३॥

इस (अमरकोष) ग्रन्थ में अपने पर्याय रूप में अपठित भिन्नलिङ्ग वाले शब्दों में लिङ्ग भेद जानने के लिए द्वन्द्व, एकशेष और क्रम छोड़कर संकर नहीं किये गये हैं, किन्तु पठित और निर्दिष्ट लिग वाले शब्दों के ही द्वन्द्व, एकशेष और संकर (भिन्न लिङ्गों के मिश्रित रूप) प्रायः देखे जाते हैं॥ ४॥

तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों के लिए 'त्रिषु' पद का प्रयोग किया गया है (जैसे—'मण्डलं त्रिषु') और दो लिङ्गों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के लिए 'द्वयोः' पद का प्रयोग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. अथ स्वर्गवर्गः

स्वर्गस्य नव नामानि

स्वरव्ययं स्वर्ग-नाक-त्रिदिव-त्रिदशालयाः।
सुरलोको द्यो-दिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥

षड्विंशतिर्नामानि देवानाम्

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः।
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ २ ॥

किया गया है। (जैसे—'द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्याम्'। 'द्वयोः' द्विशब्द का उपलक्षण है। इसलिए 'द्विहीनं प्रसवे सर्वं' ठीक बैठता है।)

लिङ्गों को बतलाने के लिए जगह-जगह पुं०, पुमान्, पुंसि, ना और स्त्रियां, स्त्री तथा क्लीब शब्दों के प्रयोग आते हैं। जिस पद का जो लिङ्ग निषेध किया गया है उस निषिद्ध लिङ्ग से भिन्न लिङ्ग उस पद का समझना चाहिए। जैसे—'विमानोऽस्त्री' विमानशब्द स्त्रीलिंग में प्रयुक्त नहीं होता है। स्त्रीलिंग का निषेध होने से स्पष्ट है कि विमान शब्द का प्रयोग शेष दोनों लिङ्गों (पुलिंग और नपुंसकलिंगों) में—विमानः, विमानम् अभीष्ट है।

'तु' अन्त वाले और 'अथ' आदि वाले नामपद, लिंगपद, सर्वनामपद और अव्ययपद पूर्वान्वयी नहीं होते हैं। किन्तु इनका सम्बन्ध उत्तर पदों के साथ होता है। 'तु' शब्द से पूर्व से विशेष द्योतित होता है और 'अथ' शब्द से अर्थान्तरारम्भ की सूचना मिलती है ॥ ५ ॥

स्वः (स्वरति अप्राप्त्या उपतापयति) 'स्वः' शब्द मंगलवाची होने के कारण आरम्भ में प्रयोग किया गया है। स्वर्गः (सुष्ठु अर्ज्यते) नाकः (नास्ति अकं=दुःखमत्र) त्रिदिवः (त्रयो देवाः ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः दीव्यन्त्यत्र) त्रिदशालयः (त्रिदशानामालयः) स्वर्गादि शब्द स्वरूपार्थक हैं लक्षणा से अर्थपरक होते हैं; अतः समानार्थक न होने के कारण एक शेष नहीं किया गया है। स्वर्गश्च नाकश्च त्रिदिवश्च त्रिदशालयश्च एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वे स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः। सुरलोकः (सुराणां लोकः) द्योः (द्योतन्तेऽस्याम्, द्यौः गोवत् डोप्रत्यये) द्यौः (दीव्यन्त्यस्याम्, क्विप्, द्विवचने दिवौ) [1]त्रिविष्टपम् (तृतीयं विष्टपम् लोकः) ये नौ नाम स्वर्ग के हैं, जिनमें स्वर् शब्द अव्यय है, द्यो और द्यौ शब्द स्त्रीलिंग है तथा त्रिविष्टप् शब्द नपुंसकलिंग है। शेष पाँच शब्द पुंलिंग हैं ॥ १ ॥

अमरः (न म्रियते, अच्) निर्जरः (जराया निष्क्रान्तः) देवः (दीव्यतीति, अच्) त्रिदशः (तृतीया दशा यौवनाख्या सदा यस्य, डच्) विबुधः (विशेषेण बुध्यते कः) सुरः (सुरतीति कः) सुपर्वा (सुष्ठु पर्व उत्सवो यस्य) सुमनाः (शोभनं मनो यस्य) त्रिदिवेशः (त्रिदिवस्य ईशः) दिवौकाः (दिवम् ओको यस्य) आदितेयः (अदितेरपत्यम् ढक्) दिविषद् (दिवि

१. "पिष्टपो विष्टपोऽप्यस्त्री भुवनं च नपुंसकम्" इति अमरमाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ३ ॥
बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।
वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ४ ॥

गणदेवताया नव नामानि

आदित्य-विश्व-वसवस्तुषिताऽऽभास्वरानिलाः ।
महाराजिक साध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ ५ ॥

दश नामानि देवयोनीनाम्

विद्याधराऽप्सरो-यक्ष-रक्षो-गन्धर्वकिन्नराः ।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ६ ॥

सीदतीति, क्विप्) लेखः (लिख्यते, वञ्) अदितिनन्दनः (अदितेर्नन्दनः) आदित्यः (अदितेरपत्यम् ण्यः) ऋभुः स्वर्गवाचको ऋशब्दः, तत्र भवतीति डुः) अस्वप्नः (न विद्यते स्वप्नो यस्य सः) अमर्त्यः (म्रियन्ते अस्मिन्निति मर्तः = भूलोकः, स्तन्, तत्र भवः उपचारान्मर्तः, मर्त एव मर्त्यः, यत्, तद्भिन्नः अमृतान्धाः (अमृतमन्धोऽन्नं यस्य सः) बर्हिर्मुखः (बर्हिः = अग्निः मुखं यस्य सः) क्रतुभुक् (क्रतून् भुङ्क्ते इति, क्विप्) गीर्वाणः (निग्रहानुग्रहसमर्था गीरेव बाणो यस्य सः) दानवारिः (दानवानामरिः) वृन्दारकः (प्रशस्तं वृन्दं यस्य, आरकन्) दैवतम् (देव एव देवता, स्वार्थे तल्, ततोऽण्) ये २६ नाम देवता के हैं, जिनमें दैवत शब्द विकल्पसे पुंलिंग होता है। अभिप्राय यह है कि दैवत शब्द पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग दोनों हैं। जैसे—दैवतं वस्तु, दैवतः पदार्थः। एवं देवता शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग है। शेष २४ शब्द पुंलिङ्ग हैं। प्रायः अमरादि शब्द देवता अर्थ में बहुवचनान्त ही प्रयुक्त होते हैं ॥ २–४ ॥

[१]आदित्यः (अदितेरपत्यम् ण्यः) विश्वः (विशन्ति कर्मसु, क्वन्) वसुः (वसतीति, उः) तुषितः (तुष्यतीति, कितच्) आभास्वरः (आ समन्तात् भासनशीलः, वरच्) अनिलः (अनत्यनेन, इलच्) महाराजिकः (महती राजिः पङ्क्तिः यस्य, कप्) साध्यः (साध्यं सिद्धिरस्त्यस्य, ण्यत्) रुद्रः (रोदयत्यसुरान्) ये नौ पुंलिङ्ग नाम गणदेवता के हैं; इनमें व्यक्तिगत बाहुल्यके कारण प्रायः बहुवचनान्त शब्द का ही प्रयोग होता है।

विद्याधरः (धरतीति धरः विद्यायाः धरः) अप्सराः (अद्भ्यः सरतीति, असुन्) यक्षः (यक्ष्यते) रक्षः (रक्षत्येभ्यः) गन्धर्वः (गन्धमर्वति प्राप्नोति) किंनरः (कुत्सितः नरः) पिशाचः (पिशितं मांसमश्नातीति)। [२]गुह्यकः (गूहति रक्षतीति ण्वुल्, यगागमश्च) सिद्धः

---

१. आदित्या १२ द्वादशप्रोक्ता विश्वेदेवा दश १० स्मृताः। वसवश्चाष्टसंख्याताः ८ षट्त्रिंशत् ३६ तुषिता मताः ॥ आभास्वराश्चतुःषष्टि ६४ वाताः पञ्चाशदूनकाः ४९। महाराजिकनामानो २२० द्वे शते विंशतिस्तथा। साध्या द्वादश १२ विख्याता रुद्राश्चैकादश ११ स्मृताः ॥ २. निधिं रक्षन्ति ये यक्षास्ते स्युर्गुह्यकसंज्ञकाः। इति व्याडिः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

असुराणां दश नामानि

असुरा दैत्य-दैतेय-दनुजेन्द्रारि-दानवाः।
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ ७ ॥

अष्टादश नामानि बुद्धस्य

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः।
समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ ८ ॥
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः।
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ ९ ॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः।
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवी सुतश्च सः ॥ १० ॥

(सिद्धिरस्यास्तीति, अच्) भूतः (भूतिरस्यास्तीति, अच्) ये दश देवयोनिविशेष के नाम हैं। इनमें अप्सरस् शब्द नित्य स्त्रीलिंग और रक्षस् शब्द नित्य नपुंसकलिङ्ग होते हैं। शेष आठ शब्द पुंलिङ्ग हैं। यद्यपि मूल में जाति मानकर एकवचनान्त प्रयोग किया गया है; फिर भी इन शब्दों का प्रयोग तीनों वचनोंमें होता है ॥ ६ ॥

असुरः (अस्यति क्षिपति देवमिति, उरन्) दैत्यः (दितेरपत्यम्, ण्यः) दैतेयः (ढकि) दनुजः (दनौ जातः, डः) इन्द्रारिः (इन्द्रस्यारिः) दानवः (दनोरपत्यम्) शुक्रशिष्यः (शुक्रस्य शिष्यः) दितिसुतः (दितेः सुतः) पूर्वदेवः (पूर्वश्चासौ देवः) सुरद्विट् (सुराद् द्वेष्टि, क्विप्) ये १० पुलिंग नाम असुर के हैं। बहुवचनान्त प्रयोग प्रायिक है।

सर्वज्ञः (सर्वं जानातीति, कः) सुगतः (शोभनं गतं ज्ञानं यस्य) बुद्धः (बुध्यते इति क्तः) धर्मराजः (धर्मेण राजते) तथागतः (तथा सत्यं गतं ज्ञानं यस्य) समन्तभद्रः (समन्तं भद्रमस्य) भगवान् (भगं माहात्म्यमस्यास्तीति, मतुप्) मारजित् (मारं जयति, क्विप्) लोकजित् (लोकं जयति) जिनः (जयतीति, नक्) [1]षडभिज्ञः (षट्सु अभिज्ञा आद्यज्ञानं यस्य सः) [2]दशबलः (दशबलान्यस्य इति) अद्वयवादी (अद्वयमद्वैतं वदत्यवश्यम्, णिनिः) विनायकः (विनयत्यनुशास्ति, ण्वुल्) मुनीन्द्रः (मुनिषु इन्द्रः) श्रीघनः (श्रिया घनः पूर्णः, णत्वनिषेधः) शास्ता (शास्तीति तृच्) मुनिः (मन्यते उः) ये १८ पुंलिङ्गनाम भगवान् बुद्ध के हैं। जो शाक्यमुनि (शाक्यश्चासौ मुनिश्च) बुद्ध के अवान्तर भेद कहलाते हैं, उनके—शाक्यसिंहः (शाक्यः सिंह इव) सर्वार्थसिद्धः (सर्वार्थेषु सिद्धः)। शौद्धोदनिः (शुद्धोदनस्यापत्यम्) गौतमः (गौतमस्यायं शिष्य अण्) अर्कबन्धुः (अर्कस्य बन्धुः) मायादेवीसुतः (माया चासौ देवी चेति मायादेवी, तस्याः सुतः)—ये ७ पुंलिङ्ग नाम हैं ॥ ८–१० ॥

---

१. दिव्यं चक्षुःश्रोत्रम्, परचित्तज्ञानम्, पूर्वनिवासानुस्मृतिः, आत्मज्ञानम्, वियद् गमनम्, कायव्यूहसिद्धिः ये छः जानने योग्य ज्ञान कहे गये हैं।

२. दानं शीलं क्षमा वीर्यं ध्यानप्रज्ञाबलानि च। उपायः प्रणिधिज्ञानं दशबुद्धबलानि वै ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विंशतिर्ब्रह्मणो नामानि

ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।
हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ ११ ॥
धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः ।
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड्विधिः ॥ १२ ॥
नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कमलोद्भवः ।
सदानन्दो रजोमूर्त्तिः सत्यको हंसवाहनः ॥ प्र० ॥

ऊनचत्वारिंशन्नामानि विष्णोः

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १३ ॥
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।

ब्रह्मा (बृंहति वर्धयति प्रजाः) आत्मभूः (आत्मना भवति क्विप्) सुरज्येष्ठः (सुरेषु ज्येष्ठः) परमेष्ठी (परमे व्योम्नि तिष्ठतीति, इनिः) पितामहः (लोकपितॄणां पिता) हिरण्यगर्भः (हिरण्यं गर्भे अस्य) लोकेशः (लोकानामीशः) स्वयंभूः (स्वयमेव भवतीति) चतुराननः (चत्वारि आननानि यस्य) धाता (दधातीति, तृच्) अब्जयोनिः (अब्जं योनिरुत्पत्तिस्थानं यस्य) द्रुहिणः (द्रुह्यति दुष्टेभ्यः, इनन्) विरिञ्चिः (विरचयतीति स्वार्थण्यन्तात् इः, अकारस्येत्वं नुमागमश्च) कमलासनः (कमलमासनं यस्य सः) स्रष्टा (सृजतीति तृच्) प्रजापतिः (प्रजानां पतिः) वेधाः (विदधातीति वेधादेशोऽसिप्रत्ययश्च) विधाता (विशेषेण दधातीति) विश्वसृट् (विश्वं सृजतीति) विधिः (विधत्ते, किः) ये बीस पुंलिङ्ग नाम ब्रह्मा के हैं ॥ ११-१२ ॥

नाभिजन्मा (नाभेः जन्म यस्य सः) अण्डजः (अण्डात् जातः) पूर्वः (पूर्वयतीति अच् , प्रथमः) निधनः नितरां धत्ते इति ल्युट्) कमलोद्भवः (कमले उद्भवो जन्म यस्य) सदानन्दः (आनन्दयतीति आनन्दः, सदा आनन्दः) रजोमूर्तिः (रजसो मूर्तिः) सत्यकः (स्वार्थे कः) हंसवाहनः (हंसो वाहनं यस्य) ये नौ प्रक्षिप्त नाम ब्रह्मा के हैं ॥ प्र० ॥

विष्णुः (वेवेष्टि व्याप्नोतीति, नुः)[१] नारायणः (नराणां समूहो नारम्, तदयनं यस्य) [२]कृष्णः (कर्षत्यरीनिति, नक्) वैकुण्ठः (विकुण्ठाया अपत्यम्, अण्) विष्टरश्रवाः (विष्टर इव श्रवसी अस्य) दामोदरः (दाम बन्धनरज्जु उदरे यस्य) हृषीकेशः (हृषीकाणमिन्द्रियाणामीशः) केशवः (प्रशस्ताः केशाः सन्त्यस्य, वः) माधवः (मायाः धवः) स्वभूः (स्वतो भवति, क्विप्) ॥ १३ ॥ दैत्यारिः (दैत्यानामरिः) पुण्डरीकाक्षः (पुण्डरीके इव अक्षिणी

---

१. "अथ नारायणो विष्णुरूर्ध्वकर्मा नरायणः" इति शब्दार्णवः ॥

२, कृषिरुत्कृष्टवचनो नश्च निर्वृतिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते । इति उपनिषदाः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १४ ॥
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ १५ ॥
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ १६ ॥
विश्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।

कृष्णपितुर्द्वे नाम्नी

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ १७ ॥

बलभद्रस्य सप्तदश नामानि

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ १८ ॥
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ।
संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ १९ ॥

यस्य) गोविन्दः (गां विदन्ति लभते, शः) गरुडध्वजः (गरुडो ध्वजः चिह्नमस्य) पीताम्बरः (पीतमम्बरं यस्य) अच्युतः (न अच्योष्ट) शार्ङ्गी (शार्ङ्गं धनुरस्यास्तीति इनिः) विष्वक्सेनः (विषु नाना अञ्चतीति 'विषूची सेना यस्य' चत्वस्यासिद्धत्वात् गकारेण व्यवधानान्नषः) जनार्दनः (जननम् जनः, तमर्दयतीति ल्युः) उपेन्द्रः (इन्द्रमुपगतः) इन्द्रावरजः (इन्द्रस्याऽवरं जातः) चक्रपाणिः (चक्रं पाणौ यस्य) चतुर्भुजः (चत्वारो भुजा यस्य) । पद्मनाभः (पद्म नाभौ यस्य) मधुरिपुः (मधोः दैत्यस्य रिपुः) [१]वासुदेवः (वासुदेवस्यापत्यम्) त्रिविक्रमः (त्रिषु लोकेषु विक्रमाः पादन्यासाः यस्य) देवकीनन्दनः (देवक्या नन्दनः) शौरिः (शूरस्यापत्यम्) श्रीपतिः (श्रियः पतिः) पुरुषोत्तमः (पुरुषेभ्यः उत्तमः) [२]वनमाली (वनमाला अस्यास्तीति) बलिध्वंसी (बलिमसुरं ध्वंसितुं शीलमस्य) कंसारातिः (कंसस्यारातिः) अधोक्षजः (अधः कृतमक्षजं ज्ञानं येन) विश्वम्भरः (विश्वं बिभर्तीति) कैटभजित् (कैटभमसुरमजैषीत्, क्विप्) विधुः (विध्यत्यसुरानिति कुः) श्रीवत्सलाञ्छनः (श्रीवत्सः श्वेतरोमावर्त्तरूपो लाञ्छनं यस्य, क्रुद्ध दुर्वासा के पादप्रहार जनित रेखा विशेष को श्रीवत्स कहते हैं ।) ये ३९ पुंलिंग नाम भगवान् विष्णु के हैं ॥ १४-१६½ ॥

वसुदेवः (वसुषु दीव्यतीति) आनकदुन्दुभिः (आनकैः दुन्दुभिश्च उपलक्षितः) ये दो पुलिङ्ग नाम भगवान् कृष्ण के पिता के हैं ॥ १७ ॥

बलभद्रः (बलेन भद्रः श्रेष्ठः) प्रलम्बघ्नः (प्रलम्बं हतवानिति, कः) बलदेवः (बलेन दीव्यति) अच्युताग्रजः (अच्युतस्य अग्रजः) रेवतीरमणः (रेवत्याः रमणः) रामः (रमन्ते

---

१. 'सर्वभूतावासो वासुदेव इति श्रुतेः ।'
२. 'आपादपद्मं या माला वनमालेति सा मता' ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

कामस्यैकविंशतिर्नामानि

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः।
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः॥ २०॥
सम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः॥ २१॥
ब्रह्मसूर्विश्वकेतुः स्यात् अनिरुद्ध उषापतिः।

षड् लक्ष्म्याः नामानि

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया॥ २२॥

योगिनोऽस्मिन्निति, घञ्) कामपालः (कामान् पालयतीति, कः) हलायुधः (हलमायुधं यस्य) नीलाम्बरः (नीलम् अम्बरं वस्त्रं यस्य) रौहिणेयः (रौहिण्याः अपत्यम्) तालाङ्कः (तालः अङ्को ध्वजो यस्य) मुसली (मुसलमस्यास्तीति) हली (हलम् अस्ति अस्य) संकर्षणः (संकर्षतीति, ल्युः) सीरपाणिः (सीरः लाङ्गलं पाणौ यस्य) कालिन्दीभेदनः (कालिन्द्याः भेदनः, ल्युः) बलः (बलमस्यास्तीति, अच्) ये १७ नाम बलदेव के हैं॥ १८–१९॥

मदनः (मदयति हर्षयति, ल्युः) मन्मथः (मननं मत्, क्विप् चेतना, मथतीति मथः अच्, मतो मथः) मारः (मारयतीति, अच्) प्रद्युम्नः (प्रकृष्टं द्युम्नं बलमस्य) नीकेतनः (मीनः मकरः केतनं ध्वजो यस्य सः) कन्दर्पः (कम् मुखं तेन दृप्यतिम् अच्), दर्पकः (दर्पयतीति, ण्वुल्) अनङ्गः (नास्ति अङ्गमस्य) कामः (काम्यतेऽनेन, घः) [1]पञ्चशरः (पञ्चशराः यस्य सः) स्मरः (स्मरयति, उत्कण्ठयतीति अच्, स्मर्यते इति वो वा) सम्बरारिः (सम्बरस्य नीवेः अरिः) मनसिजः (मनसि जातः, डः) कुसुमेषुः (कुसुमं पुष्पं इषुः यस्य) अनन्यजः (नास्ति अन्यत् यस्मात् इति अनन्यः विष्णुः, तस्माज्जातः) पुष्पधन्वा (पुष्पं धनुः अस्य, अनङ्,) रतिपतिः (रतेः पतिः) मकरध्वजः (मकरो ध्वजोऽस्य) आत्मभूः (आत्मना भवतीति क्विप्) ब्रह्मसूः (ब्रह्माणं सुवति चालयतीति, क्विप्) विश्वकेतुः (विश्वस्मिन् केतुः पताका अस्य) ये २१ पुंलिंग नाम कामदेव के हैं।

अनिरुद्धः (नः निरुद्धः) उषापतिः (उषायाः पतिः) ये दो पुंलिंग नाम अनिरुद्ध के है॥ २१॥

लक्ष्मीः (लक्षयति पश्यति नीतिज्ञम्, मुट् ईप्रत्ययश्च) पद्मालया (पद्ममालयोऽस्याः) पद्मा (पद्ममस्त्यस्याः, अच्) कमला (कमलैव कमला) श्रीः (श्रयति हरिमिति, क्विप् दीर्घश्च) हरिप्रिया (हरेः प्रिया) ये ६ स्त्रीलिंग नाम लक्ष्मी के हैं॥ २२॥

---

१. अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका। नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः॥ ये ५ कामदेव के बाण कहे गये हैं। उक्त बाणों के क्रमशः कार्य हैं—उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा। सम्मोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा।
भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका ॥ प्र० ॥
शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः।
कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥ २३ ॥

गरुडस्य नव नामानि

गरुत्मान् गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २४ ॥

शिवस्याष्टचत्वारिंशन्नामानि

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः।
ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥ २५ ॥
भूतेशः खण्डपरशुः गिरीशो गिरिशो मृडः।

इन्दिरा (इन्दीं शोभां राति ददातीति, कः) लोकमाता (लोकानां माता) मा (मातीति, क्विप् टाप्) क्षीरोदतनया (क्षीरोदस्य क्षीरसमुद्रस्य तनया) रमा (रमयतीति) भार्गवी (भृगोरपत्यं स्त्री) लोकजननी (लोकानां जननी) क्षीरसागरकन्यका (कन्या एव कन्यका, क्षीरसागरस्य कन्यका, इति) ये ८ स्त्रीलिंग प्रक्षिप्त नाम लक्ष्मी के हैं ॥ प्र० ॥

पाञ्चजन्यः (पञ्चजने दैत्ये भवः, यञ्) यह एक पुंलिंग नाम भगवान् विष्णु के शंख का है। सुदर्शनः (शोभनं दर्शनमस्य, युच्) यह एक पुंलिंग नाम विष्णु के चक्र का है। कौमोदकी (कोः पृथिव्याः मोदकः कुमोदको विष्णुः, तस्येयम्) यह एक स्त्रीलिंग नाम विष्णु की गदा का है।[1] नन्दकः (नन्दयतीति देवान्, ण्वुल्) यह एक पुलिंग नाम विष्णु की तलवार का है। कौस्तुभः (कुं भुवं स्तोभते कुस्तुभो विष्णुः, तस्यायम्) यह एक पुंलिंग नाम विष्णु की मणि का है ॥ २३ ॥

गरुत्मान् (गरुतः पक्षाः सन्त्यस्य) गरुडः (गरुद्भिः डयते आकाशे गच्छतीति डः) तार्क्ष्यः (तृक्षस्य ऋषेरपत्यम्) वैनतेयः (विनतायाः अपत्यम्) खगेश्वरः (खगानामीश्वरः) नागान्तकः (नागानामन्तकः) विष्णुरथः (विष्णोः रथ इव, 'रथः पौरुषदेहयोः' तेन विष्णोः रथः पौरुषं देहो वा) सुपर्णः (शोभने पर्णे पक्षौ अस्य) पन्नगाशनः (पन्नगान् अश्नातीति, ल्युः) ये नौ पुंलिंग नाम गरुड के हैं ॥ २४ ॥

शम्भुः (शं सुखं भवतीति, दुः अन्तर्भाविण्यर्थः) ईशः (ईष्टे, कः) पशुपतिः (पशूनां पतिः) शिवः (शिवमस्यास्तीति, अच्) शूली (शूलमस्यातीति, इनिः) महेश्वरः (महांश्चासौ ईश्वरश्च) ईश्वरः (ईशितुं शीलमस्य, वरच्) शर्वः (शृणाति हन्तीति, वः) ईशानः (ईष्टे, तच्छीलः चानश्) शंकरः (शं करोतीति, अच्) चन्द्रशेखरः (चन्द्रः शेखरे यस्य) भूतेशः

---

१. चापः शार्ङ्गमुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम्। अश्वाश्च शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पवलाहकाः ॥ सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ २६ ॥
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ २७ ॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ २८ ॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ २९ ॥
अहिर्बुध्नोऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः (प्र०)
कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३० ॥

(भूतानां ईशः) खण्डपरशुः (खण्डः परशुरस्य) गिरीशः (गिरेरीशः) गिरिशः (गिरौ शेते डः) मृडः (मृडति सुखं ददातीति, कः) मृत्युंजयः (मृत्युं जयतीति, खच्, मुम्) कृत्तिवासाः (कृत्तिश्चर्म वासो यस्य) पिनाकी (पिनाकोऽस्यास्तीति, इनिः) प्रमथाधिपः (प्रमथानामधिपः) ॥ २६ ॥ उग्रः (उच्यति, क्रुद्धा संबध्यते रन् गश्च) कपर्दी (कपर्दोऽस्यातीति, इनिः) श्रीकण्ठः (श्रीकण्ठे यस्य) शितिकण्ठः (शितिः कालः कण्ठेऽस्य) कपालभृत् (कपालं बिभर्तीति) वामदेवः (वामश्चासौ देवश्चेति) महादेवः (महांश्चासौ देवश्चेति) विरूपाक्षः (विविधानि रविचन्द्राग्निरूपाण्यक्षीणि अस्य, षच्) त्रिलोचनः (त्रीणि लोचनानि यस्य) कृशानुरेताः (कृशानौ रेतो यस्य) सर्वज्ञः (सर्वं जानातीति, कः) धूर्जटिः (धूः भारभूता जटिः यस्य, इनिः) नीललोहितः (नीलश्चासौ लोहितश्च) हरः (हरतीति, अच्) स्मरहरः (स्मरं हरतीति, अच्) भर्गः (भर्जते इति, अच्, कुत्वम्) त्र्यम्बकः (त्रीणि अम्बकानि नयनान्यस्य) त्रिपुरान्तकः (त्र्यवयवं पुरं त्रिपुरं तस्यान्तकः) गंगाधरः (गंगायाः धरः, अच्) अन्धकरिपुः (अन्धकस्य दैत्यस्य रिपुः) क्रतुध्वंसी (क्रतुं ध्वंसयतीति, णिनिः) वृषध्वजः (वृषः ध्वजो यस्य) व्योमकेशः (व्योम्नि केशा यस्य) भवः (भवति प्राप्नोति सर्वम्, अच्) भीमः (बिभेति अस्मात्, मक्) स्थाणुः (तिष्ठतीति, णुः) रुद्रः (रोदयतीति, रक्, णिलुक् च) उमापतिः (उमायाः पतिः) ये ४८ पुंलिग नाम भगवान् शंकर के हैं ॥ २५–२९ ॥

[1]अहिर्बुध्नः (आहन्तीति अहि ब्रध्ने बन्धने यस्य) अष्टमूर्तिः (अष्टौ मूर्तयो यस्य) गजारिः (गजस्य अरिः) महानटः (महांश्चासौ नटश्चेति) ये ४ पुंलिग नाम भी भगवान् शंकर के हैं, यह अंश प्रक्षिप्त है ।

कपर्दः (केन जलेन परं पूर्ति ददातीति, कः) यह एक पुंलिङ्ग नाम शिव के जटा समूह का है । पिनाकः (पातीति, पा-धातोराकः प्रत्यये, इत्वं नुम् च) अजगवम् (अजेन ब्रह्मणा गम्य इति डः, ततः वः) ये दो शिव-धनुष के नाम हैं । इनमें 'पिनाक' पुंलिग है और 'अजगवम्'

---

१. 'अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानरः' इति वा पाठः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा[1]सप्त मातरः॥ प्र० ॥
विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा ।
अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाऽष्टासद्धयः॥ प्र० ॥

उमायाः सप्तदश नामानि

उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी॥ ३१ ॥
शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणि सर्वमङ्गला।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका॥ ३२ ॥
आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा।
कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका॥ प्र० ॥

नपुंसकलिंग है। प्रमथाः (प्रकृष्टेन मन्थन्ति दुष्टानिति, अच्) पारिषदाः (परिषदि साधवः, णः) ये दो पुंलिङ्ग नाम शिव के समासदों के हैं। ब्राह्मी (ब्रह्मणः इयम्, अण्) माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुण्डा ये ७ माता कहलाती हैं॥ ३० ॥ विभूतिः, भूतिः (भवनं भूतिः) ऐश्वर्यम् (ईश्वरस्य भावः) ये तीन नाम ऐश्वर्य के हैं, जिनमें 'विभूतिः' 'भूतिः' स्त्रीलिग हैं और 'ऐश्वर्यम्' नपुंसकलिंग है। ये ऐश्वर्य अणिमादि के भेद से आठ प्रकार के होते हैं। यथा—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्तिः (ये पाँच नाम स्त्रीलिंग हैं) प्राकाम्यम्, ईशित्वम्, वशित्वम् (ये तीन नाम नपुंसकलिंग हैं) ये आठ सिद्धियाँ हैं जो ऐश्वर्य कहलाती हैं।

उमा (ओः महेश्वरस्य मा लक्ष्मीः) कात्यायनी (कतस्यापत्यम् यञ्, कात्यः कात्यस्य आपत्यं स्त्री कात्यायनी ष्फः, ङीष्) गौरी (गौरो वर्णोऽस्त्यस्याः) काली (कालो वर्णोऽस्त्यस्याः) हैमवती (हिमवतः अपत्यं स्त्री, अण्) ईश्वरी (ईष्टे, वनिवन्ताङ् ङीब्रौ) शिवा (शिवमस्त्यस्याः) भवानी (भवस्य स्त्री) रुद्राणी (रुद्रस्य स्त्री) शर्वाणी (शर्वस्य स्त्री) सर्वमंगला (सर्वाणि मंगलान्यस्याः) अपर्णा (न पर्णानि सन्ति अस्याः) पार्वती (पर्वतस्येयम्) दुर्गा (दुःखेन गीयते, अङ्) मृडानी (मृडस्य स्त्री) चण्डिका (चण्डते, ण्वुल्) अम्बिका (अम्बा एव) ये १७ स्त्रीलिंग नाम पार्वती के हैं॥ ३२ ॥

आर्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकात्मजा ये चार स्त्रीलिङ्ग नाम पार्वती के प्रक्षिप्त हैं। कर्ममोटी, चामुण्डा, येदो नाम चामुण्डा के प्र० हैं। चर्ममुण्डा, चर्चिका ये दो स्त्रीलिंग नाम चण्डिका के प्र० हैं॥

---

१ 'ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही वैष्णवी तथा। कौमारीत्यपि चामुण्डा चर्चिकेत्यष्ट मातरः'॥ इति वा पाठः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गणेशस्याऽष्टौ नामानि

विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ।
अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३३ ॥

सप्तदश नामानि कार्तिकेयस्य

कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३४ ॥
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ।
षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ३५ ॥

इन्द्रस्य पञ्चत्रिंशन्नामानि ।

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।
वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥ ३६ ॥
जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।
सुत्रामा गोत्रभिद् वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ३७ ॥

विनायकः (विनयतीति ण्वुल्) विघ्नराजः (विघ्नानां राजा, टच्) द्वैमातुरः (द्वयोः मात्रोरपत्यम् , अण् उत्वं रपरत्वं च, दुर्गा और चामुण्डा से पालित होने के कारण) गणाधिपः (गणानामधिपः) एकदन्तः (एकः दन्तो यस्य) [1]हेरम्बः (हे उषसि रम्बते, अच्) लम्बोदरः (लम्बं उदरं यस्य) गजाननः (गजस्य आननमिव आननमस्य) ये आठ पुंलिङ्ग नाम गणेश के हैं ॥ ३३ ॥

कार्तिकेयः (कृत्तिकानामपत्यम, ढक्) महासेनः (महती सेना यस्य) शरजन्मा (शरेषु जन्म अस्य) षडाननः (षट् आननान्यस्य) पार्वतीनन्दनः (पार्वत्या नन्दनः) स्कन्दः (स्कन्दतीति, अच्) सेनानीः (सेनां नयतीति, क्विप्) अग्निभूः (अग्नेर्भवतीति, क्विप्) गुहः (गूहितं रक्षतीति, कः) बाहुलेयः (बहुलानामपत्यम्) तारकजित् (तारकं जयतीति) विशाखः (विशाखति व्याप्नोति, अच्) शिखिवाहनः (शिखी वाहनमस्य) षाण्मातुरः (षण्णां मातृणामपत्यम्) शक्तिधरः (शक्तेर्धरः) कुमारः (कुमारयति क्रीडयति, अच्) क्रौञ्चदारणः (क्रौञ्चस्य पर्वतस्य दारणः) ये १७ पुंलिङ्ग नाम कार्तिकेय के हैं ॥ ३४–३५ ॥

इन्द्रः (इन्दतीति, रन्) मरुत्वान् (मरुतः सन्ति अस्य) मघवा (मह्यते पूज्यते) बिडौजाः (विडं भेदकम् , ओजो यस्य) पाकशासनः (पाकस्य वृत्रभ्रातुः शासनः) वृद्धश्रवाः (वृद्धेभ्यः शृणोतीति, असुन्) सुनासीरः (सुष्ठु नासीरं सेनामुखं यस्य) पुरुहूतः (पुरुप्रचुरं हुतमाह्वानमस्य) पुरन्दरः (पुरं दारयतीति, खच्) जिष्णुः (जयतीति, ग्स्नुः) लेखर्षभः (लेखेषु देवेषु ऋषभः श्रेष्ठः) शक्रः (शक्नोतीति, रक्) शतमन्युः (शतं मन्यवो यागाः अस्य) दिवस्पतिः

---

१. "हः शंकरे हरौ हंसे रणरोमाञ्चवाजिषु ।" इति नानार्थरत्नमाला । हे उषसि रम्बते इति स्वामी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः।
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः॥ ३८॥
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः।
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रियाः॥ ३९॥
पुलोमजा शचीन्द्राणी, नगरी त्वमरावती।
हय उच्चैश्रवाः, सूतो मातलिः, नन्दनं वनम्॥ ४०॥
स्यात्प्रासादो वैजयन्तो, जयन्तः पाकशासनिः।
ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४१॥

(दिवः पतिः) सुत्रामा (सुष्ठु त्रायते, मनिन्) गोत्रभिद् (गोत्रान् भिनत्तीति, क्विप्) वज्री (वज्रोऽस्यास्तीति) वासवः (वसोरपत्यम्) वृत्रहा (वृत्रं हतवान्) वृषा (वर्षतीति, कनिन्) वास्तोष्पतिः (वास्तोः गृहक्षेत्रस्य पतिः, निपातनात् षष्ठ्या अलुक्) सुरपतिः (सुराणां पतिः) वलारातिः (वलस्य दैत्यविशेषस्य अरातिः) शचीपतिः (शच्याः पतिः) जम्भभेदी (जम्भमसुरं भेत्तुं शीलमस्य) [1]हरिहयः (हरिः स्वर्णाभः हयो यस्य) स्वाराट् (स्वः राजते दीर्घः) नमुचिसूदनः (न मुञ्चतीति नमुचिः, नमुचेः सूदनः) संक्रन्दनः (संक्रन्दयतीति, ल्युः) दुश्च्यवनः (दुःखेन च्यवनमस्य) तुराषाट् (तुरं वेगवन्तं साहयत्यभिभवति) मेघवाहनः (मेघाः वाहनमस्य) आखण्डलः (आ खण्डयतीति, कलच्) सहस्राक्षः (सहस्रं अक्षीण्यस्य) ऋभुक्षाः (ऋभवः देवाः क्षीयन्त्यत्र डः, सोऽस्यास्तीति इनिः, पथिवत्) ये ३५ पुंलिङ्ग नाम देवराज इन्द्र के हैं। इन्द्र पत्नी का नाम आगे कहा जाता है॥ ३६–३९॥

तस्य इन्द्रस्य प्रिया तु-पुलोमजा (पुलोम्नो जाता, डः) शची (शचते व्यक्तं वदतीति, इनिः, ङीप्) इन्द्राणी (इन्द्रस्य स्त्री) ये ३ स्त्रीलिङ्ग नाम इन्द्रपत्नी इन्द्राणी के हैं। इन्द्र की नगरी का एक स्त्रीलिङ्ग नाम है—अमरावती (अमराः सन्त्यस्याम्)। इन्द्र के घोड़े का एक पुलिंग नाम है—उच्चैःश्रवाः (उच्चैः श्रवसी कर्णौ यस्य, असुन्) इन्द्र के सारथि का एक पुलिंग नाम है–मातलिः (मतलस्यापत्यम्, इञ्) इन्द्र के वन का एक नपुंसक नाम है—नन्दनम् (नन्दयतीति, ल्युः)॥ ४०॥

इन्द्र के निवासगृह का पुंलिंग नाम है–वैजयन्तः (वैजयन्त्यः पताकाः सन्त्यस्य, अच्)। इन्द्र के पुत्र के दो नाम पुंलिङ्ग है–जयन्तः (जयतीति, झच्) और पाकशासनिः (पाकशासनस्यापत्यम्, इञ)।

ऐरावतः (इरावति समुद्रे भवः अण्) अभ्रमातङ्गः (अभ्रे विद्यमानो मातङ्गः) ऐरावणः (इरया जलेन वणति शब्दं करोतीति अच्–इरावणः, ततः प्रज्ञाद्यण्) अभ्रमुवल्लभः (अभ्रमोः वल्लभः) ये ४ पुंलिंग नाम इन्द्र के हाथी के हैं॥ ४१॥

---

१. 'त्वक्केशबालरोमाणि सुवर्णाभानि यस्य तु। हरिः स वर्णतोऽश्वस्तु पीतकौशेयसप्रभः'॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वज्रस्य दश नामानि

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः।
शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४२ ॥
व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः।
स्यात् सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ४३ ॥
मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका।
मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४४ ॥

ह्रादिनी (ह्रादते, आवश्यके णिनिः) [१]वज्रम् (वजतीति, रन्) कुलिशम् (कुलौ हस्ते शेते, डः) भिदुरम् (भिनत्तीति, कुरच्) पविः (पुनातीति, इः) शतकोटिः (शतं कोटयो धारा यस्य) स्वरुः (स्वरतीति, उः) शम्बः (शम्बयति सम्बध्नातीति) दम्भोलिः (दम्नोति खेदयति, ओलिः) अशनिः (अश्नातीति, क्निः) ये दस नाम वज्र के हैं, जिनमें ह्रादिनी शब्द स्त्रीलिंग है, वज्रम्,–यह दोनों लिंग (पुं० न०) है, कुलिशम्, भिदुरम् नित्य नपुंसक है। अशनिः शब्दः पुं०, स्त्री० दोनों है, शेष पाँच शब्द पुंलिंग हैं ॥ ४२ ॥

व्योमयानम् (व्योम्नि यात्यनेन, ल्युट्) [२]विमानः (विशिष्टं मानयन्त्यनेन, घः) ये दो नाम आकाश में उड़ने वाले देवरथ (हवाई जहाज) के हैं, जिनमें व्योमयानम् नित्य नपुंसक है और विमानः पुं० न० दोनों लिंग में प्रयुक्त होता है। देवर्षि का एक पुंलिंग नाम है—[३]नारदः (नारं जलं ददातीति, कः) आदिपद से तुम्बुरु, भरत, पर्वत, देवल प्रभृति का संग्रह समझना चाहिये। सुधर्मा (शोभनो धर्मो अस्याम्, अनिच्) देवसभा (सह भान्त्यस्यां, देवानां सभा इति निपातनादङ्) ये दो स्त्रीलिंग नाम देवसभा के हैं। [४]पीयूषम् (पीय्यते, ऊषन्) अमृतम् (न म्रियते अनेन, तन्) सुधा (सुखेन धीयते, अङ्) ये तीन नाम अमृत के हैं जिनमें पीयूषम्, अमृतम् न० है और सुधा शब्द स्त्री० है ॥ ४३ ॥

मन्दाकिनी (मन्दमकितुं गन्तुं शीलमस्याः, णिनिः) वियद्गंगा (वियति या गंगा सा) स्वर्णदी (स्वः स्वर्गस्य नदी पूर्वपदादिति- णत्वम्) सुरदीर्घिका (सुराणां दीर्घिका) ये ४ स्त्री० नाम देवगंगा के हैं।

मेरुः (मिनोति प्रक्षिपतीति, रुः) सुमेरुः (सुष्ठु मिनोतीति, रुः) हेमाद्रिः (हेम्नः अद्रिः)

---

१. 'अस्त्रियौ वज्रकुलिशाविति संसारावर्तः। वज्रं स्याद् बालके धात्र्यां क्लीबं योगान्तरे पुमान्। वज्रं स्नुह्यां गुडूच्यां च वज्री स्नुह्यन्तरे स्मृता।'

२. विमानो व्योमयाने च सप्तभूमि गृहेऽपि च। घोटके यानमात्रे च पुंनपुंसकयोर्मतः ॥

३. 'नारं पानीयमित्युक्तं तद् पितृभ्यः सदा भवान्। ददाति तेन ते नाम नारदेति भविष्यतीत्यागमः ॥'

४. स्यात्पेयुषं च पीयूषं नवक्षीरेऽमृतेऽपि च। इति हारावली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ४५ ॥
सनत्कुमारो वैधात्रः स्ववैंद्यावश्विनीसुतौ।
नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ४६ ॥
स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः।
हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ४७ ॥

अग्नेश्चतुस्त्रिंशन्नामानि

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः।

रत्नसानुः (रत्नानि सानौ अस्य) सुरालयः (सुराणामालयः) ये ५ पुं० नाम सुमेरु पर्वत के हैं ॥ ४४ ॥

एते पञ्च देवतरवः=देववृक्षाः। मन्दारः (मन्दयते मोदयति, आरन्) पारिजातकः (पारिणोऽब्धेः जातः, ततः स्वार्थे कन्)[१]संतानः (सम्यक तनोति पृष्णाति, णः) कल्पवृक्षः (कल्पस्य वृक्षः)[२]हरिचन्दनम् (हरेश्चन्दनम्) ये ५ नाम देववृक्षों के हैं, इनमें ४ नाम पुं० हैं और हरिचन्दनम् नपुं०, पुं० दोनों है ॥ ४५ ॥

सनत्कुमारः (सनत्=नित्यं कुमारः) वैधात्रः (विधातुरपत्यम्) ये दो पुं० नाम ब्रह्मा के पुत्र के हैं। स्ववैंद्यौ (स्वः स्वर्गस्य वैद्यौ) अश्विनीसुतौ (अश्विन्याः सुतौ) नासत्यौ (न सत्यं ययोस्तौ, न असत्यौ) अश्विनौ (प्रशस्ता अश्वाः सन्ति ययोस्तौ, इनिः)[३]दस्रौ (दस्यतः क्षिपतः रोगान्, रक्) आश्विनेयौ (अश्विन्याः अपत्ये) ये ६ पुं० नाम अश्विनीकुमारों के हैं। 'तावुभौ' द्वित्व निर्दिष्ट होने से इनका द्विवचनान्त ही प्रयोग होता है ॥ ४६ ॥

[४]अप्सरसः (अद्भ्यः सरन्ति, असुन्) उर्वशी (ऊरून् महतः अश्नुते व्याप्नोति वशीकरोति) आदि स्वर्ग की वेश्या का एक स्त्रीलिंग नाम है। 'बहुषु' कहने से नित्य बहुवचनान्त ही ध्वनित होता है किन्तु भाष्यकार ने 'अनचि च' सूत्र में 'अप्सराः' एकवचनान्त भी प्रयोग किया है।

[५]हाहाः (हा शब्दं जहातीति, विच्) हूहूः (हू इति ह्वयति, क्विप्) गन्धर्वः (गन्धं अर्वति) ये तीन पुंलिंग नाम देवगायकों के हैं, जो गन्धर्व कहलाते हैं ॥ ४७ ॥

[६]अग्निः (अङ्गतीति निर्नलोपश्च) वैश्वानरः (वैश्वानरस्यापत्यम्, अण्) वह्निः (वहतीति,

---

१. संतानः संततौ गोत्रे स्यादपत्ये सुरद्रुमे। २. हरिचन्दनमस्त्री स्यात्त्रिदशानां महीरुहे। नपुंसकं तु गोशीर्षे ज्योत्स्नाकुंकुमयोरपि ॥ ३. दस्रः खरेऽश्विनीसुते। ४. स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्यादेकत्वेऽप्सरा अपि। अप्सराओं के विशेष नाम हैं—घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा। सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः॥ ५. गीतमाधुर्यसंपन्नौ विख्यातौ च हहाहुहू। इति व्यासः। 'गन्धर्वं हाहसि प्रोक्तः' 'त रत्नकोषः।

६. अग्निर्वैश्वानरेऽपि स्या च्चत्रकाख्यौषधौ पुमान्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ४८ ॥
बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ४९ ॥
लोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५० ॥
सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
शुचिरप्पित्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५१ ॥
वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
त्रिषु स्फुलिंगोऽग्निकणः संतापः संज्वरः समौ ॥ ५२ ॥

निः) वीतिहोत्रः (वीतिः भक्ष्यं हूयतेऽस्मिन्, त्रन्) धनञ्जयः (धनं जयतीति, खच्) [१]कृपीटयोनिः (कृपीटस्य जलस्य योनिः) ज्वलनः (ज्वलतीति, युच्) जातवेदाः (जातं वेत्तीति, असुन्) तनूनपात् (तनुं स्वशरीरं न पाति, न रक्षति आशुविनाशित्वात्, शत्रन्तः) [२]बर्हिः (बृंहतीति) शुष्मा (शुष्यते अनेनेति नान्तः) कृष्णवर्त्मा (कृष्णो वर्त्माऽस्य) शोचिष्केशः (शोचींषि ज्वालाः केशा इवास्य) उषर्बुधः (उषः प्रभाते सन्ध्यायां च बुध्यते प्रकाशते इति) आश्रयाशः (आश्रयं आधारम् अश्नातीति, अण्) बृहद्भानुः (बृहन्तो भानवोऽस्य) कृशानुः (कृश्यतीति, आनुक्) पावकः (पुनातीति, ण्वुल्) अनलः (अनित्यनेन, कलच्) लोहिताश्वः (लोहिताः अश्वाः यस्य) वायुसखः (वायुः सखा यस्य) शिखावान् (शिखाः सन्त्यस्य) आशुशुक्षणिः (आशोष्टुमिच्छतीति, अनिः) हिरण्यरेताः) हिरण्यं रेतो यस्य). हुतभुक् (हुतं भुंक्ते) दहनः (दहतीति, ल्युः) हव्यवाहनः (हव्यं वाहयतीति, ल्युः) सप्तार्चिः (सप्तार्चिषो जिह्वा यस्य–काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी, विश्वदासा ये सात अग्नि की जिह्वा हैं) दमुनाः (दाम्यतीति, उनस्) [३]शुक्रः (शोचयतीति, रक्), चित्रभानुः (चित्राः भानवोऽस्य) विभावसुः (विभा वसु धनं यस्य) शुचिः (शुचयतीति, इः) अप्पित्तम् (अपां पित्तम्) ये ३४ नाम अग्नि के हैं। इनमें 'अप्पित्तम्' नपुंसकलिङ्ग है। शेष ३३ नाम पुलिङ्ग हैं। और्वः (उर्वस्यापत्यम्) [४]वाडवः (वडवायां भवः) वडवानलः (वडवाया अनलः) ये तीन पुं० नाम समुद्राग्नि के हैं ॥ ५१ ॥

ज्वालः (ज्वलतीति, णः) कीलः (कीलति बध्नातीति, कः) अर्चिः (अर्च्यते, इसिः) [५]हेतिः (हिनोतीति, क्तिः) शिखा (शेते इति, खः) ये ५ नाम ज्वाला (आग की लहर) के हैं, जिनमें ज्वालः, कीलः स्त्री० पुं० दोनों है; अर्चिस् स्त्री० नपुं० है एवं हेतिः और शिखा शब्द

---

१. कृपीटमुदरे जले । इति रत्नकोषः । २. वर्हिरुक्तो बृहद्भानुः ।
३. शुक्रो वैश्वानरे वह्निः बर्हिः शुष्मतनूनपात् । इति शब्दार्णवः ।
४. वाडवं करणे स्त्रीणां घोटकौघे नपुंसकम् । पाताले न स्त्रियां पुंसि ब्राह्मणे वडवानले ।
५. हेतिः स्यादायुधज्वाला सूर्यतेजः स योषिति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितभस्मनी।
क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः॥ ५०॥
धर्मराजः पितृपतिः समवर्त्ती परेतराट्।
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड् यमः॥ ५३॥
कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः।

राक्षसस्य पञ्चदश नामानि

राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः॥ ५४॥
रात्रिञ्चरो रात्रिंचरः कर्बुरो निकषात्मजः।
यातुधानः पुण्यजनो नैरृतो यातुरक्षसी॥ ५५॥

स्त्रीलिंग हैं। स्फुलिंगः (स्फुना फूत्कारेण लिंगतीति, अच्) अग्निकणः (अग्नेः कणः) ये दो त्रिलिंगनाम अग्निकण (चिनगारी) के हैं।

संतापः (संतापयतीति, अच्) संज्वरः (संज्वरयतीति, अच्) ये दो पुं० नाम अग्नि के ताप के हैं॥ ५२॥

अग्नि से निकली ज्वाला का १ नाम प्रक्षिप्त उल्का (अर्यते, नि०) है। भस्म के—भूतिः, भसितम्, भस्म, क्षारः, रक्षा ये ५ नाम प्रक्षिप्त हैं। दावाग्नि के—दावः, दवः, वनहुताशनः—ये ३ पुं० नाम प्रक्षिप्त हैं।

धर्मराजः (धर्मस्य राजा) पितृपतिः (पितॄणां पतिः) समवर्ती (समं वर्तितुं शीलमस्य, णिनिः) परेतराट् (परेतेषु मृतेषु राजते, क्विप्) कृतान्तः (कृतोऽन्तो येन) यमुनाभ्राता (यमुनायाः भ्राता) शमनः (शमयतीति, ल्युः) यमराट् (यमेन संयमेन राजते, क्विप्) [1]यमः (यमयतीति, अच्)॥ ५३॥ [2]कालः (कलयति गणयति आयुः) दण्डधरः ([3]दण्डस्य धरः) श्राद्धदेवः (श्राद्धस्य देवः) वैवस्वतः (विवस्तोऽपत्यम्, अण्) अन्तकः (अन्तयतीति, ण्वुल्) ये १४ पुं० नाम यमराज के हैं॥ ५३$\frac{1}{2}$॥

[4]राक्षसः (रक्षत्यस्मात्, असुन्, प्रज्ञाद्यणि) कौणपः (कुणपं शवं भक्षितुं शीलमस्य, अण्) क्रव्यात् (कृत्तं छिन्नं तदेव पुनर्विशेषतः कृतं पक्वं च भुङ्क्ते इति) क्रव्यादः (कृतविकृत-पक्वशब्दस्य पृषोदरादित्वात् क्रव्यादेशः क्रव्यमाममांसमत्तीति, विट् क्रव्याद्=पक्वमांसशब्दे उपपदेऽण्, उपपदस्य पृषोदरादित्वात् क्रव्यादेशः,) अस्रपः (अस्रं रक्तं पिबतीति, कः) [5]आशरः आश्रृणोतीति, अच्) रात्रिञ्चरः (रात्रौ चरतीति, टः, मुम्, मुमभावे—रात्रिचरः) कर्बुरः (कर्वति हन्ति, कुरच्) निकषात्मजः (निकषायाः आत्मजः) यातुधानः (यातूनि रक्षांसि दधाति पुष्णाति युच्) पुण्यजनः (पुण्यश्चासौ जनश्चेति) नैरृतः (निरृतेरपत्यम्) यातुः

---

१. यमो दण्डधरे ध्वाङ्क्षे संयमे यमजेऽपि च। इति विश्वः।

२. कालो मृत्यौ महाकाले समये यमकृष्णयोः। ३. दण्डधारो यमे राज्ञि। ४. राक्षसो जातुधाने स्याच्चण्डायां राक्षसी स्मृतः। ५. आशिरो धनुषः शंकुः क्रव्यादोऽस्रप आसरः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्च नामानि वरुणस्य

प्रचेता वरुणः पाशा यादसांपतिरप्पतिः।

वायोर्विंशतिनामानि

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः॥ ५६॥
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः।
समीर-मारुत-मरुज्जगत्प्राण-समीरणाः ॥ ५७॥
नभस्वद्वात-पवन-पवमान-प्रभञ्जनाः ।
प्रकम्पनो महावातो झञ्झावातः सवृष्टिकः॥ प्र० ॥
प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः॥ ५८॥

(यातीति, तुः) रक्षः (रक्षत्यस्मात्, असुन्) ये १५ नाम राक्षस के हैं, जिनमें १३ पुं० हैं, शेष दो शब्द 'यातु' 'राक्षस' नपुंसक हैं॥ ५४–५५॥

प्रचेताः (प्रकृष्टं चेतोऽस्य) वरुणः (वृणोतीति, उनन्) पाशी (पाशोऽस्यास्तीति) यादसांपतिः (षष्ठ्या अलुक्) अप्पतिः (अपां पतिः) ये ५ पुं० नाम वरुण के हैं॥ ५५½॥

(श्वसनः) (श्वसित्यनेन, ल्युट्,) स्पर्शनः (स्पृशतीति, युच्) वायुः (वातीति उण् युक् च) मातरिश्वा (मातरि अन्तरिक्षे श्वयति वर्धते, इति कन् निपातनात्, अलुक् [1]सदागतिः (सदा गतिरस्य) पृषदश्वः (पृषद् मृगभेदः अश्वोऽस्य) गन्धवहः (गन्धस्य वहः, अच्) [2]गन्धवाहः (गन्धं वहतीति, अण्) [3]अनिलः (अनित्यनेन, इलच्) [4]आशुगः (आशु शीघ्रं गच्छतीति, डः) समीरः (सम्यक् ईरयति प्रेरयति, अच्) [5]मारुतः (म्रियन्तेऽनेन विना इति मरुत् मरुदेव, अण्) जगत्प्राणः (जगतां प्राणः) समीरणः (सम्यक् ईर्ते गच्छति, युचि) नभस्वान् (नभः आश्रयत्वेनास्यास्तीति) वातः (वातीति, तन्) पवनः (पुनातीति) पवमानः (पवते इति शानन् मुक्च) प्रभञ्जनः (प्रकृष्टं भनक्ति, युचि) ये बीस पुंलिङ्ग नाम वायु के हैं।

प्रकम्पनः (प्रकृष्टं कम्पयतीति युच्)—यह एक पुंलिंग नाम आँधी का है। झंझावातः (झंझा इति ध्वनियुक्तो वातीति) यह एक पुं० नाम वर्षासहित वायु का है।

प्राणः (प्राणयतीति, ण्यन्तादानयतेरच्) अपानः (अपानयतीति) समानः (समन्तादानयतीति) उदानः (उत् ऊर्ध्वमानयतीति) व्यानः (व्यानयतीति सर्वत्र अच्) ये पाँच पुं० नाम शरीरस्थ वायु के हैं। हृदय में प्राण, गुदा में—अपान, नाभि में—समान, कण्ठमें—उदान और समस्त शरीर में रहनेवाला वायु व्यान कहा जाता है। हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले। उदानः कण्ठदेशे स्याद् व्यानः सर्वशरीरगः॥ ५८॥

---

१. सदा गतिर्नाकवातनिर्वाणेषु सदीश्वरे। गन्धवाहो मृगेऽनिले। २. गन्धवाहं तु नाशायाम्। ३. अनिलो वसुवातयोः। ४. आशुगोऽर्के शरे वायौ। ५. मरुतः स्पर्शनः प्राणः समीरो मारुतो मरुत्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शरीरस्था इमे, रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ।
जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ५९ ॥
सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।

नित्यस्य नव नामानि

सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ॥ ६० ॥
नित्यानवरताजस्रमपि, अथातिशयो भरः ।
अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६१ ॥
तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ।
क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६२ ॥

रंहः (रंहत्यनेन, असुन्) तरः (तरत्यनेन असुन्) रयः (रयतेऽनेन, घः) स्यदः (स्यन्दतेऽनेन घञन्तो निपातः) जवः (जवनम् , अप्) ये ५ नाम वेग के हैं जिनमें रंहस्, तरस् शब्द नपुंसक हैं शेष ३ पुंलिङ्ग हैं। शीघ्रम् (शिङ्घति व्याप्नोतीति) त्वरितम् (त्वरते स्म क्तः) लघु (लङ्घते कुः, नलोपश्च) क्षिप्रम् (क्षिपतीति, रक्) अरम् (ऋच्छतीति, अच्) द्रुतम् (द्रवति स्म, क्तः) सत्वरम् (सह त्वरया वर्तते) [1]चपलम् (चोपयतीति, कलः उपधा-उकारस्यात्वं च) तूर्णम् (त्वरते स्म, इडभावे ऊठ्) अविलम्बितम् (विलम्बते स्म क्तः ततो नञा समासः) [2]आशु (अश्नुते इति उण्) ये ११ नपुंसक नाम शीघ्रता के हैं ॥ ५९–५९½ ॥

सततम् (सं तन्यते स्म, क्तः, नलोपे, समो मलोपे च) अनारतम् (न आरतम् यस्मिन्) अश्रान्तम् (अविद्यमानं श्रान्तमस्मिन्) संततम् (संतन्यते स्म, मलोपाभावपक्षे) अविरतम् (नास्ति विरतमस्य) अनिशम् (नास्ति निशा अस्मिन्) नित्यम् (नियमेन भवम्, ध्रुवार्थे त्यप्) अनवरतम् (नास्ति अवरतं यत्र) अजस्रम् (न जस्यति न मोचति, रः) ये ९ नपुंसक नाम नित्यके हैं। आपिशलिने—सततम्, अजस्रम् को नित्य पर्याय मानकर अव्यय प्रकरण में पढ़ा है। सततम्, अजस्रम् का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ क्रियान्तर का अव्यवधान हो और क्रियान्तरके व्यवधान में अतिशयः का ही प्रयोग होता है।

अतिशयः (अतिशेते, अच्) भरः (भरतीति, अच्) अतिवेलम् (वेलां मर्यादामतिक्रान्तम्) भृशम् (भृश्यतीति, कः) अत्यर्थम् (अर्थो विषयः तमतिक्रान्तम्) अतिमात्रम् (मात्रामतिक्रान्तम्) उद्गाढम् (उद् गाहते स्म विलोडयति स्मेति, क्तः) निर्भरम् (निःशेषेण भरोऽत्र) तीव्रम् (तीवतीति, रक्) एकान्तम् (एकोऽन्तो निश्चयोऽत्र) नितान्तम् (नितास्यति स्म, क्तः, दीर्घे च) गाढम् (गाहते स्म) बाढम् (बाहते स्म निपातनम्) दृढम् (दृंहति स्म नि०) ये १४ नाम अतिशय (अधिक) के हैं। इनमें 'अतिशयः' 'भरः' ये दो पुंलिङ्ग हैं; शेष १२ नाम नपुंसक हैं। पौनः पुन्य जहाँ हो वहाँ 'अतिशय' शब्द का प्रयोग होता है। 'शीघ्रम्

---

१. चपलः पारदे मीने चोरके प्रस्तरान्तरे। चपला कमला विद्युत्पुंश्चली पिप्पलीषु च ॥ पुंनपुंसकं तु शीघ्रे स्यात् वाच्यवत्तरले चले। २. आशुस्तु व्रीहि शीघ्रयोः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सप्तदश नामानि कुबेरस्य

कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः ।
मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६३ ॥
किंनरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ।
यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६४ ॥
अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
कैलासः स्थानमलका पूर्विमानं तु पुष्पकम् ॥ ६५ ॥
स्यात् किन्नरः किंपुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ।

से दृढम्' तक के शब्दों का प्रयोग क्रिया विशेषण होने के कारण (द्रव्यवाचक न होने से) नपुंसक लिगमें ही प्रयुक्त होता है और इनके मध्य में जो द्रव्यवाचक होंगे उनका तीनों लिगों में प्रयोग होगा । अद्रव्यवाचक जैसे—शीघ्रं व्रजति, त्वरितं जल्पति, तूर्णं कुरु, क्षिप्रं देहि आदि, द्रव्यवाचक जैसे—चपला गौः, चपलः पुमान् , चपलं ज्ञानम् आदि । 'अतिशय' और 'भर' शब्द अद्रव्यवाचक होने पर भी पुंलिङ्ग ही रहेंगे ॥ ६०–६२ ॥

[1]कुबेरः (कुत्सितं बेरं शरीरमस्य) त्र्यम्बकसखः (त्र्यम्बकस्य सखा, टच्) यक्षराट् (यक्षेषु राजते, क्विप्) गुह्यकेश्वरः (गुह्यकानामीश्वरः) मनुष्यधर्मा (मनुष्यस्य इव धर्मोऽस्य, अनिच्) धनदः (धनं दयते=पालयति, कः) राजराजः (राज्ञां राजा) धनाधिपः (धनानामधिपः) किंनरेशः (किन्नराणामीशः) वैश्रवणः (विश्रवसोऽपत्यम् , निपा० अण्) पौलस्त्यः (पुलस्तेर्गोत्रापत्यम् , यञ्) नरवाहनः (नरो वाहनमस्य णत्वनिषेधः) यक्षः (यक्ष्यते इति घः) एकपिङ्गः (एकं नेत्रं पिंगमस्य) ऐलविलः (इलविलाया अपत्यम् , डलयोरभेदात् , ऐडविडोऽपि) श्रीदः (श्रियं ददातीति, कः) पुण्यजनेश्वरः (पुण्यजनानामीश्वरः) ये १७ नाम कुबेर के हैं ॥ ६३–६४ ॥

चैत्ररथम् (चित्ररथेन निर्वृत्तम् , अण्) यह एक नपुंसक नाम कुबेर के उद्यान (उद्यान्ति अस्मिन् , ल्युट्) का है । [2]नलकूबरः (नलः कूबरो युगन्धरो यस्य) यह एक पुं० नाम कुबेर के पुत्र का है । कैलासः (केलासस्याऽयम् , अण्) यह एक पुंलिंग नाम कुबेर के स्थान का है । [3]अलका (अलति भूषयतीति, क्वुन् , क्षिपकादित्वान्नेत्वम्) यह एक स्त्रीलिंग नाम कुबेर की नगरी का है । [4]पुष्पकम् (पुष्पमिव इति कन्) यह एक पुं० नाम कुबेर के विमान का है ॥ ६५ ॥

किन्नरः (कुत्सितो नरः) किंपुरुषः (कुत्सितः पुरुषः) तुरंगवदनः (तुरंगस्येव वदनं

१. कुत्सायां क्विति शब्दोऽयं शरीरं वेरमुच्यते । कुबेरः कुशरीरत्वान्नाम्ना तेनैव सोऽङ्कितः ॥ वा० पु० । २. पुत्रौ तु नलकूबरौ । इति त्रिकाण्डशेषः । वस्तुतस्तु नलकुबरमणिग्रीवयोस्तत्पुत्रयोः पुराणे प्रसिद्धिः । ३. अलका कुबेरे पुर्यामस्त्रियां चूर्णकुन्तले । ४. विमानं तु पुष्पकोऽस्त्री नगरी त्वलका प्रभा—इति शब्दार्णवात्पुंस्त्वमपि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निधिर्ना शेवधिर्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ ६६ ॥
महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ ।
मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ ७० ॥

इति स्वर्गवर्गः ।

२. अथ व्योमवर्गः

आकाशस्य षोडश नामानि

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योमपुष्करमम्बरम् ।
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।

मुखमस्य) [१]मयुः (मिनोति प्रक्षिपतीति, उः) ये ४ पुं० नाम कुबेर के दूत के हैं।

निधिः (नितरां धीयतेऽस्मिन् , किः) शेवधिः (शेवं सुखं धीयतेऽस्मिन् , किः) ये दो पुंलिंग नाम सामान्य खजाना के हैं। पद्मः (पद्मा लक्ष्मी अस्मिन्नस्ति, अच्) शंखः (शाम्यति दुःखमनेन, खः) आदि पद से महापद्मः मकरः, कच्छपः, मुकुन्दः, कुन्दः, नीलः, खर्वः ये ९ पुं० नाम निधिविशेष के हैं ॥ ७० ॥ इति स्वर्गवर्गः ।

द्यो (द्योतन्ते अस्यामिति डोः, द्यौः गोवत्) द्यौः (दीव्यन्त्यस्यामिति) [२]अभ्रम् (न बिभर्ति किञ्चित् , कः) [३]व्योम (व्ययति संवृणोति, निपा० मन्) [४]पुष्करम् (पुष्यतीति करच्) [५]अम्बरम् (अम्बः शब्दः तं रातीति, घञ्) [६]नभः (नभते इति, असुन्) [७]अन्तरिक्षम् (द्यावापृथिव्योरन्तरीक्ष्यते इति घञ्) गगनम् (गच्छन्त्यनेनेति युच् गश्च) [८]अनन्तम् (नास्त्यन्तो यस्येति) सुरवर्त्म (सुराणां वर्त्मेति) [९]खम् (खन्यते इति, डः) वियत् (वियच्छतीति, क्विप्) [१०]विष्णुपदम् (विष्णोः पदं) आकाशः (आ काशते दीप्यतेऽत्रेति) विहायः (विशेषेण

---

१. मयुर्मृगाश्वमुखयोः । २. अभ्रं मेघे च गगने धातुभेदे च काञ्चने । ३. व्योमवारिणि चाकाशे भास्करस्यार्चने । ४. पुष्करं गगनपद्मवारिषु । पुष्करं द्वीप-तीर्थाहिखगरागौषधान्तरे । सूर्यास्येऽसिफले काण्डे शुण्डाग्रे ॥ ५. अम्बरं न द्वयोर्व्योम्नि सुगन्ध्यन्तरवस्त्रयोः । ६. नभः क्लीबं व्योम्नि पुमान् घने । घ्राणश्रावणवर्षासु विसतन्तौ पतद्ग्रहे ॥ नभो व्योम्नि नभा मेघे श्रावणे च पतद्ग्रहे । घ्राणं मृणालसूत्रे च वर्षासु नभाः स्मृताः ॥ इति विश्वः । नभसः पुंसि, इत्युणादिवृत्तौ । नभसस्तु नदीपतौ । गगने प्रावृषि । ७. वेदे तु छान्दसं ह्रस्वत्वम् । अन्तर् ऋक्षाणि (नक्षत्राणि) अस्य इति विग्रहे ह्रस्वमध्यः पाठः । ८. अनन्तः केशवे शेषे पुमाननवधौ त्रिषु । अनन्ता च विशल्यायां शारिवादूर्वयोरपि ॥ कणा दुरालभा पथ्या पार्वत्यामलकीषु च । विश्वम्भरागुडूत्योः स्यादनन्तं सुरवर्त्मनि ॥ ९. खं खः व्योमनीन्द्रिये । शून्ये विन्दौ मुखे खस्तु सूर्ये । इति हैमः । १०. विष्णुपदं नभोऽब्जयोः । विष्णुपदस्तु क्षीरोदे विष्णुपदी तु सुरापगा । संक्रान्ति द्वारिका चापि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ।
तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाविलम् ॥ प्र० ॥
विहायाः शकुने पुंसि गगने पुंनपुंसकम् ॥ प्र० ॥

इति व्योमवर्गः ।

३. अथ दिग्वर्गः

दिशः पञ्च नामानि

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।

पूर्वादीनामेकैकं नाम

प्राच्यप्राचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥
उत्तरा दिगुदीची स्याद् दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

हायति गमयति असुन्) ये १६ नाम आकाश के हैं। जिनमें प्रथम दो स्त्रीलिंग हैं; आकाश, विहायस् न० और पुं० दोनों हैं, शेष १२ नाम नपुंसक हैं। विहायसः, नाकः, द्युः, तारापथः, अन्तरिक्षम्, मेघाध्वा, महाविलम्, विहायः ये ८ नाम भी आकाश के प्र० हैं। जिनमें प्रथम तीन अव्यय हैं, विहायस् शब्द 'पक्षी' अर्थ में पुंल्लिग है और 'आकाश' अर्थ में पुंल्लिग, नपुंसक दोनों लिंग है, शेष चार नपुंसक हैं ॥ प्र० ॥ इति व्योमवर्गः ।

दिक्[1] (दिशत्यवकाशम्, क्विप्), [2]ककुप् (ककते लौल्यं करोति, उभ्) [3]काष्ठा (काशते, क्थन्), [4]आशा (आ समन्तात् अश्नोति व्याप्नोतीति, अच्) [5]हरित् (हरन्ति नयन्त्यनया, इतिः) 'ताः' कहनेसे स्त्रीसूचित होता है। ये ५ स्त्रीलिंग नाम दिशाओं के हैं। अनेक दिशाएँ होने के कारण बहुवचनान्त प्रयोग किये गये हैं।

प्राची (प्राञ्चति प्राप्नोति रविरस्याम् क्विन्) अपाची (अप मध्ये अञ्चति सूर्यमस्याम्, मध्यार्थो अपः), प्रतीची (प्रति पश्चात् अञ्चति सूर्यम्) ये तीनों स्त्रीलिङ्ग शब्द क्रमिक पूर्व, दक्षिण, पश्चिम दिशा के एक-एक नाम हैं। [6]उदीची (उत् उत्तरं अञ्चति सूर्यम्) यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उत्तर दिशा का है। जैसे—पूर्वदिशा—प्राची, दक्षिण दिशा—अपाची, पश्चिम-दिशा—प्रतीची और उत्तर दिशा—उदीची ।

दिशाओं में उत्पन्न होने वाले पदार्थों का 'दिश्य' (दिशि भवं दिश्यम्) यह एक त्रिलिङ्ग नाम है। जैसे—दिश्यो हस्ती, दिश्या करिणी, दिश्यं फलम् ।

---

१. दिक् तु स्त्रियां दिशा दान्ती ककुब् देववधूः पविः । इति शब्दार्णवः । २. ककुप् स्त्रियां प्रवेणी दिक् शोभासु चम्पकस्रजि । ३. काष्ठा दारुहरिद्रायां कालमानप्रकर्षयोः । स्थान-मात्रे दिशि च स्त्री दारुणि स्यान्नपुंसकम् ॥ ४. आशा तृष्णा दिशोः स्त्रियाम् । ५. हरिद्दिशि स्त्रियां पुंसि हयवर्णविशेषयोः । अस्त्रियां स्यात्तृणे । ६. उत्तरा दिग्विशेषे च स्नुषायामर्जुनस्य च ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपाग्भवमपाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ।
प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ प्र० ॥

दिक्पतीनामेकैकम्

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ।
कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।
रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ प्र० ॥

दिग्गजानामेकैकं नाम

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

दिग्गजपत्नीनामेकैकं नाम

करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥

दक्षिणादि दिशाओं में होने वाले पदार्थों के क्रमशः एक-एक नाम त्रिलिङ्ग हैं—अपाचीनम्, उदीचीनम्, प्रतीचीनम्, प्राचीनम्।

पूर्वादि आठों दिशाओं के स्वामी क्रमशः—इन्द्रः, वह्निः, पितृपतिः, नैर्ऋतः, वरुणः, मरुत्, कुबेरः और ईशः, कहे गये हैं। इसलिये पूर्वादि दिशाओं का नाम ऐन्द्री, वारुणी आदि भी है और इन्द्रादि आठों का प्राचीपति, अपाचीपति आदि भी नाम है।

रविः, शुक्रः, महीसूनुः (मंगलः) स्वर्भानुः (राहुः) भानुजः (शनिः) विधुः (चन्द्रः) बुधः, बृहस्पतिः ये ८ पुं० नाम क्रमिक पूर्वादि आठों दिशाओं के एक-एक ग्रह के हैं ॥ प्र० ॥

ऐरावतः (इरावति अब्धौ जातः, अण्), [1]पुण्डरीकः (पुण्डरयतीति, अरीकन्, तद्वद् वर्णत्वात्) [2]वामनः (ह्रस्वत्वात्, वामयतीति ल्युः) [3]कुमुदः (कौ मोदते, कः, तत्तुल्यत्वात्) [4]अञ्जनः (कृष्णवर्णत्वात्, अनक्तीति, ल्युः [5]पुष्पदन्तः (पुष्पमिव दन्ता यस्य) [6]सार्वभौमः (सर्वस्यां भूमौ विदितः, अण्) [7]सुप्रतीकः, (शोभनाः प्रतीका अवयवा यस्य) ये ८ पुंलिङ्ग शब्द दिशाओं को धारण करने वाले दिग्गजों के एक एक नाम हैं ॥ ३ ॥

अभ्रमुः (अभ्रे आकाशे मानितीति मन्थरं गच्छतीति कुः) [8]कपिला (कपिलवर्ण-

---

१. पुण्डरीकं सिताम्बुजे। सितच्छत्रे भेषजे च पुण्डरीकोऽग्निदिग्गजे। सहकारे गणधरे राजिलाहौ गजज्वरे। कोशकारान्तरे व्याघ्रे। २. वामनोऽप्यतिखर्वे च त्रिषु पुंसि तु दिग्गजे। हरावङ्कोटवृक्षे। ३. कुमुदं कैरवे रक्तपद्मे स्त्री कुम्भिकौषधौ। गम्भार्यां पुंसि दिङ्नागे नागं शाखामृगान्तरे॥ ४. अञ्जनं कज्जले चाक्तौ सौवीरे च। रसाञ्जने पुंसि ज्येष्ठा दिग्गजयोरञ्जना वानरीभिदि॥ अञ्जनी लेप्यनार्यां च। ५. पुष्पदन्तस्तु दिङ्नागभेदे विद्याधरान्तरे। ६. सार्वभौमस्तु दिग्गजे चक्रवर्तिनि। ७. सुप्रतीको दिगीशेभे शोभनावयवे त्रिषु।

८. कपिला रेणुकायां शिंशपा गोविशेषयोः। पुण्डरीककरिण्यां स्त्री वर्णभेदे त्रिलिङ्गकम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।
क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥
अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम् ।

मेघस्य पञ्चदश नामानि

अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ॥ ६ ॥
धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।
घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥

वत्त्वात्) [१]पिङ्गला (पिङ्गलवर्णत्वात्) [२]अनुपमा (नास्ति उपमा यस्याः श्रेष्ठत्वात्) ताम्रकर्णी (ताम्रवर्णौ कर्णौ यस्याः, ङीप्) [३]शुभ्रदन्ती (शुभ्रौ दन्तौ यस्याः) अङ्गना (प्रशस्तान्यङ्गान्यस्याः, नः) अञ्जनावती (अञ्जनमस्ति अस्याः, मतुपि दीर्घः) ये ८ स्त्रीलिङ्ग नाम क्रमशः उक्त दिग्गजों के स्त्रियों के हैं । जैसे—ऐरावत की स्त्री का नाम अभ्रमु, पुण्डरीक की स्त्री का नाम कपिला, वामन की स्त्री का नाम पिङ्गला आदि ।

अपदिशम् (दिशोरिदम् 'अप' इति मध्यार्थकः) विदिक् (दिग्भ्य विनिर्गता) ये दो शब्द दो दिशाओं के वीच (कोने) के नाम हैं जिनमें 'अपदिशम्' नपुंसक और अव्यय दोनों है, और 'विदिक्' शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ५ ॥

अभ्यन्तरम् (अभिगतमन्तरम्) अन्तरालम् (अन्तरं लातीति, कः दीर्घश्च) ये दो नपुंसक नाम बीच के हैं । [४]चक्रवालम् (चक्राकारेण वलते संवृणोति, अच् दीर्घः) [५]मण्डलम् (मण्डयति, अलच्) ये दो नपुं० नाम गोलाई के हैं ।

अभ्रम् [६](अभ्रति गच्छति, अच्) [७]मेघः (मेहतीति, अच् कुत्वम्) वारिवाहः (वारि वहतीति, अण्) स्तनयित्नुः (स्तनयतीति, इत्नुच्) [८]वलाहकः (वलेन हीयते, क्वुन्) [९]धाराधरः (धाराणां धरः) [१०]जलधरः (जलस्य धरः) तडित्वान् (तडितः सन्त्यस्मिन् मतुप् वत्वम्) [११]वारिदः (वारिं ददातीति, कः) अम्बुभृत् (अम्बु बिभर्तीति, क्विप्) [१२]घनः (हन्यते वायुना

नानले वासुदेवे च मुनिभेदे च कुक्कुरे । १. पिङ्गलो नागभिद्रुद्रचण्डांशुपारिपार्श्वके । निधिभेदे कपावग्नौ पुंसि स्यात् कपिलेऽन्यवत् ॥ स्त्रियां वेश्या विशेषे च करिण्यां कुमुदस्य च । नाडीभेदे कर्णिकायाम् । २. अनुपमस्तु भवेदयम् । उपमारहितेऽनुपमेभ्याम् ।

३. शुभ्रदन्ती सुदन्त्यां स्यात् पुष्पदन्तेभयोषिति । शुभ्रदती इति वा पाठः । शुभ्रौ दन्तावस्याः । ४. चक्रवालोऽद्रिभेदे स्याच्चक्रवालं तु मण्डले । ५. मण्डलं देशविम्बयोः । भुजङ्गभेदे परिधौ शुनि द्वादशराजके । संघाते कुष्ठभेदे च । ६. अभ्रं मेघे च गगने धातुभेदे च काञ्चने । ७. मेघो मुस्ता जलदयोः पुमान् । ८. वलाहको गिरौ मेघे दैत्यनागप्रभेदयोः । ९. धाराधरोऽसिमेघयोः । १०. जलधरस्तोयधरादीनापि उपलक्षणम्—तोयधरो मुस्तासुनिषण्णौषधीधने । ११. जलदतोयदादीनामप्युपलक्षणम् । जलदो मुस्तके मेघे । तोयदो मुस्तके मेघे पुमानाज्ये नपुंसकम् । १२. घनं स्यात् कांस्यतालादिवाद्यमध्यमनृत्ययोः । ना मुस्ताब्दौघदाढर्येषु विस्तारे लोह-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।
स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ॥ ८ ॥
शंपा शतह्रदा-ह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥
स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषे मेघज्योतिरिरंमदः ।

इति अप्, कुत्वम्) [1]जीमूतः (जीवनं जलं मूतं बद्धमनेन, क्तः) [2]मुदिरः (मोदन्ते अनेन, किरच्) जलमुक् (जलं मुञ्चतीति क्विप्) [3]धूमयोनिः (धूमो योनिरस्य) ये १५ नाम मेघ के कहे गये हैं । जिनमें प्रथम 'अभ्रम्' नपुंसकलिङ्ग, शेष १४ पुंलिङ्ग हैं ।

कादम्बिनी (कादम्बः कलहंसः, अस्त्यस्याः, इनिः) मेघमाला (मेघानां माला) ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम मेघसमूह के हैं ।

अभ्रियम् (अभ्रे भवम्, घः) यह एक त्रिलिङ्ग नाम मेघ में होने वाले पदार्थों का है । जैसे—अभ्रियो विन्दुपातः, अभ्रियं जलम्, अभ्रिया आपः ।

स्तनितम् (स्तनयति स्म, क्तः) गर्जितम् (गर्जयति स्म, क्तः) रसितम् (रसति स्म, क्तः) ये तीन नपुंसक नाम मेघ गर्जन के हैं । आदि पदसे ध्वनितादिका संग्रह है ॥ ८ ॥ शम्पा (शं सुखं पिबति, कः) [4]शतह्रदा (शतं ह्रदा अव्यक्ताः शब्दाः यस्याः) [5]ह्रादिनी (ह्राद अस्ति अस्या, इनिः) ऐरावती (इरा आपः सन्त्यस्य इरावान्, तस्य इयम्) क्षणप्रभा (क्षणं प्रभाऽस्याः) तडित् (ताड्यतीति, इतिः, णिलोपश्च) [6]सौदामनी (सुदाम्नि मेघे भवा, अण्) [7]विद्युत् (विशेषेण द्योतते क्विप्) [8]चञ्चला (चञ्चलातीति, कः) चपला (चोपति मन्दं गच्छति कलच्, उपधाया अच्च) ये १० स्त्रीलिङ्ग नाम मेघ में चमकने वाली बिजली के हैं ।

स्फूर्जथुः (स्फूर्जनम् अथुच्) वज्रनिर्घोषः (वज्रस्य निर्घोषः शब्दः) ये दो पुंलिङ्ग नाम बिजली गिरनेके समय होने वाले शब्द के हैं ।

मेघज्योतिः (मेघस्य ज्योतिः) [9]इरंमदः (इरया जलेन मादयति दीप्यते निपा०) ये दो पुं० नाम मेघ से निकलते हुए प्रकाश के हैं । मेघों के परस्पर संघर्ष से एक प्रकार की ज्योति (मेघ से) निकलकर वृक्षादिकों के ऊपर गिरती है, उसे 'इरंमदः' कहते हैं ।

मुद्गरे । त्रिषु सान्द्रे दृढे । १. जीमूतो वासनेऽम्बुदे । घोषकद्रौ भृतिकरे । २. मुदिरः कामुके मेघे । ३. मेघास्तु त्रिविधास्तत्र वह्निजा धूमयोनयः । निःश्वासजास्तु जीमूतस्ते ज्ञेया जीवरूपिणः । यज्ञजास्तु घनाघोराः पुष्करावर्तकादयः ॥ इति शब्दार्णवः । ४. शतह्रदा स्त्रियां वज्रे सौदामन्यां च कीर्तिता । ५. ह्रादिनी वज्रतडितोः । ६. श्वेतद्विपः सुदामा । इति त्रिकाण्डशेषे ऐरावतपर्यायौ । सुदामा तु पुमान् वारिधरपर्वतभेदयोः । सौदामिनी इति अपपाठः । सौदामन्यप्सरो भेदे तडित्तद्भेदयोः स्त्रियाम् । ७. विद्युत्तडिदिति सन्ध्यायां स्त्रियां त्रिषु तु निष्प्रभे । ८. चञ्चला तु तडिल्लक्ष्म्योश्चञ्चलश्चपलेऽनिले । चपलाकमलाविद्युत्पुंश्चली पिप्पलीषु च । नपुंसकं तु शीघ्रे स्याद्वाच्यवत्तरले चले । ९. मेघाग्न्यादिरिरंमदः । इति शब्दार्णवः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥
वृष्टिर्वर्षं तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।
धारासम्पात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥
वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ।

अन्तर्धानस्याऽष्टौ नामानि

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥ १२ ॥
अपिधान-तिरोधान-पिधानाच्छादनानि च ।

इन्द्रायुधम् (इन्द्रस्य आयुधम्) शक्रधनुः (शक्रस्य धनुः) [१]रोहितम् (रोहः संजातोऽस्येति, इतच्) ये दो नपुंसक नाम इन्द्र धनुष के हैं। इन्द्र धनुष ही जब सीधा हो जाता है तब उसे रोहित कहा जाता है।

वृष्टिः[२] (वर्षणम्, क्तिन्) वर्षम्-(अचि) ये दो नाम वर्षा के हैं, जिनमें 'वृष्टिः' स्त्री 'वर्षम्' नपुंसक हैं।

वृष्टेर्विघाते—अवग्रहः[३] (अवगृह्णातीति, अप्) अवग्राहः (अवगृह्णातीति घञि) ये दो पुंलिङ्ग नाम वर्षा न होने (सूखा पड़ने) के हैं।

धारासम्पातः (धाराणां सम्पातः घञ्) [४]आसारः (आसरणम् , घञ्) ये दो पुंल्लिङ्ग नाम निरन्तर वर्षा होने के हैं। [५]शीकरः (सृता इतस्ततः वायुना प्रेरिताः, शीकृधातोः अरन्) यह एक पुंल्लिङ्ग नाम वायु से इधर उधर ले जाये गये छोटे जल बिन्दुओं का है।

[६]वर्षोपलः (उपलातीति उपलः, वर्षस्य उपलः) करका (कृणोति हिनस्ति, वुन्) ये दो नाम मेघसे गिरने वाले पत्थल (बनौरी) के हैं जिनमें वर्षोपल पु० है और करका स्त्री०, पुं० दोनों है। [७]दुर्दिनम् (दुः निन्दितं दिनम्) यह एक नपुंसक नाम मेघ से ढके हुए दिन का है।

अन्तर्धा (अन्तर्धानम् , अन्तः+धा+अङ्) व्यवधा (व्यवधानम् , वि+अव+धा+अङ्) अन्तर्धिः (अन्तर्धीयते, किः) अपवारणम् (अपव्रियते आच्छाद्यते इति भावे ल्युट्) अपिधानम् , तिरोधानम् , पिधानम् , आच्छादनम् ये ८ नाम ढाँकने के हैं जिनमें प्रथम दो स्त्री० 'अन्तर्धि' पुं०, शेष ५ नपुंसक लिङ्ग हैं ॥ १२ ॥

---

१. रोहितो मीनमृगयोर्भेदे रोहितकद्रुमे। इति विश्वः। २. अथ वृष्टिर्वर्षमस्त्री केचिदिच्छन्ति वर्षणम्। इति शब्दार्णवः। वर्षस्तु समाद्वीपांशवृष्टिषु। वर्षवरेऽपि वर्षास्तु प्रावृषि। इति हैमः। ३. अवग्रहस्तु ज्ञानभेदे गजालिके। प्रतिबन्धे वृष्टिरोधे। ४. आसारः स्यात्प्रसरणे वेगवर्षे सुहृद्बले। इति विश्वः। ५. शम्बशीकरपांसवः। इति तालव्यप्रकरणे ऊष्मविवेकः। शीकरे सरले वातसृताम्बुकणयोः पुमान्। सीकरः दन्त्यादिरिति धनपालः।

६. वर्षोपलस्तु करका करकोऽपि च दृश्यते। द्वयोर्मेघोपले न स्त्री करङ्के च कमण्डलौ॥ ७. रात्रावपि दुर्दिनम्। बादलं दुर्दिने मेघे दुर्दिनं जलदध्वान्तम्। इति रत्नकोशः। दुर्निन्दितं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रस्य विंशतिर्नामानि

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ॥ १३ ॥
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः।
अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ॥ १४ ॥
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः।
कला तु षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥
भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेंऽशके।

---

[1]हिमांशुः (हिमाः शीतला अंशवो यस्य) [2]चन्द्रमाः (चन्द्रं कर्पूरं माति तुलतीति, असुन्) [3]चन्द्रः (चन्दति आह्लादयतीति, रक्) इन्दुः (उनत्तीति, उः, उच्चादेः) कुमुदबान्धवः (कुमुदानां बान्धवः) [4]विधुः (विशेषेण धयन्ति एनं देवाः, कुः) सुधांशुः (सुधायुक्ताः अंशवो यस्य) शुभ्रांशुः (शुभ्रा अंशवो यस्य) ओषधीशः (ओषधीनामीशः) निशापतिः (निशायाः पतिः) [5]अब्जः (अद्भ्यो जातः, डः) [6]जैवातृकः, (जीवयतीति, आतृकन्, वृद्धिश्च) [7]सोमः (अमृतं सूते, मन्) ग्लौः (ग्लायतीति, डौः) मृगाङ्कः (मृगोऽङ्कोऽस्य) कलानिधिः (कलाः निधीयन्तेऽत्र किः) [8]द्विजराजः (द्विजानां राजा) शशधरः (शशस्य धरः) नक्षत्रेशः (नक्षत्राणामीशः) क्षपाकरः (क्षपायाः करः) ये बीस पुंल्लिङ्ग नाम चन्द्रमा के हैं। पूर्णचन्द्र के १६वें हिस्से का एक स्त्रीलिङ्ग नाम [9]कला (कलयति गणयति, अच्) है। बिम्बः (वेति शोभते) [10]मण्डलम् (मण्डयति कलच्) ये दो नाम सूर्य या चन्द्रमा के मण्डल के हैं। जिनमें बिम्ब शब्द पुं० और नपुंसक दोनों है और मण्डल शब्द त्रिलिङ्ग है ॥ १३–१५ ॥

भित्तम् (भिद्यते स्म निपातितम्) [11]शकलम् (शक्नोतीति, कलच्) [12]खण्डम्

दिनम् ॥ १. हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्रः शशी चन्द्रो हिमद्युतिः इति शब्दार्णवः। २. चन्द्रमाह्लादं मिमीते निर्मिमीते इति वा। 'बाहुलकात् केवलादपि असिः' मिमीते आनन्दम् इति माः चन्द्रः। माश्चासौ चन्द्रश्च मासशब्द केवलोऽपीह संमतो बहुदृश्वनाम्। माश्चन्द्रमासयोः पुमान्। कलं मिमीते इति माः माश्चासौ चन्दश्च इति चन्द्रमाः। राजदन्तादिः। ३. चन्द्रोऽम्बुकाम्ययोः स्वर्णे सुधांशौ कर्पूरे काम्पिल्ये मेचकेऽपि च। इति हैमः। ४. विधुः शशाङ्के कर्पूरे हृषीकेशे च राक्षसे। इति विश्वः।

५. अब्जोऽस्त्री शङ्खे ना निचुले धन्वन्तरौ च हिमकिरणे। क्लीबं पद्मे। इति मेदिनी। ६. जैवातृकः पुमान् सोमे कृषकायुष्मतोस्त्रिषु। ७. सोमस्त्वोषधी तद्रसेन्दुषु। दिव्यौषध्यां घने सारे समीरे पितृदैवते। वसुप्रभेदे सलिले वानरे किंनरेश्वरे। इति हैमः। ८. द्विजराजः शशधरे समीरे सुवर्णेऽनन्तभोगिनि। इति विश्वः। ९. कलं त्वजीर्णरेतसोः। अव्यक्तमधुरध्वाने। कलास्यादेशशिल्पयोः। कलने मूलरैवृद्धौ षोडशांशे विधोरपि। इति हैमः। १०. स्यान्मण्डलं द्वादशराजके च देशे च विश्वे च कदम्बके च। कुष्ठप्रभेदेऽप्युपसूर्यकेऽपि भुजङ्गभेदे शुनिमण्डलः स्यात्। ११. शकलं त्वचि खण्डे च रागवस्तुनि वल्कले। इति विश्वः। १२. खण्डोऽर्धं ऐक्षवे। मणिदोषे च, इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥
कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।
सुषमा 'परमा शोभा' शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १७ ॥

(खण्ड्यते, घञ् डो वा) अर्धः (ऋध्नोति वर्द्धते अनेन, घञ्) ये चार नाम खण्ड के हैं, जिनमें भित्तम्, नपुं०, शकलम्, खण्डम् पुंलि०, नपुं० और अर्द्ध शब्द नपुं०, पुंलिङ्ग दोनों हैं। 'वा पुंसि'का पूर्वोत्तर दोनों के साथ सम्बन्ध है।

अर्धम् यह एक नाम—समान दो खण्डों में एक खण्ड का है जो नित्य नपुंसक है।

[१]चन्द्रिका (चन्द्रोऽस्त्यस्याः, ठन्) [२]कौमुदी (कुमुदानामियम्, अण्) [३]ज्योत्स्ना (ज्योतिरस्त्यस्याम् नि०) ये तीन स्त्रीलिङ्ग नाम चाँदनी के हैं।

प्रसादः (प्रसीदन्ति लोका अस्मिन्) प्रसन्नता (प्रसीदति स्म, क्तः, तस्य भावः) ये दो नाम निर्मलता के हैं जिनमें प्रथम पुं०, दूसरा स्त्री० है ॥ १६ ॥

[४]कलङ्कः (कं ब्रह्माणं लङ्कयति हीनतां गमयतीति, शापयति वा अण्) [५]अङ्कः (अङ्कयते लक्ष्यतेऽनेन घञ्) [६]लाञ्छनम् (लाञ्छ्यतेऽनेन, ल्युट्) [७]चिह्नम् (चाहयति, नक्, इत्वं च, चह्यतेऽनेनेति वा) [८]लक्ष्म (लक्षयतीति, मनिन्) [९]लक्षणम् (ल्युट्, लक्ष्यतेऽनेनेति) ये ६ नाम चिह्न के हैं जिनमें प्रथम दो—कलङ्कः, अङ्कः पुंलिङ्ग हैं, शेष ४ नपुंसक हैं।

[१०]सुषमा (शोभनं समं=सर्वमनया) यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उत्कृष्ट (परम) शोभा का है।

[११]शोभा (शोभयति अच्) [१२]कान्तिः (कमनम्, क्तिन् दीर्घश्च) [१३]द्युतिः (द्योतते अनया, इनिः कित्वे च) [१४]छविः (छयति, छिनत्यसारं क्विन्नन्तो निपातः) ये ४ स्त्रीलिङ्ग नाम शोभा के हैं ॥ १७ ॥

---

१. चन्द्रिका चन्द्रिमा चार्वी। इति शब्दार्णवः। २. कौमुदः स्यात्कार्तिकके चन्द्रिकायां तु कौमुदी। ३. ज्योत्स्ना चन्द्रातपेऽपि स्यात् ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्मृता। ४. कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कालायसमलेऽपि च। ५. अङ्को भूषा रूपकलक्ष्मसु चित्राजौ नाटकांशे स्थाने क्रोडेऽन्तिकागसोः। ६. लाञ्छनं लक्ष्मसंज्ञयोः। इति हैमः। ७. चिह्नं लक्ष्मपताकयोः। इति मेदिनी। ८. लक्ष्म प्रधानचिह्नयोः। ९. लक्षणं नाम्नि चिह्ने च सारस्यां लक्षणा क्वचित्। मुटि लक्ष्मणमपि। ज्योतिष्मत्यां च सारस्यां स्त्री, क्लीबे नाम चिह्नयोः। स्यात् यत्ने लक्षणः पुंसि सौमित्रौ श्रीमति त्रिषु। इति रभसः। श्रीमति तु पामादित्वात् नः, लक्ष्म्या अच्चेति अत्वं बोध्यम्। १०. सुषमं रुचिरं समे। सुषमा तु परमशोभायां कालभिद्यपि। ११. शोभाकान्तीच्छयोर्मता। शुम्भयतीति शुम्भाऽपि। १२. कान्तिः शोभेच्छयोः स्त्रियाम्। १३. द्युतिस्तु शोभादीधित्योः। १४. छविस्तु रुचिशोभयोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम्।
प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः॥ १८॥
शीतं गुणे तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः।
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः॥ १९॥
ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसम्भवः।
मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी॥ २०॥

---

[1]अवश्यायः (अवश्यायके शैत्यमापाद्यते, णः) नीहारः (निह्रियते इति घञ्) [2]तुषारः (तोषयति, आरन्, किच्च) तुहिनम् (तोहत्यर्दयति, इनन्) हिमम् (हन्तीति मक्) प्रालेयम् (प्रलीयन्ते पदार्था अत्रेति अच् प्रलयो हिमाद्रिः तस्मादागतम्, अण्) मिहिका (मेहति सिञ्चति, क्वुन्) ये ७ नाम पाला के हैं, जिनमें प्रथम ३ पुंल्लिङ्ग, तुहिनादि ३ नपुंसक और मिहिका स्त्रीलिङ्ग है।

हिमानी (महद्धिमम्, ङीषानुकौ) [3]हिमसंहतिः (हिमानां संहतिः) ये दो स्त्रीलिङ्ग नाम अधिक पाला पड़ने के हैं॥ १८॥

शीतम् (श्यायते भावे क्तः) यह एक नाम गुणवाचक है—स्पर्श विशेष में नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है।

तद्वान्=शीतगुणवान्, अर्थो येषान्ते सुषीमादयः सप्त विशेष्यनिघ्नाः। [4]सुषीमः (सुष्ठु सीमा मर्यादा यस्य) [5]शिशिरः (शशति उत्प्लुत्य गच्छतीति किरच् उपधाया इत्वं च नि०) [6]जडः (जलति=घनीभवतीति अच्, लकारडकारयोरैक्यात्) तुषारः (तोषतीति) [7]शीतलः (शीत गुणोऽस्यातीति लच्) शीतः (श्यायते, क्तः) हिमः (हन्तीति, मक्) ये ७ नाम ठण्डा गुण वाले पदार्थों के हैं, ये विशेष्यगतलिङ्ग वाले होते हैं। तुषारः, शीतलः, शीतः ये तीनों शब्द निरूढलक्षणा से गुणी भी होते हैं, अतः दोनों लिङ्ग (त्रिलिङ्ग और पुं०) में प्रयुक्त होते हैं॥ १९॥

[8]ध्रुवः (ध्रुवति स्थिरो भवतीति, अच्) औत्तानपादिः (उत्तानपादस्यापत्यम्, इञ्) ये दो पुं० नाम ध्रुव के हैं।

[9]अगस्त्यः (अगं विन्ध्यपर्वतं स्त्यायति स्तभ्नोतीति कः, अगमस्यतीति अगस्तिः) कुम्भ-

---

१. अवश्यायो हिमे दर्पे। २. तुषारो हिमदेशयोः। शफीरे हिमभेदे च। ३. हिमं तुषार-मलयोद्भवयोः स्यान्नपुंसकम्। ४. सुषीमः शीतले चारौ त्रिषु, ना पन्नगान्तरे। ५. शिशिरो ना हिमे न स्त्री ऋतुभेदे जडे त्रिषु। ६. जडा मूर्खे हिमाघाते जडा स्याच्छूकशिम्बिका। ७. शीतलं पुष्पकाशीसे शैलजे मलयोद्भवे। पुमानासनपर्ण्यां स्याच्छिशिरे वाच्यलिङ्गकम्।

८. ध्रुवः शङ्कौ हरे विष्णौ वटे चोत्तानपादजे। वसुयोगभिदो पुंसि ध्रुवं खेऽजस्रतर्कयोः। स्त्री मूर्वाढ्याः शालपर्ण्यां गीतिस्रुग्भेदयोस्त्रिषु। स्थिरे नित्ये निश्चिते च ध्रुवं क्लीबं प्रकीर्तितम्। ९. अथागस्त्यः कुम्भयोनिरगस्तिः कलशीसुतः। इति शब्दार्णवः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम्।
दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादि तारा अश्वयुगश्विनी ॥ २१ ॥

सम्भवः (कुम्भः सम्भवा उत्पत्तिस्थानमस्य) [1]मैत्रावरुणिः (मित्रावरुणस्यापत्यम् इञ् , मित्रा-वरुणौ देवर्षी तयोरपत्यं वा) ये तीन पुं० नाम अगस्त्य के हैं।

अस्यैव=अगस्त्यस्यैव। सधर्मिणी (समानो धर्मो—अस्या इनिः=पत्नी) लोपामुद्रा (मुदं राति ददातीति कः मुद्रा, न मुद्रा अमुद्रा=अदृष्टा, लोपे=धर्मलोपे अमुद्रा) यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम अगस्त्य मुनि की धर्मपत्नी का है।

नक्षत्रम् (न क्षदते हिनस्तीति ष्ट्रन् , नञः प्रकृतिभावे) ऋक्षम् (ऋषतीति सः क्रिच्च) [2]भम् (भातीति डः) [3]तारा (तरन्त्यनया अङ् दीर्घश्च) तारका (उक्तविग्रहे ण्वुलि, निर्देशा-दित्वाभावः) उडु (उना शंकरेण डीयते इति, डुः धेनुवद्रूपाणि) ये ६ नाम नक्षत्र सामान्य के हैं, जिनमें प्रथम तीन नपुंसक हैं, तारका और तारा ये दो स्त्री० है। उडु स्त्री० न० दोनों है, अपि शब्द से 'तारका' शब्द भी विकल्प से स्त्रीलिङ्ग है।

अश्विन्यादि ४ नक्षत्रों का प्रयोग बहुवचनान्त स्त्रीलिङ्ग में, मृगशिर का एक चनान्त स्त्रीलिङ्ग में, आर्द्रा का एक वचनान्त स्त्रीलिङ्ग में, पुनर्वसु-पुष्य का एक वचनान्त पुंलिङ्ग में, आश्लेषा-मघा का बहुवचनान्त स्त्रीलिङ्ग में, पूर्व-उत्तर फल्गुनी का द्विवचनान्त स्त्रीलिङ्ग में, हस्त का एक वचनान्त स्त्री० पुं० में, चित्रा का एक व० स्त्री० में, स्वाती का एक वचनान्त स्त्री० पुं० में, विशाखा, अनुराधा का बहुवचनान्त स्त्रीलिङ्ग में, ज्येष्ठा का एक वचनान्त स्त्री० में, मूल का एक वचनान्त पुं० नपुं० में, दोनों आषाढा का बहुवचनान्त स्त्री० में, श्रवण का एक वचनान्त स्त्री० पुं० में, धनिष्ठा-शतभिषा का बहुवचनान्त स्त्री० में, दोनों भाद्रपदा का बहुवचनान्त स्त्री० में, और रेवती का एक वचनान्त स्त्री० में होता है।

[4]दाक्षायणी (दक्षस्यापत्यं स्त्री, फिञ्) यह एक स्त्री० नाम, अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों का है। नक्षत्र अर्थ में इसका नित्य बहुवचनान्त ही प्रयोग होता है।

अश्वयुज् (अश्वं युनक्ति क्विप्) अश्विनी (अश्वरूपं अस्ति अस्याः, इनिः) ये दो स्त्री० नाम अश्विनी नक्षत्र के हैं ॥ २१ ॥

---

१. मित्रावरुणयोः सूनु—रौर्वशेयश्च वारुणिः। इति व्याडिः। अणपि दृश्यते। तथाहि—और्वशेयागस्त्यमैत्रावरुणास्त्वाग्निमारुताः। इति नाम निधानम्। २. भ नक्षत्रे गभस्तौ स्त्री पुंसि स्याद् भृगुनन्दने। भवने च तथा च तथा भः स्यात्। भ्रमरौ भः प्रकीर्तितः। त्येकाक्षरः। ३. नक्षत्रे नेत्रमध्ये च तारा स्यात्तार इत्यपि। इति व्याडिः। तारो वानरभिन्मुक्ताविशुद्धयोः शुद्धमौक्तिके। ना, नक्षत्रेऽक्षिमध्ये च न ना, रूप्ये नपुंसकम्। स्त्री बुद्धदेवताभेदे बलिगीर्पति-भार्ययोः। त्रिलिङ्गोऽप्युच्चशब्दे च। नक्षत्रे चाक्षिमध्ये च तारकं तारकापि च। इति शाश्वतः। ४. दाक्षायणी स्वपर्णायामश्विन्याद्युडुषु स्त्रियाम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठया।
समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः॥ २२॥
मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी।
इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः॥ २३॥

बृहस्पतेर्नव नामानि

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः।

[1]राधा (राध्नोति साध्नोति कार्यमनया अः) [2]विशाखा (विशाखतीति, अच्) ये दो स्त्री० नाम विशाखा नक्षत्र के हैं।

[3]पुष्यः (पुष्णाति क्यप्) सिध्यः (सिध्यन्त्यस्मिन् क्यप्) [4]तिष्यः (तुष्यन्त्यस्मिन् क्यप् उपधेत्वं च) ये तीन पुं० नाम पुष्य नक्षत्र के हैं।

श्रविष्ठाः (श्रवणं श्रवः अप्, श्रवोऽस्त्यस्याः मतुप् ततः इष्ठन्, मतोर्लुक्) धनिष्ठा (अतिशयेन धनवती) ये दो स्त्री० नाम धनिष्ठा नक्षत्र के हैं। धनिष्ठा श्रविष्ठया समा इत्यन्वयः।

[5]प्रोष्ठपदाः (प्रोष्ठो गौः तस्येव पादा यासाम्, अच् पद्भावश्च निपा०) भाद्रपदाः (भद्रं पदं यासां ताः) ये दो स्त्री० नाम पूर्वभाद्रपदा, उत्तरभाद्रपदा के हैं। इनका प्रयोग नित्य बहुवचनान्त ही होता है॥ २२॥

[6]मृगशीर्षम् (मृगस्य शीर्षमिव शीर्षं यस्य तत्) मृगशिरस् (मृग शरोऽस्येति मृगशिर-स्तस्मिन्नेव–) आग्रहायणी (अग्रे हायनमस्याः अण्, णत्वङीषौ) ये ३ मृगशिरा नक्षत्र के नाम हैं, जिनमें प्रथम दो नपुंसक, तृतीय स्त्रीलिङ्ग है।

मृगशिरा के शीर्ष प्रदेश (ऊपर) में जो ५ ताराएँ हैं ये [7]इल्वला (इलवन्ति शेरते क्षिपन्ति वेति वेलच् गुणाभावश्च निपातनात्। इन्वका–इत्यपि पाठः, इन्वका नक्षत्रमिति श्रुतेः) कहलाती है, अर्थात् उन पाँचों का एक स्त्री० नाम इल्वला है॥ २३॥

बृहस्पतिः (बृहतांपतिः सुट् तलोपः) सुराचार्यः (सुराणामाचार्यः) [8]गीर्पतिः (गिरां पतिः) [9]धिषणः (धृष्णोतीति क्युः धिषादेशश्च) [10]गुरुः (गृणाति उपदिशतीति कुः)

१. राधा विद्युद्विशाखयोः। विष्णुक्रान्तामलक्योश्च गोपीवेध्यविशेषयोः। इति हैमः। २. विशाखो याचके स्कन्दे विशाखाभे कठिल्लके। इति हैमः। ३. पुष्यः कलियुगे स्मृतः। मासनक्षत्रयोर्भेदे। ४. तिष्यो नक्षत्रभेदे स्यात्कलौ धात्र्यां च योषिति।

५. प्रोष्ठप्रदा भद्रापदाश्च निपातिताः। इति मुकुटः। ६. मृगशीर्षे हस्तिजातौ मृगः पशुकुरङ्गयोः। इति व्याडिः। ७. इल्वलास्तारकाभेदेऽपील्वलो मत्स्यदैत्ययोः। ८. अहरादीनामिति वा रेफः, पक्षे गीर्पतिः, गीःᳲपतिः, गीः पति इति रूपत्रयस्यैव भाष्ये दर्शनात्। चन्द्रादयस्तु—गीष्पतिरपि रेफाभावे कस्कादित्वादिच्छन्ति। ९. धिषणास्त्रिदशाचार्ये धिषणा तु धियां मता। १०. गुरुर्महत्याङ्गिरसे पित्रादौ धर्मदेशके। अलघौ दुर्जरेचापि, इति हैमः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥ २४ ॥

शुक्रस्य षण् नामानि

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।

मङ्गलस्य पञ्च नामानि

अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥

बुधस्य त्रीणि नामानि

रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्चरौ ।

राहोः पञ्च नामानि

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः ॥ २६ ॥

---

[१]जीवः (जीवयतीति अच)आङ्गिरसः (आङ्गिरसोऽपत्यम् ,अण्) वाचस्पतिः (वाचः पतिः षष्ठ्या अलुक् , लुकि सति वाक्पतिः) [२]चित्रशिखण्डिजः (चित्रशिखण्डिनो जातः डः, सप्तर्षियों का नाम चित्रशिखण्डी है । सप्तर्षियों में अङ्गिरा की गणना होने से चित्रशिखण्डिज बृहस्पति कहलाते हैं) ये नौ पु० नाम देवगुरु बृहस्पति के हैं ॥ २४ ॥

शुक्रः (शोचयति रक्) दैत्यगुरुः (दैत्यानां गुरुः) [३]काव्यः (कौतुमवश्यमाख्यातुमर्हत्वात् , ण्यत् कवेरपत्यं वा ण्यः) उसना (वष्टीति कनपि, सम्प्रसारणानङौ) [४]भार्गवः (भृगोरपत्यम्) [५]कविः (कवते शब्दते कौति वा इति) ये ६ पुं० नाम दैत्यगुरु शुक्र के हैं ।

[६]अङ्गारकः (अङ्गानि इयर्ति पीनत्वात् अङ्गतीति वा अङ्गारः स एवेति कन् , रक्तवर्णत्वात्) [७]कुजः (कोः जातः डः) [८]भौमः (भूमेरपत्यम् अण्) लोहिताङ्गः (लोहितानि अङ्गान्यस्य) महीसुतः (मह्याः सुतः) ये ५ पुं० नाम मङ्गल ग्रह के हैं ॥ २५ ॥

[९]रौहिणेयः (रोहिण्याः अपत्यम् ढक्) बुधः (बुध्यते कः) [१०]सौम्यः (सोमस्यापत्यम् अण्) यह तीन पुं० नाम बुध के हैं ।

सौरिः (सूरस्यापत्यम् इञ्) [११]शनैश्चरः (शनैः चरतीति, अच्) ये दो पुं० नाम शनि महाप्रभु के हैं ।

---

१. जीवः स्यात् त्रिदशाचार्ये द्रुमभेदे शरीरिणी, इति हैमः । २. ऋषयः सप्त धीमद्भिः स्मृताश्चित्रशिखण्डिनः, इति हारावली । ३. काव्यं ग्रन्थे पुमान् शुक्रे काव्या स्यात्पूजनाधियोः । ४. भार्गवः परशुरामे सुधन्वनि मतङ्गजे । दैत्याचार्ये भार्गवी तु कृष्णदूर्वोमयोः स्त्रियाम् ॥ ५. कविर्वाल्मीकिशुक्रयोः । सूरौ काव्यकरे पुंसि खलीने स्यात्तु योषिति । ६. अङ्गारकः कुजेऽपि स्यादुल्मुकांशे कुरुण्टके । भवेदङ्गारिका चेक्षुकाण्डे किंशुककोरके ॥ ७. कुजा भवान्यां वृक्षे तु कुजो नरकभौमयोः । ८. भौमो मङ्गलदैत्ययोः । इति हैमः । ९. रौहिणेयो भवेद्वत्से रेवतीरमणे बुधे, इति विश्वः । १०. सौम्यः सोमात्मजेऽनुग्रे मनोज्ञे सोमदैवते । सौम्याः पुनर्मृगशिरः शिरःस्थाः पञ्चतारकाः ॥ ११. 'शनिसौरिशनेश्चराः' इति रभसाच्छनिरपि । शनैश्चरं मन्दः, इति वाचस्पतिः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।

राशीनां द्वादश नामानि

राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

सूरसूर्य्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।
भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।
विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥

---

[1]तमः (ताम्यति ग्लानिं प्राप्नोतीति असुन्) राहुः (रहति त्यजतीति, उण्) [2]स्वर्भानुः (स्वः आकाशे भातीति नुः) सैंहिकेयः (सिंहिकाया अपत्यम्, ढक्) विधुन्तुदः (विधुं तुदतीति कः) ये ५ पुं० नाम राहु के हैं जिनमें 'तमस्' शब्द नपुंसक है शेष ४ शब्द पुं० हैं। [3]केतुः और [4]शिखी ये दो नाम केतु के हैं ॥ २६ ॥

सप्त च ते ऋषयश्चेति सप्तर्षयः [5]मरीचि, अङ्गिरा, अत्रिः, पुलस्त्यः, पुलहः, क्रतु, वशिष्ठः, ये सप्तर्षि कहलाते हैं इनका एक पुं० बहुवचनान्त नाम—चित्रशिखण्डिनः (चित्रः शिखण्डः चूडाविशेषोऽस्ति एषामिति इनिः) है।

[6]लग्नम् (अलगदिति निपातनात् क्तः इडभावः तस्य नश्च) यह एक नपुंसक नाम राश्युदय का है। राशियाँ—मेषवृषौ आदी येषां ते मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन, ये बारह राशियाँ हैं ॥ २७ ॥

[7]सूरः (सुवति प्रेरयतीति क्रन्, शवति शूरयतेः वा तालव्योपिः) [8]सूर्यः (सरतीति निपा०) [9]अर्यमा (इयन्तीति निपानः) आदित्यः [10](अदितेरपत्यम् ढक् द्वादशात्मा (द्वादश आत्मनो मूर्तयो यस्य) दिवाकरः (दिवा करोतीति, टः) [11]भास्करः (भाः करोतीति टः) कस्कादित्वात्–अहस्करः (अहः करोतीति टः), ब्रध्नः (तिमिरं बध्नातीति बध्नादेशो नक् च) प्रभाकरः, विभाकरः, [12]भास्वत् (भासः सन्त्यस्य मतुप्) [13]विवस्वत् (विवो रश्मिः अस्यास्तीति) सप्ताश्वः (सप्त अश्वाः यस्य) हरिदश्वः (हरतोऽश्वः यस्य) उष्णरश्मिः (उष्णा

---

१. तमांसि गुणतिमिरसैंहिकेयाः । इति त्रिकाण्डशेषः । २. स्वर्भानुस्तु तमो राहुः । इति पुंस्काण्डे रत्नकोषामरमालयोर्दर्शनात् । ३. केतुर्नारुवपताकाविग्रहोत्पातेषु लक्ष्मणि । ४. शिखी वह्नौ बलीवर्दे शरे केतुग्रहे द्रुमे । मयूरे कुक्कुटे चाश्वे, शिखा वत्यन्यमलिङ्गकः ॥ इति स्वामी । ५. मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः ॥ ६. लग्नं राश्युदये क्लीबं सक्तलज्जितयोस्त्रिषु । ७. शूरश्चारुभटे सूर्ये । इति विश्वः । सुभटे शूरः सूर्ये दन्त्योऽपि इत्यूष्मविवेकः । ८. सूर्योऽर्कपर्णे तपने स्त्री तद्भार्यौषधीभिदोः । ९. अर्यमा पितृदैवते । तरणौ सूर्यभक्तायाम् ॥ १०. आदित्यास्त्रिदशार्कयोः इति । ११. भास्करो वह्निसूर्ययोः । १२. भास्वान्दीप्ते रवौ । १३. विवस्वान्विबुधे सूर्ये तन्नगर्यां विवस्वती ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।
पद्माक्षस्तेजसां राशिश्छायानाथस्तमिस्रहा ।
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः ॥ प्र० ॥
प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः ।
इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः ॥ प्र७ ॥
माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः ॥ ३१ ॥

रश्मयो यस्य) विकर्तनः (विकर्तयति ल्युट्) १अर्कः (अर्च्यते घञ्) २मार्तण्डः (मृतेऽण्डे भवः) ३मिहिरः (मेहतीति किरच्) ४अरुणः (ऋच्छति उनन्) पूषन् (पुष्णातीति निपा०) द्युमणिः (दिवः मणिरिव) ५तरणिः (तरन्त्यनेन इनिः) ६मित्रः (मेद्यति स्निह्यतीति) ७चित्रभानुः (चित्रा भानवो यस्य) ८विरोचनः (विरोचते दीप्यते इदि युच्) ९विभावसुः विभैव वसु यस्य) ग्रहपतिः (ग्रहाणां पतिः) त्विषांपतिः (अलुक्) अहर्पतिः (अह्नः पतिः) १०भानुः (भातीति नुः) ११हंसः (हन्तीति सः) सहस्रांशुः (सहस्रमंशवो यस्य) १२तपनः (तपतीति ल्युः) सविता (सुवतीति तृच्) १३रविः (रवते शब्दयतीति इः) ये ३७ पुं० नाम भगवान् सूर्य के हैं ॥ २८–३० ॥

पद्माक्षः, तेजसां राशिः, छायानाथः, तमिस्रहा, कर्मसाक्षी, जगच्चक्षुः, लोकबन्धुः, त्रयीतनुः, प्रद्योतनः, दिनमणिः, खद्योतः, लोकबान्धवः इनः, भगः, धामनिधिः, अंशुमाली, अब्जिनीपतिः ये १७ पुं० भाम सूर्य के प्रक्षिप्त हैं ॥ ३१ ॥

१४माठरः (मठति निवसति, अरच्, मठरस्यापत्यम्, अण्) पिङ्गलः (पिङ्गलो वर्णोऽस्यास्तीति, अच्) १५दण्डः (दण्डयतीति, अच्) ये तीन पुं० नाम भगवान् सूर्य के पास में रहने वाले के है ।

---

१. अर्को द्रुभेदे स्फटिके ताम्रे सूर्ये विडौजसि । २. मार्तण्डः क्रोडसूर्ययोः । ३. मिहिरमिहिरगोथाः कालकूप्रपाणिः । इति त्रिकाण्डशेषात् । ४. अरुणोऽव्यक्तरागेऽर्के सन्ध्यारागेऽर्कसारथौ । निःशब्दे कपिले कुष्ठभेदे ना गुणिनि त्रिपु ॥ अरुणातिविषाश्यामामञ्जिष्ठात्रिवृत्तासु च । ५. तरणिर्घुमणौ पुंसि कुनारी नौकयोः स्त्रियाम् । ६. मित्रं सुहृदि न द्वयोः । सूर्ये पुंसि । ७. चित्रभानुः पुमान्वैश्वानरं चाहस्करेऽपि च । ८. विरोचनः प्रह्लादस्य तनयेऽर्केऽग्निचन्द्रयोः । ९. विभावसुः पुमान्सूर्ये हारभेदे च पावके । १०. भानुरंशौ रवौ दिने । ११. हंसः स्यान्मानसौकसि । निर्लोभनृपविष्ण्वर्कपरमात्मनि मत्सरे । योगिभेदे मन्त्रभेदे शारीरमरुदन्तरे । तुरंगमप्रभेदे च । १२. तपनोऽरुष्करेऽपि स्याद्भास्करे निरयान्तरे । तपनस्तापनो रविः । इति संसारावर्तात् । १३. चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः । इति वक्ष्यमाणत्वात् । १४. माठरो व्यासविप्रयोः सूर्यानुगे । १५. दण्डसैन्ये दमे यमे । मानव्यूहप्रभेदेष्वश्वेऽर्कानुचरे मथि । प्रकाण्डे लगुडे कोणे चतुर्थोपायवर्गयोः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः।
परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

किरणानामेकादशनामानि

किरणोऽस्र मयूखांशु गभस्तिघृणिधृष्णयः।
भानुः करो मरीचिःस्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
स्युः प्रभारुग्रुचिस्त्विड्भाभाश्छविद्युतिदीप्तयः।

सूरसूतः (सूरस्य सूतः) अरुणः (अरुणो वर्णोऽस्यास्तीति, अच्) अनुरुः (अविद्यमानौ ऊरू यस्य) काश्यपिः (कश्यपस्यापत्यम् , इञ्), गरुडाग्रजः (गरुडस्य अग्रजः) ये ५ पुंलिङ्ग नाम सूर्य के सारथि (घोड़े हाँकने वाले) के हैं। [१]परिवेषः (परितो विष्यते व्याप्नोतीति घञ्) [२]परिधिः (परितो धीयते अनेन, किः), उपसूर्यकम् (उपगतं सूर्यं, उपसूर्यमेवोपसूर्यकम्) मण्डलम् (मण्डतीति) ये ४ नाम मण्डल के हैं जिनमें प्रथम दो पुं०, अन्त के दो नपुंसक हैं ॥ ३२ ॥

किरणः (कीर्यते, क्युः), [४]उस्रः (वसन्ति रश्मा अस्मिन् रक संप्रसारणं च), [५]मयूखः (मिमीते ऊखः, मयादेशश्च) [६]अंशुः (अंशयति विभजते कुः), [७]गभस्तिः (गौः ज्ञेयवर्गः मही वा, तां बभस्ति दीपयतीति, क्तिः), [८]घृणिः (घरन्तीति निः गुणाभावश्च निपातनात् ,) घृष्णिः (धृष्णोतीति निः गुणाभावश्च) भानुः (भातीति नुः) [९]करः (कीर्यते, अप्) [१०]मरचिः (म्रियते तमोऽस्मिन्) दीधितिः (दिधीते दीप्यते, क्तिच् ,) ये ११ किरण के नाम हैं जिनमें प्रथम नौ शब्द पुं० हैं, मरीचि शब्द स्त्री० पुं० दोनों हैं और दीधिति शब्द स्त्री० हैं ॥ ३३ ॥

प्रभा (प्रकृष्ट यथास्यात्तथा भाति कः) [११]रुक् (रोचते, क्विप्) रुचिः (रोचते इति इनिः) [१२]त्विट् (त्वेषति दीप्यते, क्विप्) भा (भातीति डः, टाप्) [१३]भाः (भासते विश्वं, क्विप् विश्वपावत्) छविः (छ्यति तमः क्विन्) द्युतिः (द्योततेऽनया इन्) दीप्तिः (दीप्यते

---

१. परिवेषः स्यात्परिधौ परिवेषणे। इति मूर्धन्यान्ते रुद्रः। वेष्टने परिवेशः स्याद्भानोः सविधमण्डले। इति तालव्यान्ते रभसः। २. परिधिर्यजज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यकम्। ३. मण्डलं परिवेशश्च परिधिश्चोपसूर्यकम्। इति भागुरिः। ४. उस्रो वृषे च किरणेऽप्युस्त्रार्जुन्युपचित्रयोः। ५. मयूखः किरणेऽपि च। ज्वालायामपि शोभायाम्। ६. अंशुर्लेशे रवौ रश्मौ। इति विश्वः। अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशे किरणे चण्डदीधितौ। ७. गभस्तिः किरणे सूर्ये ना स्वाहायां तु योषिति। ८. घृणिः पुनः। अंशुज्वालातरङ्गेषु। वृष्णिः इति पाठान्तरम्। ९. करो वर्षोपले रश्मौ पाणौ प्रत्यायशुण्डयोः। १०. द्वयो-र्मरीचिः किरणो भानुरुस्रः करः पदम्। इति शब्दार्णवः। मरीचिर्मुनि भेदेनागभ स्तावनपुंसकम्।

११. रुक् शोभाकिरणेच्छासु। रुचि दीप्तौ च शोभायामभिष्वङ्गाभिलाषयोः। १२. त्विट् शोभायां जिगीषायां व्यवसाये रुचौ गिरि। १३. भा भुव्यलंकृतौ दीप्तौ स्त्रियां भाः किरणे द्युतौ इति नानार्थरत्नमाला भाः प्रभावे मयूखे च।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोचिः शोचिरुभे क्लीबे प्रकाशोद्योत आतपः॥ ३४॥
कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति।
तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वत् मृगतृष्णा मरीचिका॥ ३५॥
इति दिग्वर्गः।

४. अथ कालवर्गः

कालो दिष्टो प्यनेहापि समयोप्यथ पक्षतिः।
प्रतिपद्द्वे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिथयो द्वयोः॥ १॥

अनया) रोचिः (रोचते) अनेन इसिः) शोचिः (शुच्यति पूतीभवत्यनेन) ये ११ नाम प्रभा के हैं, जिनमें ९ स्त्री, रोचिः, शोचि नपुंसक हैं।

[1]प्रकाशः (प्रकाश्यते, घञ्) द्योतः (द्योत्यते, घञ्) आतपः (आतपतीति, अच्) ये तीन पुं० नाम घाम के हैं॥ ३४॥

कोष्णम् (ईषदुष्णं कोष्णम् कादेशः) कवोष्णम्, (कवादेशः) मन्दोष्णं (मन्दं च उष्णं च) कदुष्णम् (कदादेशः) ये ४ नपुंसक नाम किंचित् (थोड़े) गर्म के हैं। ये गुण-वाचक होने से नपुंसक हैं, और गुणी (गुणवाला) होने पर त्रिलिंग हैं।

तिग्मम् (तेजयति मक् कुत्वं च) [2]तीक्ष्णम् (तेजयति, स्नक् दीर्घश्च) [3]खरम् (खरातीति कः) ये तीन नपुंसक नाम अधिक गर्म के हैं। ये भी धर्मपरक होने से नपुंसक और धर्मी होनेपर त्रिलिंग होते हैं।

मृगतृष्णा (मृगाणां तृष्णा अस्ति अस्याम् अच्) मरीचिका (मरीचिरिव कन्) ये दो स्त्री० नाम मृगतृष्णा के हैं। गर्मी के दिनों में वालुकामय प्रदेशों पर सूर्य की किरण पड़ने पर जल का आभास होता है, उसे ही मृगतृष्णा कहते हैं॥ ३५॥ इति दिग्वर्गः।

[4]कालः (कल्यते घञ्) [5]दिष्टः (दिशतीति क्तः) अनेहस् (नाहन्यते नागम्यते, असुन्, एहादेशः आनङ् युट्च्) [6]समयः (सम्यक् एति अच्) ये ४ पुलिंग नाम सामान्य काल के हैं।

[7]पक्षतिः (पक्षस्य मूलम् क्तिन्) [8]प्रतिपत्, (प्रतिपद्यते उपक्रम्यते अनया मासादिः क्विप्) ये दो स्त्रीलिंग नाम मास के प्रारम्भ में आने वाली प्रथम तिथि के हैं। प्रतिपदादि, तिथियाँ कहलाती हैं, तिथि शब्द का प्रयोग स्त्री० पुं० दोनों में होता है॥ १॥

---

१. प्रकाशः स्फुटहासयोः। उद्द्योतेऽतिप्रसिद्धे च। २. तीक्ष्णं सामुद्रलवणे विषलोहाजिमुष्कके। क्लीबं यवाग्रके पुंसि तिग्मार्यत्यागिनोस्त्रिषु। ३. खरंस्यात्तीक्ष्णधर्मयोः। गर्दभेऽस्त्री देवताडे। इति दिग्वर्गः॥ ४. कालो मृत्यौ महाकाले समये यमकृष्णयोः। ५. दिष्टं दैवे पुमान्काले। ६. समयः शपथे भाषासंपदोः कालसंविदोः। सिद्धान्ताचारसंकेतनियमावसरेषु च॥ क्रियाकारे निर्देशे च॥ ७. पक्षतिस्तु भवेत्पक्षमूले च प्रतिपत्तिथौ। ८. प्रतिपत्स्त्रीतिथौ मतौ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।
प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुष प्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥
प्रभातं च दिनान्ते तु सायः सन्ध्या पितृप्रसूः ।
प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥
निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।

---

[१]घस्रः (घसत्यन्धकारम् रक्) दिनन् (दीयते क्षयं प्राप्नोतीति, नक ह्रस्वः) अहः (न जहातीति कनिन्) दिवसः (दीव्यतीति असच्) [२]वासरः (वासयति अरः) ये ५ दिन के नाम हैं जिनमें घस्र शब्द पुं०, दिन, अहन् नपुं०, शेष दो शब्द पुं० नपुं० दोनों हैं ।

[३]प्रत्यूषस् (प्रत्यूषति रुजति कामुकान्, कः) अहर्मुखम् (अह्नः मुखम्) [४]कल्यम् (कलयतीति यक्) [५]उषः (ओषति दहति अन्धकारम् अस्) प्रत्युषः (अन्योपसर्गनिवृत्तये) प्रभातम् (भातुं प्रवृत्तम् क्तः) ये ६ नाम प्रातःकाल के हैं। जिनमें प्रत्यूषस् पुलिंग, नपुंसक दोनों हैं, शेष ५ नपुंसक हैं ।

दिनान्तः (दिनस्यान्तः) [६]सायः (स्यति मापयति दिनन् णः) ये दो पुंलिंग नाम दिनान्त के हैं यदि 'सायं' मान्तपाठ हो तो अव्यय या नपुंसक जानना चाहिए ।

[७]सन्ध्या (सम्यक् ध्यायन्त्यस्याम् अङ्) पितृप्रसूः (पितॄन् प्रसूते क्विप् पितृणां प्रसूर्मातेव । पितृकृत्ये सन्ध्यावर्त्तिन्यास्तिथेर्ग्राह्यत्वादस्याः प्रसूतुल्यपालकतया तथात्वम् इति शब्दकल्पद्रुमः) ये दो स्त्री० नाम सन्ध्या काल के हैं ।

प्राह्णः (प्रथमं च तदहश्च, टच् अह्नादेशः णत्वं च) अपराह्णः (अह्नः अपरम्) मध्याह्नः (अह्नः मध्यम्) दिनादि, दिनमध्य, दिनान्त के १—१ पुंलिंग नाम हैं । ये तीनों मिलाकर— त्रिसन्ध्यम् (तिसृणां सन्ध्यानां समाहारः) कहलाता है, इसका प्रयोग नपुंसक लिंग में होता है । स्त्रीलिंग होने पर त्रिसन्ध्यी होगा ।

[८]शर्वरी (शृणाति हन्ति चेष्टाः, ष्वरच, ङीप् च) [९]निशा (नितरां श्यति तनूकरोति व्यापारानिति कः), [१०]निशीथिनी (निशीथोऽस्त्यस्याम्, इनिः) [११]रात्रिः (राति ददाति सुखम् त्रिप्) त्रियामा (त्रयः यामा यस्याः सा) याधातोर्मनिन्) [१२]क्षणदा (क्षणं उत्सवं

---

१. घस्रस्तु दिवसे हिंस्रे । २. वासरस्तु पुमान्नागप्रभेददिनयोरपि । ३. प्रत्यूषोऽहर्मुखे वसौ । ४. कल्यं प्रभाते क्लीबं स्यात्कल्यो वाक् श्रुतिवर्जिते । सज्जनीरोगदक्षेषु कल्याणवचनेऽपि च । उपायवचनेऽपि स्यात्त्रिषु मद्येतु योषिति । ५. उषः प्रत्युषसि क्लीबं पितृप्रस्वां च योषिति ॥ ६. सायः काण्डे दिनान्ते च । ७. संध्य पितृप्रसूनद्यन्तरयोर्युगसंधिषु । संध्या पितृप्रसूः संधा इति शब्दार्णवः । ८. शार्वरी यामिनीस्त्रियोः । शर्वरी शार्वरी शर्या । इतिशब्दार्णवः । ९. निशा दारुहरिद्रायां स्यात्त्रियामाहरिद्रयोः । इति विश्वः । १०. निशीथिनी निशा निट् च श्यामा तुङ्गी तमा तमी । इति नामनिधानात् । निट् पृषोदरादित्वात् । ११. रात्री रात्रिस्तमस्विनी । इति शब्दार्णवः । १२. क्षणदो गणके, रात्रौ क्षणदा क्षणदं जले ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥
तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी चन्द्रिकयान्विता।
आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥
गणरात्रं निशा बह्व्यः प्रदोषो रजनीमुखम्।
अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥
स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम्।

ददातीति कः) क्षपा (क्षपयति नाशयति चेष्टाम्, अच्) [1]विभावरी (विभाति चन्द्रादिभिः क्वनिप् ङीन्रौ) तमस्विनी (तमोऽस्ति अस्याम् विनिः) [2]रजनी (रजन्त्यनुरक्ता भवन्त्यनुरागिणोऽस्याम्) यामिनी (निन्दिताः यामा यस्याः भीतिहेतुत्वात् इनिः) तमी (ताम्यति-ग्लानिं प्राप्नुवन्त्यस्याम् इनिः) ये १२ स्त्रीलिङ्ग नाम रात्रि के हैं ॥ २-४ ॥

अन्धकार से युक्त रात्रि का—[3]'तमिस्रा' ([4]तमो बहुलमस्त्यस्याम्, निपातनात्) यह एक स्त्री० नाम है। चान्दनी से युक्त रात का [5]ज्यौत्स्नी (ज्योत्स्नाऽस्त्यस्याम्) यह एक स्त्री० नाम है।

आने वाले और वर्तमान दिन से युक्त रात का--[6]पक्षिणी (पूर्वापरदिने पक्षाविव स्तः यस्याम् इति इनिः) यह एक स्त्री० नाम है ॥ ५ ॥

गणरात्रम् (गणानां बहूनां रात्रीणां समाहारः, अच्) यह एक नपुंसक नाम रात्रि समूह का है।

[7]प्रदोषः (दोषायाः प्रारम्भः उपसर्जनह्रस्वः) रजनीमुखं (रजन्या मुखम्) ये दो नाम रात्रि के प्रारम्भ के हैं। जिनमें प्रथम पुं० दूसरा नपुंसक है।

अर्धरात्रः (अर्धं रात्रेः अच्, [8]निशीथः (निशेरते अस्याम् थक्) ये दो पुंलिंग नाम आधी रात के हैं। इमौ द्वौ समानार्थौ समानलिङ्गौ स्तः।

[9]यामः (यातीति मन्) प्रहरः (प्रह्रियते ढक्कादिभिः घः) ये दो पुं० नाम दिन रात के आठवें भाग के हैं; अर्थात् तीन घण्टे समय का नाम याम, या प्रहर है। इमौ द्वौ समौ इत्यन्वयः ॥ ६ ॥

प्रतिपत् और पूर्णिमा या अमावस्या का जो मध्य है उसे सन्धि कहते हैं और वही [10]पर्व

१. विभावरी निशारात्र्योः कुट्टन्यां चक्रयोषिति। विवादे वक्रकुट्यां च। २. रजनी नलिनीरात्रिहरिद्राजतुकासु च। ३. तमिस्रं तिमिरे कोपे पुंसि स्त्री तु तमस्ततौ। ४. तामसी निशि दुर्गायां तामसो भुजगे खले। ५. ज्यौत्स्नी पटीलिकायां स्याज्ज्योत्स्नायुक्तनिशि स्त्रियाम्। ६. पक्षिणी पूर्णिमायां स्याद्दिहग्यां शाकिनीभिदि। आगामी वर्तमानाहर्युक्तरात्रावपि स्त्रियाम्। ७. दोषा रात्रौ भुजेऽपि च। नक्तं दोषा च रजनौ प्रदोषः कालदोषयोः। ८. निशीथस्तु पुमानर्धरात्रे स्याद्रत्रिमात्रके। ९. यामस्तु पुंसि प्रहरे संयमेऽपि प्रकीर्तितः। १०. प्रतिपत्पञ्चदश्योस्तु संधिः पर्व प्रदिक् ककुप्। इति दुर्गः। पर्व क्लीवं महे ग्रन्थौ प्रस्तावे लक्षणान्तरे। दर्शप्रतिपदोः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥
कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ।
अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥
सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।
उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥
सोपप्लवोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः ।

है। प्राचीन—पर्वसन्धि समुदित एक नाम पुंलिंग–मानते हैं। पक्षान्तः (पक्षस्यान्तः) पञ्चदशी (पञ्चदशानां पूरणी) ये दो अमावस्या और पूर्णिमा के नाम हैं जिनमें प्रथम पुं० दूसरा स्त्री० है।

[1]पौर्णमासी, पूर्णिमा (पूर्णो मासोऽस्याम् अण्। पूर्णेन निर्वृता, इमप्-टाप्) शुक्लपक्ष की अन्तिम तिथि के ये दो नाम स्त्रीलिंग हैं। [2]अनुमतिः (अनुमन्यते क्तिच्) यह एक स्त्रीलिंग नाम उस पूर्णिमा का है जो प्रतिपत् से युक्त हो। [3]राका (राति ददाति सुखम्, कः, निरनुबन्धकः) यह एक स्त्री० नाम शुद्ध पूर्णिमा का है।

[4]अमावास्या (अमा सहः वसतः अस्यां चन्द्राकौं ण्यत् वृद्धौ) अमावस्या (वृद्ध्यभावपक्षे) [5]दर्शः (दृश्यते अनेन इति घः) सूर्येन्दुसंगमः (सूर्येन्दू संगच्छेते अस्याम् घः) ये ४ नाम अमावास्या (कृष्णपक्ष की अन्तिम तिथि) के हैं जिनमें प्रथम दो स्त्री० शेष दो पुंलिङ्ग हैं ॥ ८ ॥

[6]सिनीवाली (सिनीं चन्द्रकलां वलति धारवतीति, अण्) यह एक स्त्रीलिङ्ग नाम उस अमावस्या का हैं जिसमें चन्द्रमा देखा जाय अर्थात् चतुर्दशीयुता अमावास्याका नाम सिनीवाली है।

[7]कुहूः (कुहयति विस्मापयतीति) यह एक स्त्री० नाम शुद्ध अमावास्या का है जिस अमावास्या में चन्द्रमा की कला नष्ट हो गई हो।

[8]उपरागः (उपरज्यते अनेन घञ् नलोपः) [9]ग्रह (ग्रहणं ग्रहः अप्) ये दो पुंलिङ्ग नाम सूर्य या चन्द्रग्रहण के है ॥ ९ ॥

[10]सोपप्लवः (सह उपप्लवेन राहुणा वर्तमानः, सहस्य सभावः) [11]उपरक्तः (उपरज्यते

संधौ विपुवत्प्रभृतिष्वपि ॥ १. पौर्णमासः पुमान्यज्ञभेदे स्त्री पूर्णिमातिथौ। २. अथानुमतिरूपेन्दुपूर्णिमानुज्ञयोरपि। ३. राका नद्यन्तरे कच्छ्वां नवजातरजः स्त्रियाम्। सम्पूर्णेन्दुतिथौ। ४. दर्शोमाऽमावसी च स्यात्। इति रभसः। अप्यमावस्यमावासी चामामस्यप्यमामसी। इति शब्दार्णवः। ५. पक्षान्तेऽब्धौ दर्शने च दर्शः सूर्येन्दुसंगमे। ६. सिनीवाली तु दृष्टेन्दुकलामादुर्गयोः स्त्रियाम्। ७. धेनूरुरज्जुकुहुसरयुननुकरणवः स्त्रियाम्। इति विन्ध्यवासी। कुहुः स्त्री कोकिलालापनष्टेन्दुकलदर्शयोः। ८. उपरागस्तु पुंसि स्याद्राहुग्रासेऽर्कचन्द्रयोः। दुर्नये ग्रहकल्लोले व्यसनेऽपि निगद्यते। ९. ग्रहो निग्रहनिर्बन्धग्रहणेषु रणोद्यमे। सूर्यादौ पूतनादौ च सैंहिकेयोपरागयोः ॥ १०. उपप्लवः सैंहिकेये विप्लवोत्पातयोरपि। ११. उपरक्तो व्यसनार्ते राहुग्रस्तेन्दुसूर्ययोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥
अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला।
तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥
ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च।
पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥
द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः।
अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥

स्म इति क्तः) ये दो पुं० नाम राहुग्रस्त सूर्य या चन्द्र के हैं।

अग्न्युत्पातः (अग्नेरुत्पतनम्) [१]उपाहितः (उप समीपे आहितं फलं यस्य) ये दो पुं० नाम आकाश में होने वाले अग्निविकार के हैं। साधारणवचन अर्थात् एक योग से दिवाकर-निशाकरौ पुष्यते पुष्पो विकासोस्ति ययोः तौ [२]'पुष्पवन्तौ' (पुष्पः विकासः प्रकाश तद्वन्तौ) यह एकपुं० द्विवचनान्त नाम एकत्र स्थित सूर्य और चन्द्रमा का हैं ॥ १० ॥

काष्ठा (काशते) नेत्र के स्पन्दन में जितना समय लगे उसे निमेष कहते हैं और १८ [३]निमेष का एक [४]काष्ठा (काशते, क्यन्) होता है; जो स्त्रीलिङ्ग है। तीस काष्ठा का एक स्त्री० नाम [५]कला (कलयति संख्यतीति, अच्) है ॥

तीस कला के तुल्य समय का एक पुं० नाम—[६]क्षणः (क्षणोति हन्तीति, अच्) है। ते द्वादश क्षणाः—बारह क्षणों के बराबर समय का एक पुं० नाम मुहूर्त (हूर्छतीति कः मुडागमः छलोपो दीर्घश्च) है। ते मुहूर्ताः त्रिंशत् अहोरात्रः—तीस मुहूर्तों का नाम अहोरात्रः (अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रः, अच्) है। १५ अहोरात्र का एक पुं० नाम [७]पक्षः (पक्ष्यते परिगृह्यते) है। पक्ष दो प्रकार का होता है, एक कृष्ण, दूसरा शुक्ल, मासके पहला पक्ष शुल्क है और दूसरा पक्ष कृष्ण। दो पक्षों का एक पुं० नाम मास (मस्यते परिमीयतेऽनेन, घञ्) है।

अग्रहण आदि दो दो महीने का एक पुं० नाम [८]ऋतुः (इयतीति तुः) है। त्रिभिः ऋतुभिः [९]अयनम्—तीनऋतुका अर्थात् छः महीने का एक नपुं० नाम अयनन् (अयते गच्छ-त्य-कोऽनेन ल्युट्) है।

सूर्य की गति भेद से अयन दो प्रकार के होते हैं, सूर्य जब उत्तर दिशामें रहते हैं तब उत्तरायण (सूर्यस्य उत्तरा गतिः) और सूर्य जब दक्षिण दिशा में रहते हैं तब दक्षिणायन

---

१. उपाहितोऽनलोत्पाते पुमानारोपिते त्रिषु। २. पुष्पदन्तौ पुष्पवन्तावेकोक्त्या। इति हैमतः 'पुष्पदन्तौ' अपि बोध्या। ३. क्षणद्वयं लवः प्रोक्तो निमेषस्तु लवद्वयम्। इत्यादि शास्त्र-सिद्धा निमेषाः ॥ ४. काष्ठा दारुहरिद्रायां कालमानप्रकर्षयोः। स्याद्दिशि स्थानमात्रे च काष्ठ-माख्यातमिन्द्रिये। इति विश्वः। ५. कला स्यात्कालशिल्पयोः। ६. क्षणः पर्वोत्सवेऽपि स्यात्तथा मानेऽप्यनेहसः। ७. पक्षो बले सखिसहाययोः। चुल्लीरन्ध्रे पतत्रे च राजकुञ्जरपार्श्वयोः। ८. ऋतुः स्त्री कुसुमे मासि वसन्तादीषुधारयोः। ९. अयनं पथि भानोरप्युदग्दक्षिणतो गतौ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवञ्च तत् ।
पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ।
नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ प्र० ॥
मार्गशीर्षे सहामार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥
पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने ।
स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

(दक्षिणा गतिः) कहा जाता है; ये दोनों शब्द नपुंसक हैं। एवं दो अयन का एक पुं० नाम वत्सरः (वसन्त्यस्मिन् सरप्रत्ययः यस्य सः, ८ वर्षः) है।

तुला और मेष की संक्रान्ति में रात-दिन बराबर के होते हैं; उस काल के दो नाम नपुं० [१]विषुवत् (विषु=समानार्थकोऽव्ययः अस्ति अस्मिन्निति मतुप्, वत्वं च) विषुवम् (विषु= साम्यं विद्यतेऽत्रेति वः) है।

पुष्य नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को पौषी कहते हैं—जिस मास मे पौषी पूर्णिमा हो उसे पौष कहते हैं। इसी प्रकार माघ आदि ग्यारह महीनों का भी समझना चाहिये। जैसे—मघा नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा माघी और माघी पूर्णिमा हो जिस मास में उसे माघ कहते हैं।

मार्गशीर्षः (मृगशिरसा युक्ता पौर्णमासी अण्, शीर्षादेशे मार्गशीर्षी, साऽस्मिन्मासे अण्) [२]सहा (सहते असुन् सान्तः) [३]मार्गः (मृगेण=मृगशिरसा युक्ता पौर्णमासी मार्गी साऽस्मिन्नस्तीति अण्) आग्रहायणिकः (आग्रहायण्या युक्ता पौर्णमासी अस्मिन् ठक्) ये ४ पुं० नाम अग्रहण मास के हैं ॥ १४ ॥

[४]पौषः (पुष्येण युक्ता पौर्णमास्यस्मिन्, अण्, यलोपः ङीप् सास्मिन् अण्) तैषः (तिष्येण युक्ता पौर्णमास्यस्मिन् पूर्ववत्) सहस्यः (सहसि बले साधुः यत्,) ते तीन पुं० नाम पूस मास के हैं।

[५]तपाः (तपत्यस्मिन् असुन्, तपाः, तपसौ, तपसः रूपाणि) माघः (मघया युक्ता पौर्णमास्यस्मिन् अण्, ङीप् साऽस्मिन् अण्) ये दो पुं० नाम माघ मास के हैं।

[६]फाल्गुनः (फलति निष्पादयतीति उनन्, गुगागमोऽण् वृद्धिश्च) [७]तपस्यः (तपसि साधुः यत्) फाल्गुनिकः (ठकि) ये तीनों पुं० नाम फाल्गुन मास के हैं।

---

१. विषुवान् समरात्रिवासरः इति पुंस्काण्डे बोपालितः ॥

२. सहो बले ज्योतिषि च सहा हेमन्तमार्गयोः । ३. मार्गे सहः सहाः । इति शब्दार्णवः ॥ मृगशिरा मृगः । मार्गो मृगमदे मासे सौम्यर्क्षेऽन्वेषणे पथि । ४. पौषो मासप्रभेदे स्यात्पोषं तु महयुद्धयोः । ५. तपो लोकान्तरेऽपि च । चान्द्रायणादौ धर्मे च पुमान् शिशिरमाघयोः ॥ ६. फल्गुनस्त्वर्जुने मासे नक्षत्रे फल्गुनी स्मृता । इति गोवर्धनानन्दः ॥ फाल्गुनस्त्वर्जुने मासे फाल्गुनी चास्य पूर्णिमा । इति धरणिः ॥ फाल्गुनस्तु गुडाकेशे नदीजार्जुनभूरुहे । तपस्यसंज्ञमासे तत्पूर्णिमायां तु फाल्गुनी ॥ ७. तपस्यः फाल्गुने मासे तपस्या नियमस्थितौ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैशाखे माधवो राधो ज्यैष्ठे शुक्र शुचिस्त्वयम्।
आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः॥ १६॥
स्युर्नभस्य-प्रौष्ठपद-भाद्र-भाद्रपदाः समाः।
स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोपि स्यात्तु कार्तिके॥ १७॥
बाहुलोर्जौ कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम्।

[1]चैत्रः (चित्रया युक्ता पौर्णमास्यस्मिन् पूर्ववत्) चैत्रिकः (ठकि) [2]मधुः (मन्यते जानाति) ये तीन पु० नाम चैत्र के हैं।

[3]वैशाखः (विशाखया युक्ता पौर्णमास्यस्मिन्निति पूर्ववत्) माधवः (मधु पुष्परसोऽस्मिन्नस्तीति अः) राधः (राधया विशाखया युक्ता, राधी साऽस्मिन्नस्तीति पूर्ववत्) ये तीन पुं० नाम वैशाख के हैं।

[4]ज्यैष्ठः (ज्येष्ठया युक्ता ज्यैष्ठी साऽस्मिन्नस्तीति अणद्वयेन पूर्ववत् साधुः) [5]शुक्रः (शोचन्त्यस्मिन् विरहियः, रक् कुत्वं च) ये दो पुं० नाम ज्येष्ठ मास के हैं।

शुचिः (शोचन्त्यस्मिन् इन् कित्वात् गुणाभावः) [6]आषाढः (आषाढया युक्ता पौर्णमासी अस्मिन्निति अणद्वयेन साधुः) ये दो पुं० नाम आषाढ़ मास के हैं।

[7]श्रावणः (श्रवणन युक्ता पौर्णमासी श्रवणा साऽस्मिन्नस्तीति पूर्ववत्), [8]नभाः (विरहिणो नभ्यति दुःखीभवन्ति अस्मिन्, नभसौ नभसः इति रूपाणि) श्रावणिकः (श्रवणवती पौर्णमास्यस्मिन्निति ठकि कृते) ये तीन पुं० नाम श्रावण मास के हैं।

नभस्यः (नभसि मेघे साधुः) प्रौष्ठपदः (प्रोष्ठपदाभिर्युक्ता साऽस्मिन्) पूर्ववत्) भाद्रः (भद्राभिर्युक्ता पूर्ववत्) भाद्रपदः (भाद्रपदाभिर्युक्ता पूर्ववत्) ये ४ पुं० नाम भाद्रपदमास के हैं।

[9]आश्विनः (अश्विन्या युक्ता पौर्णमास्यस्मिन्नस्तीति पूर्ववत्) इषः (एषणमिट् यात्रा, जिगीषूणामिति शेषः क्विप् सास्मिन्नस्तीति अच्) आश्वयुजः (अश्वयुजा युक्ता पौर्णमास्यस्मिन्नस्तीति अणद्वयेन पूर्ववत्) ये तीन पुं० नाम क्वार मास के है।

कार्तिकः (कृत्तिकाभिर्युक्तेत्यादि पूर्ववत्) बाहुलः (बहुलाभिः कृत्तिकाभिर्युक्ता पौर्णमास्यस्मिन् अणद्वयेन पूर्ववत्) ऊर्जः[10] (ऊर्जयति उत्साहयति जिगीषूनिति, अच्) कार्तिकिकः

१. चैत्रं मृते देवकुले ना भूमृन्मासभेदयोः। २. मधु पुष्परसे क्षौद्रे मद्येना तु मधुद्रुमे। वसन्तदैत्यभिच्चैत्रेस्याज्जीवन्त्यां तु योषिति। ३. वैशाखः स्थानके मासे मन्थानेऽपि। ४. ज्येष्ठो मासि च वृद्धे च ज्येष्ठा च गृहगोधिका। इति त्रिकाण्डशेषः॥ ज्येष्ठः स्यादग्रजे श्रेष्ठे मासभेदातिवृद्धयोः। ज्येष्ठा भे गृहगोधिकायाम्॥ ५. शुक्रः स्याद्भार्गवे ज्येष्ठमासे वैश्वानरे पुमान्। रेतोऽक्षिरुग्भदोः क्लीबम्॥ ६. आषाढ़ो व्रतिनां दण्डे मासे मलयपर्वते। स्त्री पूर्णिमायां॥ स्यादाषाढे त्वषाढकः। इति शब्दार्णवः॥ ७. स्त्री पुंसयोर्ऋक्षभेदे श्रवणं श्रुतिकर्णयोः। इति रभसः॥ श्रावणो मासि पाखण्डे दध्याल्यां श्रावणा मता इति हैमः॥ ८. धनुर्धरे त्रिषु नभाः क्लीबं व्योम्नि पुमान्घने। घ्राणश्रावणवर्षासु बिसन्ततौ पतद्ग्रहे॥ ९. आश्विनोऽश्वयुजश्चेषः। इत्यमरमाला॥ १०. ऊर्जः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥
निदाघं उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।
स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥
षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।
संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

(कृत्तिकावती पौर्णमास्यस्मिन्निति ठकि) ये ४ पुं० नाम कार्तिक के हैं।

हेमन्तः (हन्तीति झच् ह्यादेशो मुट्) अगहन पूस मास से बनी हुई ऋतु का यह एक पुं० नाम है।

[1]शिशिरः (शशन्ति धावन्ति अस्मिन् इति किरजन्तो निपातः) यह माघ, फागुन मास से बनी हुई ऋतु का एक पुं० नाम है।

[2]वसन्तः (वसन्त्यत्रोत्सवाः, झच्) पुष्पसमयः (पुष्पाणां समयः) सुरभिः (सुष्ठुरभन्ते अच् इनिः) ये तीन पुं० नाम चैत वैशाख से बनी हुई वसन्त ऋतु के हैं।

[3]ग्रीष्मः (ग्रसते अत्तीति रसान् मक्, धातोः ग्रीभावः पुगागमश्च) [4]ऊष्मकः (ऊषति मनिन् ततः कनि) [5]निदाघः (नितरां दह्यते अत्रेति घञ्, कुत्वम्) [6]उष्णोपगमः (उष्णमुपगममत्र) उष्णः (ओषतीति) ऊष्मागमः (ऊष्मा आगमो अत्र) तपः (तपतीति) ये ७ पुं० नाम ग्रीष्म ऋतु के हैं, जो ज्येष्ठ और अषाढ़ से बनी है।

प्रावृट् (वर्षणं वृट् क्विप् प्रकृष्टा वृडत्र दीर्घः) वर्षा (वर्षणमत्रास्ति अच् टाप्) ये दो स्त्री० नाम वर्षा ऋतु के हैं जो सावन भादों से बनती है। वर्षा शब्द नित्य बहुवचनान्त ही प्रयुक्त होता है।

[7]शरत् (शीर्यन्ते अस्यामोषधयः, अदिः) यह एक स्त्री० नाम शरत् ऋतु का है यह क्वार कार्तिक मास से बनती है। ये हेमन्तादि ६ ऋतुएं अग्रहण आदि दो दो महीने के क्रम से होती हैं ॥ १९$\frac{1}{2}$ ॥

संवत्सरः (संवसन्ति ऋतवोऽत्रेति सरः प्रत्ययः सस्य तः) वत्सरः (पूर्ववत्) [8]अब्दः (अप्यायते व्याप्यते इति दन् ह्रस्वत्वं च) [9]हायनः (जहाति भावान् ल्युट्) शरत् (शृणातीति

कार्तिके बले। इति हैमः। १. शिशिरः स्यादृतोर्भेदे तुषारे शीतलेऽन्यवत्। इति विश्वः। २. सुरभिर्हेम्नि चम्पके। जातीफले मातृभेदे रम्ये चैत्रवसन्तयोः। सुगन्धौ गवि शल्लक्याम्। इति हैमः। ३. ग्रीष्म उष्मर्तुभेदयोः। ४. ऊष्माणस्तु निदाघोष्ण ग्रीष्माः शषसहा अपि। ऊष्मो धर्मेऽश्रुणि तथा ज्येष्ठे, ऊष्मा स्त्रियां त्विषि। इति बोपालितः। ५. निदाघो ग्रीष्मकाले स्यादुष्णस्वेदाम्बुनोरपि। ऊष्णो ग्रीष्मे पुमान्, दक्षाशीतयोरन्यलिङ्गकः॥ ६. ऊष्मातपनिदाघयोः। इति नान्ते बोपालितः। ७. शरत् स्त्री वत्सरेऽप्मृतौ। शरद्भवेच्छरदया प्रावृट् प्रावृषया सह। इति विश्वः॥ ८. अब्दः संवत्सरे वारिवाहमुस्तकयोः पुमान्। ९. हायनो न स्त्रियां वर्षे पुंस्यर्चिव्रीहिभेदयोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः।
दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम्॥ २१॥
मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः।
संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि॥ २२॥
अस्त्री पङ्कं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम्।
कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम्॥ २३॥

अदिः) [१]समा (समन्ति विक्लवं कुर्वन्ति सर्वं अच् टाप्) ये ६ नाम वर्ष के हैं; जिनमें प्रथम तीन पुं०, हायन शब्द पुं० न० और शरद् समा ये दोनों स्त्री० हैं। समा शब्द का नित्य बहुवचनान्त ही प्रयोग होता है।

मनुष्यों का मास पितरों का एक अहोरात्र होता है जो पैत्र (पितृणा मयम् पैत्रः, अहोरात्रः) अहोरात्र कहा जाता है। कृष्ण पक्ष पितरों का दिन है और शुक्ल पक्ष पितरों की रात है। मनुष्यों का एक वर्ष देवताओं का एक अहोरात्र होता है जो 'दैवतः' अहोरात्रः (पुं०) कहा जाता है। अर्थात् मनुष्य का एक मास पितरों की १ दिन-रात होती है और मनुष्यों का एकवर्ष देवताओं की एक दिन-रात होती है।

देवताओं के २ हजार युगों का ब्रह्म का एक अहोरात्र होता है जो ब्राह्मः (ब्रह्मणोऽयम्) अहोरात्रः (पुं०) कहा जाता है। देवताओं के दो हजार युगों का मानुष [२]कल्पः (कल्पयतः स्थितिं प्रलयं चेति ण्यन्तात्, अच्) होता है। अर्थात् प्राणियों का स्थितिकाल और प्रलयकाल होता है। देवताओं के ७१ युगों का एक मन्वन्तर (मनोरन्तरमवकाशः, नपुं०) होता है। [३]संवर्तः (संवर्तते जगदत्र, घञ्) [४]प्रलयः (प्रलीयते श्लिष्यते अत्रेति अच्) [५]कल्पः (कल्प्यन्ते क्षीयन्ते अत्रेति, घः) [६]क्षयः (क्षीयन्ते प्राणिनोऽत्रेति, घः) [७]कल्पान्तः (कल्पास्यान्तः) ये ५ पुं० नाम प्रलयकाल के हैं॥२२॥ [८]पङ्कम् (पच्यते विस्तीर्यते दुःखमनेन घञ्) पाप्मा, पापम् (पिबति कर्त्तारम्) [९]किल्बिषम् (केलयति क्रीडयतीति, विषयेषु टिषच् वुगागमश्च) [१०]कल्मषम् (कर्म=शुभं—कर्म स्यति समाप्तं करोतीति कः ल्त्वषत्वे) [११]कलुषम् (कलयति वशीकरोतीति, उषच्) [१२]वृजिनम् (वृज्यते त्यज्यते इनच्) [१३]एनः (यान्त्यधोऽनेन, असुन्) [१४]अघम्

---

१. समाः संवत्सरे स्त्रियाम्। सर्वसाधुसमानेषु समंस्यादभिधेयवत्। २. कल्पः शास्त्र विधौ न्याये संवर्त्ते ब्रह्मणो दिने। ३. संवर्तः प्रलयेऽक्षद्रौ। इति हैमः। ४. प्रलयो मृतौ। संहारे नष्टचेष्टत्वे। इति हैमः॥ ५. कल्पो विकल्पे कल्पद्रौ संवर्ते ब्रह्मवासरे। शास्त्रे न्याये विधौ। इति हेमचन्द्रः॥ ६. क्षयो गेहे च कल्पान्तेऽपचये रुजि। इति हैमः॥ ७. कल्पःशास्त्रे विधौ न्याये संवर्ते ब्रह्मणो दिने। इति शाश्वतः॥ ८. पङ्कोऽघे कर्दमे। इति हैमः। ९. किल्बिषं पापरोगयोः। अपराधेऽपि। १०. कल्मषं किल्बिषे क्लीबं पुंसि स्यान्नरकान्तरे। ११. कलुषं त्वाविले पापे। १२. वृजिनं कल्मषे क्लीबं केशे ना कुटिले त्रिषु। १३. एनः पापापराधयोः। १४. अघं दुःखे व्यसनैनसोः। इति हैमः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।
मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥
स्यादानन्दथुरानन्द शर्मशातसुखानि च ।
कल्याणस्य द्वादश नामानि
श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥

(अङ्‌ घते गच्छति सुकर्मादिना, अच्) अंहः (अमति गच्छतीति, असुन् हुगागमश्च अंहतीति वा) दुरितम् (दुष्टं इतं गमनमनेन) दुष्कृतम् (दुष्टं कृतमनेन) ये १२ नाम पाप के हैं, जिनमें पङ्कशब्द पुं० न० दोनों लिङ्ग है और पाप्मन् शब्द पुंल्लिंग है, शेष १० शब्द नपुंसक हैं ॥ २३ ॥

१धर्मम् (धरति जगत्, मन्) २पुण्यम् (पुनातीति यत् णुगागमः ह्रस्वश्च) ३श्रेयः (अतिशयेन प्रशस्यम् इयसुन् श्रेयादेशश्च) ४सुकृतम् (सुष्ठु कृतम्) ५वृषः (वर्षति फलम् कः) ये ५ नाम धर्म के हैं, जिनमें धर्मन् शब्द पुं० न० दोनों हैं, वृषशब्द पुं० है, शेष तीन शब्द नपुंसकलिंग हैं ।

मुद् (मोदनम्, क्विप्) ६प्रीतिः (प्रीयते, क्तिन्) ७प्रमदः (प्रकृष्टो मदो यस्य) हर्षः (हृष्यतीति, घञ्) प्रमोदः (प्रमोदते घञ्) ८आमोदः (आमोदते घञ्) सम्मोदः (सम्यक् मोदते घञ्) आनन्दथुः (आनन्दयते, अथुच्) आनन्दः (आनन्दनम्, घञ्) शर्म (शृणातीति, मनिन्) शातम् (श्यति दुःखम्, तन्) सुखम् (सुखयते, अच्) ये १२ नाम सुख के हैं जिनमें मुत् और प्रीति स्त्रीलिंग हैं, शर्म, शात, सुख नपुंसक हैं शेष ७ शब्द पुंलिंग हैं ।।२४½॥

१०श्वःश्रेयसम् (श्वः आनामि श्रेयोऽत्र अच्,) ११शिवम् (शेतेऽनेन, वन् ह्रस्वश्च) १२भद्रम् (भन्दते कल्याणं करोतीति, रन्) १३कल्याणम् (कल्ये उपसि अण्यते शब्दते घञ्)

---

१. धर्मोऽस्त्री पुण्य आचारे स्वभावोपमयोः क्रतौ । अहिंसोपनिषन्न्याये ना धनुर्यमसोमपे ॥ २. पुण्यं तु सुन्दरे । सुकृते पावने धर्मे । श्रेयो मुक्तौ शुभे धर्मेऽतिप्रशस्ते च वाच्यवत् । ४. सुकृतं तु शुभे पुण्ये क्लीवं सुविहिते त्रिषु । ५. वृषो गव्याखुधर्मयोः । पुंराशिभेदयोः शृङ्ग्यां वासके शुक्लेऽपि च । श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थश्च । इति हैमः ॥ ६. प्रीतिर्योगान्तरे प्रेम्णि स्मरपत्नीमुदोः स्त्रियाम् । ७. प्रमदः संमदे मत्ते स्त्रियामुन्मदयोषिति । ८. आमोदो गन्धहर्षयोः । ९. सुखं शर्मणि नाके च सुखा पुर्यां प्रचेतसः । १०. श्वः श्रेयसं तु कल्याणे परमात्मनि शर्मणि । श्वोवसीयसमपि बोध्यम् । ११. शिवं तु मोक्षे क्षेमे सुखे जले । शिवो योगान्तरे वेदे गुग्गुलौ बालके हरे । पुण्डरीकद्रुमे कीले ॥

१२. भद्रः शिवे खञ्जरीटे वृषभे च कदम्बके । करिजातिविशेषे ना क्लीबं मङ्गलमुस्तयोः ॥ काञ्चने च स्त्रियां रास्नाकृष्णाव्योमनदीषु च । तिथिभेदे प्रसारिण्यां कट्फलानन्तनोरपि । त्रिषु श्रेष्ठे च साधौ च न पुंसि करणान्तरे ॥ भन्दं भद्रं शिवं तथा । इति त्रिकाण्डशेषः । भन्दं कल्याणे सौख्ये च । १३. कल्याणं हेम्नि मङ्गले ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भावुकं भाविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम्।
शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्घतल्लजौ।
प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥
दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः।

---

[१]मंगलम् (मङ्गति सर्पति, अलच्) [२]शुभम् (शोभते इति, कः भावुकम् (भवनशीलम् , उकञ्) [३]भविकम् (भवो भद्राप्तिरत्रास्तीति, ठन्) [४]भव्यम् (भवतीति निपातनात् यत्) [५]कुशलम् (कुत्सितं शलते संवृणातीति, अच्) [६]क्षेमम् (क्षयत्यशुभम् इति, मन्) [७]शस्तम् (शस्यते स्मेति क्तः) ये १२ नाम कल्याणमात्र के हैं जिनमें प्रथम १० नपुंसक हैं, क्षेम शब्द पुं० न० दोनों हैः और शस्तशब्द नपुंसक है।

पाप, पुण्य और सुखादि शस्तएवं शब्द द्रव्यवाची होने पर तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—पापः पुरुषः, पापम् धनम् , पापां स्त्री, शस्तो लोकः, शस्तं द्रव्यं, शस्ता यवागूः आदि ॥ २६ ॥

मतल्लिका (यद्यपि नियतलिङ्गाः, अव्युत्पन्नाश्चेति मतल्लिकादयस्तथापि मतमलतीति, ण्वुल्) मचर्चिका (मं शम्भुं चर्चति अधीते, ण्वुल्) [८]प्रकाण्डम् (प्रकृष्टं काण्डमवसरोऽस्य) [९]उद्घः (उद्घन्तीति उद्+हन्+अप् टिलोपः घत्वं च) तल्लजः (अजति काम्यतीत लजः अच् तद्वल्लजः) ये ५ नाम प्रशस्त वस्तुगत—श्रेष्ठता के हैं, जिनमें प्रथम दो नित्य स्त्रीलिंग हैं और प्रकाण्डशब्द पुं० नपुं० दोनों हैं, उद्घः, तल्लजः शब्द पुंलिङ्ग हैं। ये पाँच शब्द स्वतन्त्र प्रयुक्त नहीं होते। किसी द्रव्यवाचक शब्द के अन्त में रहने से उसकी विशेषता को प्रकट करते हैं, जैसे—प्रशस्तः पुरुषः, पुरुषमतल्लिका, ब्राह्मणमचर्चिका, गोप्रकाण्डम्, मनुष्योद्घः, कुमारी-तल्लजः आदि।

अयः (एति अनेन सुखम् , घः) यह एक पुं० नाम शुभकारक भाग्य का है ॥ २७ ॥

दैवम् (देवादागतम् , अण्) दिष्टम् (दिश्यते उपदिश्यते स्म, क्तः) [१०]भागधेयम् (भाग एव, धेयः) [११]भाग्यम् (भज्यते सेव्यते, ण्यत्) [१२]नियतिः (नियम्यते अनया क्तिन्) [१३]विधिः

---

१. मङ्गलं पुनः। कल्याणे, मङ्गलो भौमे मङ्गला श्वेतदूर्विका। २. शुभो योगे शुभं भद्रे। ३. भवो भद्राप्तिसत्तयोः इत्यजयः। ४. भव्यं शुभे च सत्ये च योग्ये भाविनि तु त्रिषु। कर्मरङ्गतरौ पुंसि स्त्रियां करिकणोमयोः। क्लीबमस्थनि। ५. कुशलं क्षेमपुण्ययोः। पर्याप्तो कुशलोऽभिज्ञे ॥ ६. क्षेमस्तु मङ्गले। लब्धसंरक्षणे मोक्षे क्षेमोमाधनहर्यपि ॥ ७. शस्तं क्षेमे प्रशस्ते च। ८. प्रकाण्डो विटपे शस्ते मूलस्कन्धान्तरे तरोः। इति विश्वः। अस्त्री प्रकाण्डो विटपे तरुस्कन्धप्रशस्तयोः। ९. उद्घो हस्तपुटे वह्नौ श्लाघायां देहजागिले। इति हैमः। १०. भाग्यैकदेशयोर्भागः। इति रुद्रः। भागधेयं मतं भाग्ये भागप्रत्यययोः पुमान्। ११. भाग्यं कर्म शुभाशुभम्। १२. नियतिर्नियमे दैवे। इति विश्वः। १३. विधिर्ब्रह्मविधानयोः। विधिवाक्ये च दैवे च प्रकारे कालकल्पयोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥
क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम्।
विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

जननस्य षट् नामानि

जनुर्जनन-जन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः।

(विधीयते अनेन, किः) ये ६ नाम भाग्य (तकदीर) के हैं जिनमें प्रथम ४ नपुंसक हैं, नियति शब्द स्त्रीलिंग और विधिशब्द पुंलिंग है।

हेतुः (हिनोति व्याप्नोतीति, तुन्) [१]कारणम् (कार्यतेऽनेन, ल्युट्) [२]बीजम् (विशेषेण द्यायते, डः) ये तीन नाम कारण के हैं, जिनमें हेतुशब्द पुंलिंग है, शेष दो नपुंसक हैं।

[३]निदानम् (नितरां दीयतेऽनेन, ल्युट्) आदिकारणम् (आदिः मुख्यं कारणम्) ये दो नपुं० नाम प्रधान कारण के हैं ॥ २८ ॥

[४]क्षेत्रज्ञः (क्षीयसे इति क्षेत्रं = शरीरं तत् जानातीति, कः) [५]आत्मा (अततीति, मनिण्) [६]पुरुषः (पुरति अग्रे गच्छतीति, कुषन्) ये तीन पुं० नाम आत्मा के हैं।

[७]प्रधानम् (प्रधत्तेऽत्र सर्वम्, ल्युट्) [८]प्रकृतिः (प्रकृष्टा कृतिः कार्यं यस्याः, क्तिच्) ये दो नाम माया के हैं जिनमें प्रथम नपुं० दूसरा स्त्रीलिंग है।

कालकृत धर्म (यौवनादि) विशेषको अवस्था (अवस्थानम् अव+स्था+अङ्) कहते हैं।

[९]सत्त्वम् (सतो भावः त्वः) [१०]रजः (रञ्जयतीति, असुन्) तमः (ताम्यति ग्लानिं प्राप्नोतीति, असुन्) ये तीनों नपुंसकशब्द सत्वादि तीनों गुणों के एक एक नाम हैं ॥ २९ ॥

जनुः (जननं प्रादुर्भवनम्, उसिः) [११]जननम् (जायते ल्युटि कृते) जन्म (मानिनि सति, मन्यदन्तः पुंलिङ्ग) जनिः (इणि कृते, वृद्धिनिषेधः) उत्पत्तिः (उत्पदनम् क्तिनि) उद्भवः (उद्भवनम् अप्) ये ६ नाम जन्म के हैं जिनमें प्रथम तीन नपुंसक, जनिः, उत्पत्तिः स्त्रीलिंग और उद्भव शब्द पुंलिंग हैं।

---

१. कारणं घातने हेतौ कारणे, कारणा पुनः। यातना कार्मणं मन्त्रादियोगे कर्मकारके। इति हैमः। २. बीजं तु रेतसि स्यादाधाने च तत्वे च हेतावङ्कुरकारणे। इति हैमः। ३. निदाने कारणे शुद्धौ तपसः फलयाचने। वत्सदाम्न्यवसाने च।

४. क्षेत्रज्ञात्वात्मनिपुणौ। इति हैमः। ५. आत्मा चित्ते धृतौ यत्ने धिषणायां कलेवरे। परमात्मनि जीवेऽर्के हुताशनसमीरयोः॥ स्वभावे। ६. पुरुषस्त्वात्मनि नरे पुंनागे च। इति हैमः॥ ७. प्रधानं प्रकृतौ बुद्धावुत्तमे परमात्मनि। महामात्रे। इति हैमः। ८. प्रकृतिर्गुणसाम्ये स्यादमात्यादिस्वभावयोः। यानौ लिङ्गे पौरवर्गे। ९. सत्वं द्रव्ये गुणे चित्ते व्यवसायस्वभावयोः। पिशाचादावात्मभावे बले प्राणेषु जन्तुषु। १०. रजो रेणुपरागयोः। स्त्रीपुष्पे गुणभेदे च। पुष्पे वेशे गुणे चैव रजोऽयं रजसा सह। इत्युत्पलिनी। रजोऽयं रजसा सार्धं स्त्रीपुष्पगुणधूलिषु। इत्यजयः॥ ११. जननी तु दयामात्रोर्जननं वंशजन्मनोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राणिनः षट् नामानि

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्य व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

मनसः सप्त नामानि

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ।

५. अथ धीवर्गः

बुद्धेश्चतुर्दश नामानि

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।

प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥

प्राणी (प्राणाः सन्त्यस्येति, इनिः) १चेतनः (चेतयते ल्युः) जन्मी (जन्म अस्यास्तीति, इनिः) जन्तुः (जायते इति तुन्) २जन्युः (जायते, युच्) शरीरी (शरीरमस्यास्तीति, इनिः) ये ६ पुं० नाम प्राणी के हैं ॥ ३० ॥

३जातिः (जायते, क्तिच्, आत्वम्) ४जातम् (क्तप्रत्यये) सामान्यम् समानानां भावः ष्यञ्) ये तीन नाम जाति (गोत्व, पशुत्वादि) के हैं, जिनमें जाति स्त्री०, शेष नपुंसक हैं।

व्यक्तिः (व्यनक्तीति क्तिच्) पृथगात्मता (पृथक आत्मा यस्य तस्य भावः, तल्) ये दो स्त्री० नाम व्यक्ति (राम, श्याम) के हैं।

चित्तम् (चेतयते स्म क्तः, इण्निषेधः) चेतः (चेततीति, असुन्) ५हृदयम् (ह्रियते विषयैः, कयन्, दुगागमश्च) ६स्वान्तम् (स्वन्यते शब्दयते स्म निपातनात्) ७हृत् (हरतीति क्विप् तुक्) ८मानसम् (मन्यतेऽनेन, असुन् अण् च) ९मनः (अणभावे) ये ७ नपुंसक नाम मन के हैं ॥ ३१ ॥ इतिकालवर्गः ॥

बुद्धिः (बुद्ध्यतेऽनया, क्तिन्) मनीषा (ईषते अनया इति अः, मनसः ईषा, पररूपम्) धिषणा (धृष्णुवन्त्यनयेति युच्) १०धीः (ध्यायत्यनया क्विप् दीर्घः) ११प्रज्ञा (प्रज्ञायतेऽनया, अङ्) शेमुषी (शयं मोहं मुष्णातीति, कः ङीष् च) १२मतिः, (मन्यतेऽनया क्तिन्) १३प्रेक्षा

---

१. चेतनः स्यात्सहृदयप्राणिनोश्चेतना तु धीः । २. जन्युः स्याज्जन्तुमात्रे च पावके परमेष्ठिनि । ३. जातिः सामान्यगोत्रयोः । मालत्यामामलक्यां च चुल्यां कम्पिल्लजन्मनोः ॥ जातीफले छन्दसि च । इति हैमः ॥ ४. जातं व्यक्तौघजन्मसु । क्लीब, त्रिलिङ्गमुत्पन्ने ॥ ५. हृदयं वक्षसि स्वान्ते वुक्कायाम् । ६. स्वान्तं चेतसि गह्वरे । ७. हृत् क्लीबं वुक्काचित्तयोः । ८. मानसं स्वान्तसरसोः । ९. मनश्चित्ते मनीषायाम् ॥ इति कालवर्गः ॥

१०. धीर्ज्ञाने ज्ञानभेदेऽपि । ११. प्रज्ञस्तु पण्डिते वाच्यलिङ्गो, बुद्धौ तु योषिति प्रज्ञा श्रद्धा धरा ज्ञप्तिः पण्डा संवेदनं विदा । इति शब्दार्णवात् ॥ १२. मतिर्बुद्धीच्छयोः । १३. प्रेक्षाधीरीक्षणं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धीर्धारणावती मेधा सङ्कल्पः कर्म मानसम्।
अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च॥ प्र०॥
चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा॥ २॥
विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते॥ प्र०॥
अध्याहारस्तर्क ऊहो, विचिकित्सा तु संशयः।
संदेहद्वापरौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ॥ ३॥

(प्रकृष्टमीक्षणम्, अः टाप्) [१]उपलब्धिः (उपलभ्यतेऽनया, क्तिन्) चित् (चेततीति, क्विप्) [२]संवित् (सम्यक् वेत्त्यनया, क्विप्) प्रतिपत् (प्रतिपद्यतेऽनया, क्विप्) ज्ञप्तिः (ज्ञपनम्) [३]चेतना (चेतनम्, युच्), ये १४ स्त्री० नाम बुद्धि के हैं॥ १॥ धारणा शक्ति से युक्त बुद्धि का [४]मेधा (मेधते संगच्छति सर्वमस्याम्, अः) एक स्त्री० नाम हैं। मानसिक कर्म का सङ्कल्पः (संकल्पनम्, घञ्) एक पुं० नाम है॥ १॥

अवधानम् (अवधीयते, ल्युट्) समाधानम् (समाधीयते) प्रणिधानम् (प्रणिधीयते) ये ३ नपुंसक नाम समाधान (किसी शंका का उत्तर) के हैं॥ प्र०॥

[५]चित्ताभोगः (चित्तस्य मनसः आभोगः एकाग्रता, घञ्) मनस्कारः (मनसः कारः व्यापारविशेषः, घञ्, सत्वम्) ये दो पुं० नाम सुखादि में संलग्न मन के हैं। [६]चर्चा (चर्चनम् अञ्,) [७]संख्या (संख्यानम्, अङ्) विचारणा (विचारणम्, युच्) ये तीन स्त्री० नाम विचार करने के हैं॥ २॥

विमर्शः (विमृश्यतेऽनेन घञ्) भावना (भाव्यतेऽनया, ल्युट्) वासना (वास्यतेऽनया) ये तीन नाम वासना के हैं जिनमें प्रथम पुल्लिङ्ग शेष दो स्त्रीलिंग है। अध्याहारः (अध्याहरणम्, घञ्) [८]तर्कः (तर्कणम्, =अपूर्वोत्प्रेक्षणम् घञ्) ऊहः (ऊहनम्, घञ्। वितर्कणमित्यर्थः) ये तीन पुं० नाम तर्क के हैं।

विचिकित्सा (विचिकित्सते, सन्नतात् अः) संशयः (सम्यक् शेते अच्) संदेहः (संदेहनम् घञ्) [९]द्वापरः (द्वौ परौ प्रकारौ यस्य पृषोदरादित्वादात्वम्) ये ४ नाम सन्देह के हैं जिनमें प्रथम स्त्रीलिंग, शेष तीन पुं० हैं।

निर्णयः (निर्णयनम्, अच्) निश्चयः (निश्चयनम्, अप्) ये दो पुं० नाम निश्चय के हैं॥ ३॥

नृत्तम। इति हैमः॥ १. उपलब्धिर्मतौ प्राप्तौ। २. संवित् संभाषणे ज्ञाने संग्रामे नाम्नि तोषणे। क्रियाकारे प्रतिज्ञायां संकेताचारयोरपि। ३. चेतना संविदि स्त्रियाम्। वाच्यवत्प्राणयुक्ते॥ ४. मेधा बुद्धौ, क्रतौ पुमान्। ५. आभोगो वारुणच्छत्रे पूर्णतायत्नयोरपि। ६. चर्चा स्याच्चर्यमुण्डायां चिन्तास्थासकयोरपि। ७. संख्यैकादौ विचारे च। ८. तर्को वितर्के काङ्क्षायामूह्कर्मविशेषयोः। इति हैमः। ९. द्वापरं संशये युगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम्।
समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥ ४ ॥

अङ्गीकारस्य दश नामानि

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः।
अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥
मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः।

मोक्षस्याष्टौ नामानि

मुक्तिः कैवल्य-निर्वाण-श्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मिथ्यादृष्टिः (मिथ्याविषयीणी दृष्टिः) नास्तिकता (नास्तिकस्य भावः) ये दो स्त्री० नाम नास्तिकपना के हैं। व्यापादः (व्यापादनम्, घञ्) द्रोहचिन्तनम् (द्रोहस्य चिन्तनम्, ल्युट्) ये दो नाम किसी से द्वेष करने का विचार करने के हैं जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय नपुंसक हैं।

सिद्धान्तः (सिद्धो अन्तो निश्चयो यस्मिन्) राद्धान्तः (राद्धः=सिद्धः अन्तन्यस्मिन्) ये दो पुं० नाम सिद्धान्त (किसी विषय को हल करने का नाम सिद्धान्त है) के हैं।

[1]भ्रान्तिः (भ्रमणम्=चलनम् क्तिन्, दीर्घः) मिथ्यामतिः (मिथ्या चासौ मतिश्च) [2]भ्रमः (भ्रमणम्, घञ्) ये तीन नाम भ्रम (अयथार्थ ज्ञान जैसे—सितुही में चान्दी का ज्ञान) के हैं, जिनमें प्रथम दो स्त्री० तृतीय पुंलिंग हैं ॥ ४ ॥

संवित् (संवेदनम्, क्विप्) आगूः। आगमनमागूः डूः वधूवत्) प्रतिज्ञानम् (प्रतिजानीते, ल्युट्) नियमः (नियम्यन्ते विषया अच्, अप् वा) [3]आश्रवः (आश्रवणम्, अप्) संश्रवः (संश्रवणम्, अप्) अङ्गीकारः (अङ्गीकरणम्, घञ्) [4]अभ्युपगमः (अभ्युपगमनम्, अप्) प्रतिश्रवः (प्रतिश्रवणम्, अप्) [5]समाधिः (समाधानम्, किः) ये १० नाम स्वीकार करने के हैं जिनमें 'संवित् स्त्री० 'प्रतिज्ञानम् नपुं० शेष ८ पुं० हैं ॥ ५ ॥

मोक्षोपयोगी बुद्धिका—ज्ञानम् (ज्ञायतेऽनेन) यह एक नपुं० नाम है। कारीगरी या शास्त्र विषयक बुद्धि का—[6]विज्ञानम्, यह एक नपुं० नाम है [7]मुक्तिः (मोचनम्) कैवल्यम् (केवलस्य भावः, ष्यञ्) [8]निर्वाणम् (निर्वान्त्यत्र क्तः, नत्वम्) [9]श्रेयः (अतिशयेन प्रशस्यम्)

---

१. भ्रान्तिरनवस्थितौ। मिथ्यामतौ च भ्रमणे। २. भ्रमोऽम्बुनिर्गमे भ्रान्तौ कुन्दभ्रमणयोरपि। ३. आश्रवोऽङ्गीकृतौ क्लेशे नान्यवद्वचनस्थिते। ४. अभ्युपगमस्तु पुंसि स्वीकारे निकटगमने च ॥ ५. समाधिर्ना समर्थने। ध्याने वैरस्यनियमे काव्यस्य च गुणान्तरे। ६. विज्ञानं कार्मणे ज्ञाने। इति हैमः। मुकुटस्तु—'मोक्ष इति निमित्तसप्तमी। मोक्षनिमित्तं शिल्पशास्त्रयोर्धीर्ज्ञानमुच्यते। अन्यनिमित्तं या तयोर्धीः सा विज्ञानम्' इति व्याख्यात्। ७. मुक्तिर्मोचनमोक्षयोः। इति हैमः। ८. निर्वाण मोक्षनिर्वृत्योर्विधाने करिमज्जने। इति हैमः। ९. श्रेयो मुक्तौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याऽहम्मतिः स्त्रियाम् ।
रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।
कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

[1]निःश्रेयसम् (नितरां श्रेयः) [2]अमृतम् (अविद्यमानं मृतम् मरणम् यत्र) [3]मोक्षः (मुच्यते सर्वकर्मभ्यो अत्र, घञ्) [4]अपवर्गः (अपवर्जनम्' घञ्) ये आठ मोक्ष के नाम हैं, जिनमें मुक्तिशब्द स्त्री० कैवल्यादि ५ नपुंसक और शेष दो पुं० हैं।

अज्ञानम् (ज्ञानविरुद्धम्) अविद्या (वेत्ति अनया इति विद्या, क्यप्, तद्विरुद्धम्), अहंमति' (अहंप्रधानम् मतिः) ये तीन नाम अज्ञान के हैं जिनमें प्र० नपुंसक शेष दो स्त्री० हैं।

[5]रूपम् (रोपयति विमोहयतीति, अच् दीर्घः) [6]शब्दः (शप्यते आक्रुश्यते इति दन्) [7]गन्धः (गन्धयति अर्दयति, अच्) [8]रसः (रस्यते आस्वाद्यते अच्) [9]स्पर्शः (स्पृश्यते, घञ्,) ये ५ नाम नेत्रादि ५ इन्द्रियों के विषयों (अमी विसिन्वन्ति=निबध्नन्ति इन्द्रियाणि इति विषयाः) के एक एक है, जिसमें' रूपम् शब्द नपुंसक है शेष ४ पुं० हैं। इन पाँचों के पुं० ३ नाम हैं जैसे—[10]विषयाः, गोचराः, इन्द्रियार्थाः ॥ ७ ॥

हृषीकम (हृष्यतेऽनेन इति ईकन्) [11]विषयी (विषयोऽस्यास्तीति, इनिः) [12]इन्द्रियम् (इन्द्रस्येदम् घच्), ये ३ नाम इन्द्रिय के हैं, जिनमें हृषीकम्, इन्द्रियम् नपुंसक हैं और विषयिन् शब्द पुंलिग नपुं० दोनों है।

कर्मेन्द्रिय (कर्मसाधकमिन्द्रियम्) [13]पायुः (पायति शोषयतीति, अण्, युक् च=गुदा

शुभे धर्मेऽतिप्रशस्ते तु वाच्यवत् ।

१. निःश्रेयसं तु कल्याणमोक्षयोः शङ्करे पुमान्। २. अमृतं यज्ञशेषे स्यात्पीयूषे सलिले घृते। अयाचित्ते च मोक्षे च ना धन्वन्तरिदेवयोः। ३. मोक्षो निःश्रेयसे वृक्षविशेषे मोचने मृतौ। इति हैमः। ४. अपवर्गस्त्यागमोक्षयोः। क्रियावसाने साकल्ये। इति हैमः। ५. रूपं तु श्लोकशब्दयोः। पशावाकाशे सौन्दर्ये, भाणके नाटकादिके। ग्रन्थावृत्तौ स्वभावे च। इति हैमः। ६. शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये रवे श्रवणे ध्वनौ। इति हैमः। ७. गन्धः संबन्धलेशयोः। गन्धकामोदवर्गेषु। इति हैमः। ८. रसो गन्धरसे जले। शृङ्गारादौ विषे वीर्ये तिक्तादौ द्रवरागयोः। देहधातुप्रभेदे च पारदस्वादयोःपुमान्। इति हैमः। ९. स्पर्शो वर्गाक्षरे दाने स्पर्शने स्पर्शके रुजि। इति हैमः। १०. विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र गोचरदेशयोः शब्दादौ जनपदे च। इति हैमः। ११. विषयी विषयासक्ते वाच्यवत्, क्लीबमिन्द्रिये। पुंसि स्यान्नृपतौ कामदेवे। वैषयिकेऽपि च। १२. इन्द्रियं तु चक्षुरादिषु रेतसि। इति हैमः। १३. पायूपस्थे पाणिपादौ वाक्चेतीन्द्रियसंग्रहः। उत्सर्गानन्दनादानगत्यालापाश्च तत्क्रियाः। इति कामन्दकीये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

षड्रसनामानि

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ।
तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥
विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।
आमोदः सोऽतिनिर्हारी वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥

आदि पद से भग, लिंग, हाथ, पैर और नाक का संग्रह है) कर्मेन्द्रियों का यह एक नपुंसक नाम है । १धीन्द्रियम् (धी साधनमिन्द्रियम्) यह एक ज्ञानेन्द्रियोंका नपुंसक नाम है ॥ ८ ॥

२तुवरः (तुर्वति हिनस्ति रोगानिति ष्वरच्) ३कषायः (कषति कण्ठम् , आयः) ये दो नाम कषाय रस के हैं, जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय पुं० नपुं० दोनों है ।

४मधुरः (मधुः माधुर्य्यमस्यास्तीति रः) यह एक पुं० नाम मधुररस का हैं । ५लवणः (लुनाति जाड्यम् , ल्युट्) यह एक पु० नाम खारे रस का है । ६कटुः (कटति आवृणोति मुखम् , उः स्त्रीत्वे ङीष) यह एक पु० नाम तीते रस का है । ७तिक्तः (तेजयति स्मेति, क्तः) यह एक पुं० नाम कडुवे रस का हैं । ८अम्लः (भोक्तृभिः अम्म्यते शब्द्यते, क्लः, अमति रुजति करुचिम् क्लः) रसः (रस्यते आस्वाद्यते, घञ्) ये५ पुं० नाम रस के है, ये तुवरादि छवों यदि द्रव्यबाधक होते हैं, तो तीनों लिङ्गों में प्रयोग किये जाते हैं । जैसे—मधुरो रसः, मधुरं जलम् , मधुरा आपः, षट् रस से इन्हीं कषाय आदि छः रसों का बोध होता है ॥ ९ ॥

विमर्दोत्थे जनमनोहरे ९परिमलः (मल्यते, घञ् मलते धारयति जनमनांसि) यह एक पुंलिङ्ग नाम संभोगादिमे माला आदि के रगड़से उत्पन्न होने वाला मनोहर गन्ध का है ।

अतिनिर्हारी=अत्यन्तमनोहरः सः परमिलः १०आमोदः (आ समन्तान्मोदयति, ण्यन्तात् अच्) वही, परिमल यदि अत्यन्त मनोहर हो तो आमोद कहा जाता है । यह एक पुं० नाम सुगन्धि का है ।

---

१. मनः कर्णौ तथा नेत्रं रसना च त्वचा सह । नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥ २. तुवरस्तु कषाये स्यात्काक्ष्याढक्योस्तुवर्यपि । नरेऽश्मश्रुणि शृंगाभ्यां रहिते गवितू परः । काले प्राप्ते कषाये च रसे पुंभ्यञ्जनेऽच्युते । इत्युत्पलिनी ॥ नापि कषायस्तुवरः । इति बोपालितः । पुंसि कषायस्तुवरम् । इतिक्लीबंकाण्डे रत्नकोषः । ३. कषायः सुरभौ रसे । रागवस्तुनि निर्यासे क्रोधादिषु विलेपने । इति हैमः ॥ कुवरस्तु कषायोऽस्त्री' इत्येके पठन्ति । ४. मधुरं विषे मधुरस्तु प्रिये स्वादौ रसे च रसवत्यपि । मधुरा मथुरापुर्यां यष्टीमेदामधूलिषु । मधुकुक्कुटिकायां च मिश्रेयाशतपुष्पयोः । इति हैमः । ५. लवणो राक्षसे रसे । अस्थिभेदे लवणा त्विट् । इति हैमः । ६. कट्वकार्ये मत्सरे च दूषणे च कटूरसे । तिक्ते प्रियङ्गुसुरभौ केटुका राजिका स्वपि । इति हैमः ॥ ७. तिक्तस्तु सुरभौ रसे । तिक्ता तु कटुरोहिण्यां तिक्तं पर्पटकौषधे । इति हैमः । ८. अम्लो रसेऽम्ल वेतसे । अम्लो चाङ्गेर्याम् । इति हैमः । ९. स्यात्परिमलो विमर्दातिमनोहरगन्धयोश्चापि । सुरतोपमर्दविकसच्छरीरसङ्गादिसौरभे पुंसि १०. आमोदो गन्धहर्षयोः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः।
इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः॥ ११॥
पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्रं स्यादामगन्धि यत्।

श्वेतवर्णस्य त्रयोदश नामानि

शुक्ल शुभ्र शुचि-श्वेत-विशद-श्येत पाण्डराः॥ १२॥
अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः।

इसके आगे—'गुणे शुक्लादयः पुंसि' इसके पूर्व वाच्यलिङ्गता का अधिकार है। अर्थात् यहाँ से गुण शब्द तक जो भी शब्द आयेंगे उनका तीनों लिङ्गों में प्रयोग होता हैं॥ १०॥

समाकर्षी (अवश्यं मनः समाकर्षतीति' आवश्यके णिनिः) निर्हारी (निर्हरणशीलः, णिनिः) ये दो त्रिलिंग नाम दूर तक जानेवाले सुगन्ध के हैं।

सुरभिः (सुष्ठु रभन्तेऽत्र, इनिः) घ्राणतर्पणः, (घ्राणं तर्पयति, ल्युः) [1]इष्टगन्धः (इष्टो गन्धो यस्य) [2]सुगन्धिः (सुष्ठु गन्धोऽस्य, अन्त इकारः) ये ४ त्रिलिंग नाम सुगन्धित पदार्थ के हैं।

आमोदी (आमोदयति तच्छीलः, णिनिः) मुखवासनः (मुखं वासयति, ल्युः) ये दो त्रिलिंग नाम मुख को सुगन्धित करनेवाली गोलियों के हैं॥ ११॥

पूतिगन्धः (पूतिः दुष्टः गन्धोऽस्य, इकारः) दुर्गन्धः (इकाराभावः, गन्धस्येदितिसूत्रे दुरोऽपाठात्) ये दो त्रिलिंग नाम दुर्गन्ध के हैं।

विस्र (विस्यतीति, रक्) आमगन्धिः (आमोऽपक्वो मलः तस्येव गन्धो यस्य, इत्) ये दो त्रिलिंग नाम कच्चे मांस आदि के गन्ध के हैं।

[3]शुक्लः (शोकति गच्छति मनोऽस्मिन् निपा०) [4]शुभ्रः (शोभते दीप्यते, रक्) शुचिः (शोचतीति इक्) [5]श्वेतः (श्वेतते' घञ्) [6]विशदः (विशीयते अच्) श्येतः (श्यायते, गम्यते इतन्) पाण्डरः (पण्डते मनोऽस्मिन्, अरः दीर्घश्च) [7]अवदातः (अवदायतेस्म, शुद्ध्यते स्मेति क्तः) [8]सितः (सिनोति बध्नाति मनः, कः) [9]गौरः (गुरते उद्युङ्क्ते मनोऽस्मिन् निपातः)

---

१. इष्टगन्धः सुगन्धौ स्यात्त्रिषु क्लीबं तु वालुके। २. सुगन्धिः स्यादिष्टगन्धे त्रिषु क्षीरे नपुंसकम्।

शब्दार्णवे तु--कस्तूरिकायामामोदः कर्पूरे मुखवासनः। बकुले स्यात्परिमलश्चम्पके सुरभिस्तथा॥ इति॥

३. शुक्लो योगान्तरे सिते। नपुंसकं तु रजते। ४. शुभ्रं दीप्तेऽभ्रके सिते। ५. श्वेतो द्वीपाद्रिभेदयोः। श्वेता वराटिकाकाष्ठपाटलाराङ्खिनीषु च। क्लीबं रूप्येऽन्त्रयच्छुक्ले। ६. विशदः पाण्डरे व्यक्ते। इति हैमः। ७. अवदातं तु विमले मनोज्ञे सितपीतयोः। इति हैमः॥ ८. सितस्त्ववसिते बद्धे वर्णे सिता तु शर्करा। इति हैमः। ९. गौरः श्वेतेऽरुणे पीते विशुद्धेचन्द्रमस्यपि। विशदे गौरं तु श्वेतसर्षपे। इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥
कृष्णे नीलासित-श्याम काल-श्यामल-मेचकाः ।

वलक्षः (वलतीति वल् , क्विप् अक्षन्त्यस्मात् घञ् , वल चासौ अशश्चेति वलक्षः । अवलक्ष्यते घञ् वद्रि भगुरिति अलापः) [1]धवलः (धावति मनोऽत्र कलच्) [2]अर्जुनः (अर्ज्यते, उनन्) ये १३ त्रिलिंगनाम श्वेतवर्ण के हैं ॥ १२॥ ॥

[3]हरिणः (परति मनः, इनच्) [4]पाण्डुरः (पाण्डुत्वमस्यास्तीति, रः) [5]पाण्डुः (पण्ड्यते ज्ञायते कुः) ये तीन त्रिलिंग नाम पोले रङ्ग से मिले श्वेतवर्ण के हैं।

[7]धूसरः (धूनोति चेतः, वसरः) यह एक त्रिलिंग नाम धूसर (ईषत्स्वच्छ) वर्ण का है ॥ १३ ॥

[8]कृष्णः (कर्षति मनः, नक्) [9]नीलः (नीलतीति, कः) असितः (सितेतरः) [10]श्यामः (श्यायते मनोऽस्माद्, मक्) [11]कालः (कलयते, घञ्) [12]श्यामलः (श्यामत्वमस्यास्तीति, लच्) [13]मेचकः (मचति वर्णान्तरेण मिश्रीभवति, वुन् इन्चोपधायाः गुणे च) ये ७ त्रि० नाम कृष्णवर्ण के हैं।

---

१. अथ धवलो महोक्षे सुन्दरे सिते। धवली गौः। इति हैमः। २. अर्जुनः ककुभे पार्थे कार्तवीर्यमयूरयोः मातुरेकसुतेऽपि स्याद्धवले पुनरन्यवत् ॥ नपुंसकं तृणे नेत्ररोगे स्यादर्जुनी गवि । शब्दार्णवे तु-श्वेतस्तु समपीतोऽसौ रक्तेतरजपारुचिः । वलक्षस्तु सितवः कदलीकुमसुमोपमः । अर्जुनस्तु सितः कृष्णवेशवान्कुमुदच्छविः । इत्युक्तम् । शुद्धशब्दोऽप्यत्र । तथा च धरणिः । शुद्ध शुक्ले च पूते च केवले च प्रयुच्यते इति ।

३. हरिणौ पाण्डुसारङ्गौ हरिणी चारुयोषिति । सुवर्णप्रतिमायां च हरितावृत्तभेदयोः । इति हैमः। ४. पाण्डुरी वर्णतद्वतोः । पाण्डुरं तु मरुबके । इति हैमः । ५. पाण्डुस्तु पीतभागार्धः केतकीधूलिसंनिभः । इति शब्दार्णवः । पाण्डुः कुन्तीपतौ सिते । इति हैमः ।

७. धूसरी किंनरीभेदे, ना खरे त्रिषु पाण्डुरे। धूसरस्तु सितः पीतलेशवान्बकुलच्छविः । इति शब्दार्णवः ।

८. कृष्णः काके पिके वर्णे विष्णौ व्यासेऽर्जुने कलौ । कृष्णा तु नील्यां द्रौपद्यां पिप्पली-द्राक्षयोरपि । कृष्णं तु मरिचे लोहे । इति हैमः । ९. नीलो वर्णे मणौ शैले निधिवानरभेदयोः । नील्योषध्यां लाञ्छने च । इति हैमः । १०. श्यामोऽम्बुदे शितौ । हरिते प्रयागवटे कोकिले वृद्धदारुके । श्यामं सैन्धवे मरिचे श्यामा सोमलतानिशोः । इति हैमः । ११. कालः पुनः कृष्णवर्णे महाकालकृतान्तयोः । मरणानेहसोः काली कालिकाक्षीरकीटयोः । मातृभेदोमयोर्नव्यनेघौधपरि-वादयोः ॥ काला कृष्णत्रिवन्नील्योर्जुङ्गयाम् । इति हैमः । १२. श्यामलः पिप्पले श्यामे । इति हैमः । १३. मेचकः श्यामले कृष्णे तिमिरे बर्हिचन्द्रके । इति हैमः ॥ मेचकः कृष्णनीलः स्यादतसीपुष्प-संनिभः । इति शब्दार्णवः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥
रोहितो लोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः।
अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥
श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते।
कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

[1]पीतः (पयते वर्णान्तरम्, क्तः) गौरः (गुरुते मनोयस्मिन्) हरद्राभ; (हरिद्रेव आभा दीप्तिरस्या) ये तीन त्रि० नाम पीतवर्ण के हैं।

[2]पालाशः (पलाशस्य इदम्, अण्) [3]हरितः (हरतीति, इतन्) [4]हरित् (इति प्रत्यये) ये तीन त्रि० नाम हरित वर्ण के हैं ॥ १४ ॥

रोहितः (रोहति प्रादुर्भवति, इतन्। पक्षे रस्य लः [5]लोहितः) [6]रक्तः (रजति स्म, क्तः) ये तीन त्रि० नाम लालवर्ण के हैं।

[7]शोणः (शोणयति, अच्) कोकनदच्छविः (कोकनदस्येव छविर्यस्य) ये त्रि० दो नाम कमल के समान सुर्ख लालवर्ण के हैं।

अव्यक्तरागः (अव्यक्तो रागो यस्य। ईषल्लोहितः) [8]अरुणः (ऋच्छतीति, उरन्) ये दो त्रि० नाम गुलाबी रङ्ग के हैं।

श्वेतरक्तः (श्वेतेन सहितो रक्त।) [9]पाटलः (पाटयति कलच्) ये दो त्रि० नाम श्वेत मिश्रित लाल रङ्ग के है ॥ १५ ॥

श्यावः (श्यायते वः,) [10]कपिशः (कपिर्मर्कटः तद्वम् वर्णविशेषोऽस्यास्तीति, शः) ये दो त्रि० नाम फीके रङ्ग के हैं।

धूम्रः (धूमं राति ददातीति, कः पृषो० धूमलः (धूमं लाति ददातीति, कः) कृष्ण-लोहितः (कृष्णमिश्रो लोहितः) ये तीन त्रि० नाम काले रङ्ग मिश्रित लाल रङ्ग के हैं।

[11]कडारः (गडति सिंचतीति आरन्, कडादेशश्च) [12]कपिलः (कवते' इलच्, पश्च)

---

१. पीतं पाने हरिद्रायां स्त्रियां, गौरेऽभिधेयवत्। २. पत्रं पलाशं ना रक्षःशठीहरित-किंशुके। इति रुदादध्रस्वादिरपि। पलाशः किंशुके शठ्याम् हरिद्वर्णो राक्षस पलाशं छदने स्मृतम्। इति हैमः। ३. हरिता स्त्री च दूर्वायां हरिद्वर्णयुतेऽन्यवत्। ४. हरिद्दिशि स्त्रियां पुंसि हयवर्ण-विशेषयोः। अस्त्रियां स्यात्तृणे च। ५. लोहितो मङ्गले नदे। वर्णभेदे लोहितं तु कुंकुमे रक्त-चन्दने। गोशीर्षे रुधिरे युद्धे। इति हैमः॥ ६. रक्त नील्यादिरञ्जिते। कुंकुमेऽसृज्यनुरक्तेप्राचीन-मलकेऽरुणे। इति हैमः। ७. शोणः कृशानौ स्योनाके लोहिताश्वे नदे पुमान्। त्रिपु कोकन-दच्छाये। ८. अरुणः कृष्णलोहितः। इत्यरमाला। अरुणोऽव्यक्तरागेऽर्के संध्यारागेऽर्कसारथौ। निःशब्दे कपिले कुष्ठभेदे ना, गुणिनि त्रिपु। अरुणाऽतिविषाश्यामामजिष्ठात्रिवृत्तासु च। ९. पाटलं नु कुंकुमश्वेतरक्तयोः। पाटलः स्यादाशुव्रीहौ पाटला पाटलिद्रुमे। इति हैमः। १०. कपि-शस्त्रिषु श्यामे, स्त्रीमाधव्यां सिह्लके पुमान्। ११. कडारः पिङ्गले दासे। १२. पुण्डरीककरिण्यां तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्रं किर्मीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।
गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्ग

६—अथ शब्दादिवर्गः

सरस्वत्याः सप्तनामानि

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।
व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

१पिङ्गः (पिञ्जयति, अच् , कुत्वम्) पिशङ्गः (पेशति, अङ्गच्) २कद्रुः (कन्दति आह्वयतीति, निपा०) ३पिङ्गलः (पिञ्जयति, कलच् कुत्वम्) ये ३ त्रि० नाम पीले (कपिल) रङ्ग के है ॥ १६ ॥

४चित्रम् (चित्तं जायते, कः) ५किर्मीरः (कीर्यते, ईरन् , मुडागमश्च) ६कल्माषः (कल्यतीति क्विप् , कल् , माषयति अभिभवति वर्णान् माषः, कल् कासौ माषश्च) शवलः (शपतीति, कलः, वत्वं च) ७एतः (एति वर्णान् ; तन्) ८कर्बुर (कर्णतीति, कुरच्) ये ६ त्रि० नाम चितकबरे रंग के हैं । रामाश्रमीकार के मत में चित्र शब्द नपुंसक है । शुक्लादि सब शब्द गुणवाचक होने पर पुंलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं और द्रव्य वाचक होने पर तीनों लिङ्गों में प्रयोग किये जाते हैं । जैसे—शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम् , शुक्लः पटः ॥ १७ ॥ इति धीवर्गः ॥

९ब्राह्मी (ब्रह्मण ईयम् अण् टिलोपे, ङीप्) १०भारती (भरतस्येयम् , अण् ङीप्) भाषा (भाष्यते, अः) ११गीः (गृणन्त्येताम् , क्विप्) १२वाक् (उच्यते, क्विप् , दीर्घः सम्प्रसारणा-

---

शिंशिपागोविशेषयोः । स्त्री रेणुकायां कपिला वर्णे ना कुक्कुरे मुनौ । अनले वासुदेवे च कापलः परिकीर्तितः ॥ १. पिङ्गा गोरोचनाहिङ्गुनाडिकाचण्डिकासु च । पिङ्गी शम्यां पिशङ्गेना वालके तु नपुंसकम् । २. कद्रुस्त्रिषु स्वर्णपिङ्गे नागानां मातरि स्त्रियाम् । ३. पिङ्गलः कपिले बभ्रौ रुद्रेऽर्कपारिपार्श्विके । कपौ मुनौ निधिभेदे पिङ्गला कुमुदस्त्रियाम् ॥ शब्दार्णवे तु—सितपीतहरिद्रक्तः कडारस्तृणवह्निवत् । अयं तूद्रिक्तपीताङ्गः कपिलो गोविभूषणः । हरितांशेऽधिकेऽसौ तु पिशङ्गः पद्मधूलिवत् । पिशङ्गस्त्वसितावेशात् पिङ्गो दीपशिखादिषु । पिङ्गलस्तु परच्छायः पिङ्गे शुक्लांगखण्डवत् इति ॥ ४. चित्राखुपर्णीगोडुम्बासुभद्रादन्तिकासु च । मायायां सर्पनक्षत्रनदीभेदेषु च स्त्रियाम् । तिलकालेख्ययोः क्लीवं कर्बुराद्भुतयोरपि । तदुक्तयोस्त्वन्यलिङ्गम् । नामलिङ्गानुशासने तु नानार्थपुंस्काण्डेऽयं पठितः । ५. किर्मीरो ना नागरंगे कर्बुरे राक्षसान्तरे । ६. कल्माषः कर्बुरे कृष्णे । इति मूर्धन्यान्ते रभसः । ७. कल्माषो राक्षसे कृष्णे शवलेऽपि । इति हैमः । ८. एतः कर्बुर आगते । कर्बुरं सलिले हेम्नि कर्बुरः पापरक्षसोः । कर्बुरा कृष्णवृन्तायां शवले पुनरन्यवत् ॥ इति धीवर्गः ।

९. ब्राह्मी तु भारती । शाकभेदः पङ्कगण्डी हञ्जिका सोमवल्ल्यपि । ब्रह्मशक्तिः । १०. अथ भारती । वचने च सरस्वत्यां पक्षिवृत्तिप्रभेदयोः । ११. गीः स्त्री भाषासरस्वत्योः । भागुरिमते गिराऽपि । ब्रह्माणी वचनं वाचा जल्पितं गदितं गिरा । इति शब्दार्णवः । १२.वाग्वाचे भारत्यां स्त्रियौ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः।
तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता॥ २॥
श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः।
स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी॥ ३॥
शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गमोंकारप्रणवौ समौ।

भावः) १वाणी (वण्यते, शब्द्यते, इञ्, ङीप्) २सरस्वती (सरोजाऽस्त्यस्याः, मतुप्) ये ७ स्त्री० नाम अधिष्ठातृदेवता (सरस्वती देवी) के हैं।

व्याहारः (व्याहारणम्, घञ्) उक्तिः (उच्यते, क्तिन्) लपितम् (लप्यते स्म, क्तः) भाषितम् (भाषणम्, क्तः) वचनन् (उच्यते ल्युटि) वचः (असुनि) ये ६ नाम भाषण के हैं, जिनमें 'व्याहार' पुं० 'उक्ति' स्त्री० शेष ४ नपुं० हैं॥ १॥

३अपभ्रंशः (संस्कृतादपभ्रश्यति अधःपतति, अच्) अपशब्दः (अपभ्रष्टः शब्दोऽपशब्दः) ये दो पुं० नाम व्याकरण से सिद्ध न होने वाले शब्द के हैं, जैसे—गगरी आदि शब्द में अर्थ को व्यक्त करने वाले वर्ण समूह को शब्द कहते हैं। जैसे—विने हुए सूत समुदाय का वाचक पटशब्द है, शङ्ख की तरह ग्रीवा वाले व्यक्ति का वाचक घटशब्द हैं। तिङन्त और सुबन्त पदसमूह का नाम ४वाक्य है —तिङन्त समुदाय जैसे—पचति पश्य, सुबन्त समुदाय जैसे— प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्। तथा कारक से युक्त क्रिया भी वाक्य कही जाती है, जैसे— देवदत्त ! गामभिरक्ष, तीक्ष्णेन असिना शत्रुं जहि आदि॥ २॥

५श्रुतिः (श्रूयते क्तिन्) ६वेदः (विदन्त्यनेन, घञ्) ७आम्नायः (आमनति उपदिशति, णः) त्रयी (त्रयोऽवयवा यस्याः) ये ४ वेद के नाम हैं जिनमें 'श्रुति' और त्रयी शब्द स्त्री० शेष दो शब्द पुं० हैं।

वेद से कहा गया यज्ञादि कर्म का एक नाम धर्मः (ध्रियते जनैः मन्) है। ऋक् (ऋच्यन्ते स्तूयन्ते देवा अनया, ऋच् धातोः क्विपि) ८साम (स्यति नाशयति पापम् मनिन्) यजुः (इज्यते अनेन, उस्) ये ३ नाम क्रमिक तीनों वेदों के एक एक नाम हैं, जिनमें ऋक् शब्द स्त्री० है; शेष दो नपुंसक हैं। ये तीनों वेद मिलकर ९त्रयी (त्रयोऽवयवा अस्या तयप् अयच् ङीप) कहलाते हैं॥ ३॥

१०शिक्षा आदि (आदि पद से—शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः।

---

१. वाणिरम्बुदे। व्यूतौ मूल्ये सरस्वत्याम्। इति हैमः। वाणिः स्याद्दूतिभारत्योर्वाणि- मूल्ये बलाहके। इति विश्वः। २. सरस्वती सरिद्भिदि। वाच्यापगायां स्त्रीरत्ने गोवाग्देवतयोरपि। इति हैमः। ३. अपभ्रंशस्तु पतने भाषाभेदादपशब्दयोः। ४. वाक्यं तु कुत्सिते हीने वचनार्हे च वाच्यवत्। ५. श्रुतिः श्रोत्रे च तत्कर्मण्याम्नायवार्तयोः स्त्रियाम्। ६. वेदः श्रुतौ च वित्तौ च। ७. आम्नायः कुल आगमे। उपदेशे च। इति हैमः। ८. साम क्लीबमुपायस्य भेदे वेदान्तरेऽपि च। ९. त्रयी त्रिवेद्यां त्रितये पुरंध्यां सुमतावपि। इति हैमः। १०. शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥
आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।
आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्च लक्षणम् ॥ ५ ॥
प्रबन्धकल्पना कथा प्रवह्लिका प्रहेलिका ।

छन्दो विचितिरित्येष षड्गो वेद उच्यते का संग्रह है।) वेदों के अंग कहे जाते हैं। ओंकारः (अवतिरक्षति, मन्, टिलोपी मनुप्रत्ययस्यैव, ऊठौ, गुणे च समुदायात्कारः प्रत्ययः) प्रणवः (प्रणूयते स्तूयतेऽप् णत्वम्) ये दो पुं० नाम ओंकार के हैं।

इतिहासः ('इतिह' अव्ययम् आस्त उपदिशति अस्मिन्, घञ्) पुरा वृत्तम् (पुरावृत्तमा, चष्टे) ये दो नाम इतिहास के हैं, जिनमें प्रथम पुं० दूसरा नपुंसक हैं। [१]उदात्तः (उत् उच्चे आदीयते उच्चार्यते स्मः क्तः) अनुदात्तः, स्वरितः ये तीन पुं० नाम [२]स्वरों (स्वरन्ति शब्दायन्ते) के हैं ॥ ४ ॥

आन्वीक्षिकी (अनु पश्चात् ईक्षणम् परीक्षणम् अन्वीक्षा सा प्रयोजनमस्याः, ठक्) यह एक स्त्री० नाम तर्कविद्या का है। दण्डनीतिः (दण्डो नीयते बोध्यते अनया, क्तिन्) यह एक स्त्री० नाम धर्मशास्त्र (अर्थस्य भूम्यादेः शास्त्रम्) का है। आख्यायिका (आचष्टे इति, ण्वुल्) उपलब्धार्था (उपलब्धो ज्ञातो अर्थो यस्याः) ये दो स्त्री० नाम आख्यायिका के हैं। ऽात सत्यार्थभूतविषय के प्रतिपादक ग्रन्थ को आख्यायिका कहते हैं। जैसे कादम्बरी, वासवदत्तादि।

पञ्चलक्षणात्मक [३]पुराण कहे जाते हैं। जैसे—सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्च लक्षणम्—ये ५ लक्षण जहाँ पाये जाँय उन्हें पुराण (पुरा भवं) कहते हैं। पुराण १८ हैं। सात्विक, राजस, तामस के भेद से ३ प्रकार के होते हैं। १८ उपपुराण एवं १८ उपोपपुराण भी हैं ॥ ५ ॥

प्रबन्धकल्पना (प्रबन्धस्य कल्पना रचना) कथा (कथ्यतेऽनया, अङ्) ये दो स्त्रीलिंग नाम वाक्य विस्तारवाले ग्रन्थ के हैं। प्रवह्लिका प्रवह्लते आच्छादयति, क्वुन्) [४]प्रहेलिका (प्रहे-

ज्योतिषां गतिः। छन्दोविचि तिरित्येतैः षडङ्गो वेद उच्यते। १. उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्चस्वरास्त्रयः। चतुर्थप्रचितो नोक्त यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः। २. स्वरो नासासमीरे स्यान्मध्यमादित्रिकस्वरे। उदात्तादावकारादौ षड् जादौ च ध्वनौ पुमान्। इति विश्वमेदिन्यौ। उदात्तो दातृमहतोर्हंद्ये च स्वरभिद्यपि। इति हैमः।

३. पुराणं पञ्चलक्षणे। तामससात्विकादिभेदेनाष्टादशपुराणानि यथा—मत्स्यं कौर्मं तथा लैङ्गं शैवं स्कान्दं तथैव च। आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे ॥ वैष्णवं नारदीयं च तथा भागवतं शुभम्। गारुडं च तथा पाद्मं वाराहं शुभदर्शने। सात्विकानि पुराणानि विज्ञेयानि शुभानि वै ॥ ब्रह्माण्डं ब्रह्मवैवर्तं मार्कण्डेयं तथैव च। भविष्यं वामनं ब्राह्मं राजसानि निबोधमे। इति पद्मपुराणम्। पणे पुंसि, यथा—षोडशपणः पुराणः पणोभवेत् काकिणी चतुष्केण। इत्यनेकार्थकैरवाकरः त्रिषु प्रत्ने। ४. व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्। यत्र बाह्यार्थसंबन्धः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥
समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः।
वार्ताप्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥
आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च।
हूतिराकारणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

लयति मनोगतभावं सूचयति, घञ्) ये दो स्त्रीलिंग नाम पहेली के हैं।

[1]स्मृतिः (वेदों के अर्थ को ध्यान में रखकर बनाये गये ग्रन्थ को स्मृति कहते हैं—स्मर्यतेऽनया)। धर्मसंहिता (धर्मज्ञानार्थं रचिता संहिता, सं+धा+क्तः) ये दो स्त्रीलिंग नाम मनु आदि धर्मग्रन्थ के हैं।

समाहृतिः (समाहरणम्, क्तिन्) [2]संग्रहः (संग्रहणम्, अप्) ये दो नाम संग्रह ग्रन्थ के हैं; जिनमें प्रथम स्त्री० द्वितीय पुंलिंग है ॥ ६ ॥

समस्या (समं सम्पूर्णं तद्विषयिणीच्छा, क्यच्, सुगागमः अः टाप्) समासार्था (समसनम्, घञ् समासोऽर्थो प्रयोजनं यस्याः) ये दो स्त्री० नाम समस्या के हैं। कवि की शक्ति जानने के लिए अपूर्ण पद को बोलना समस्या कही जाती है। जैसे—"शतचन्द्रं नभस्तलम्" आदि।

किंवदन्ती (कोऽपि वादः झच्, ङीप्) जनश्रुतिः (जनैःश्रूयते, क्तिन्) ये दो स्त्रीलिंग नाम लोक में प्रसिद्ध होनेवाली बात के हैं।

[3]वार्ता (वृत्तिरस्त्यस्याम्, णः) [4]प्रवृत्तिः (प्रवर्तते, क्तिच्) [5]वृत्तान्तः (वृत्तो गवेषणीयोऽन्तः समाप्तिर्यस्य, सः) [6]उदन्तः (उद्गतोऽन्तो यस्य) ये ४ नाम बातचीत के हैं। जिनमें प्रथम दो स्त्रीलिंग शेष दो पुंलिंग हैं ॥ ७ ॥

आह्वयः (आह्वानमाहुः, क्विप् तस्या अयः) आख्या (आख्यानमाख्या, अङ्) आह्वा (आह्वानम्) अभिधानम् (अभिधीयते, ल्युट्) नामधेयम् (नम्यते अभिधीयतेऽर्थोनेन, निपातनात् नामशब्दो निष्पन्नः ततः स्वार्थे धेयः) नाम (पूर्ववत्) ये ३ नाम संज्ञा के हैं जिनमें प्रथम तीन स्त्रीलिंग शेष तीन नपुंसक हैं।

हूतिः (ह्वानम्, क्तिन्) आकारणा (आकारणम्, युच्) आह्वानम् (आह्वयते ल्युट्) ये तीन नाम पुकारने के हैं, जिनमें प्रथम दो स्त्री० तृतीय० नपुं० हैं। संहूतिः (सम्यक् ह्वानम्,

---

कथ्यते सा प्रहेलिका। प्रहेलिका प्रवल्ही च प्रश्नदूती विपादिका। इत्युत्पलिनी।

१. स्मृतिर्धर्मशास्त्रस्मरणयोः स्त्रियाम्। २. विस्तरेणोपदिष्टानामर्थानां सूत्रभाष्ययोः। निबन्धो यः समासेन संग्रहं तं विदुर्बुधाः ॥ संग्रहो बृहदुद्रंगे मुष्टिसंक्षेपयोरपि। इति मेदिनी। ३. वार्ता तु वर्तने वातिङ्गणे कृष्यान्नुदन्तयोः निःसारापोग्ययोः क्लीबम्। ४. प्रवृत्तिर्वृत्तवृत्तान्तप्रवाहेषु प्रवर्तने। इति हैमः ॥ ५. वृत्तान्तस्तु प्रकरणे कार्त्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः। इति हैमः। ६. उदन्तः साधुवार्तयोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे ।
मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथमिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥
अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।
यशःकीर्त्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

क्तिन् बहुकर्तृका चेत्) यह एक स्त्री० नाम बहुतों के एक साथ पुकारने का है ॥ ८ ॥

विवादः (विरुद्ध वादः घञ्) [1]व्यवहारः (हरणं हारः) ये दो पुं० नाम परस्पर विरुद्ध बोलने के हैं ।

उपन्यासः (उपन्यासनम् घञ्) वाङ्मुखम् (वाचो मुखमुपक्रमः) ये दो नाम बात-चीत प्रारम्भ करने के है, जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय नपुंसक हैं ।

उपोद्घातः (उपसमीपे उत् हननम् शापनम् घञ्) उदाहारः (उदाहरणम् घञ्) ये दो नाम बातचीत की भूमिका बाँधने के हैं। शपनम् (शपते आक्रोशते ल्युट्) [2]शपथः (शपते, अथः) ये दो नाम सौगन्ध खाने के हैं, जिनमें प्रथम नपुं० द्वितीय पुंलिंग हैं ॥ ९ ॥

प्रश्नः (प्रच्छनम् , नङ्) अनुयोगः (अनुयोजनम् घञ्) पृच्छा (प्रच्छनम् अङ्) ये तीन नाम किसी से कुछ पूछने के हैं, जिनमें प्रथम दो पुंल्लिङ्ग तृतीय स्त्री० है ।

प्रतिवाक्यम् (प्रतिवचनम् , ण्यत्) [3]उत्तरम् (उत्तरणम्) ये दो नपुं० नाम जबाब देने के हैं ।

मथ्यभियोगः (मिथ्या चासौ अभियोगश्च) अभ्याख्यानम् (अभि आङ् पूर्वक चक्षिङ् धातोः) ये दो नाम झूठ अभियोग लगाने के हैं, जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय नपुं० हैं ।

मिथ्याभिशंनम् (अभि शंस् ल्युट् मिथ्याचासौ अभिशंसनञ्च) अभिशाप (आभिशपनम् , घञ्) ये दो नाम झूठाआरोप करने के है, जिनमें प्रथम नपुं० द्वितीय पुं० है ।

[4]प्रणादः (प्रकृष्ट नादः शब्दः, घञ्) यह एक पुं० नाम वाह वाही (अनुरागजन्य-शब्द) का है । यशः (अश्नुते व्याप्नोति, असुन् युडागमश्च) [5]कीर्त्तिः (कीर्त्यते संशब्द्यते निपातनात्) समज्ञा (सनैः सर्वैं जायते) ये तीन नाम कीर्त्ति के हैं, जिनमें प्रथम नपुंसक शेष दो स्त्री० है ।

स्तवः (स्तूयते अनेन, अप्) स्तोत्रम् (ष्ट्रन्) स्तुतिः (क्तिन्) नुति (नूयतेऽनया

---

१. व्यवहारः स्थितौ पणे । द्रुमेदे । इति हैमः । वि नानार्थेऽत्रसंदेहे हरणं हार उच्यते । नानासंदेहहरणा द्व्यवहार इति स्मृतः । इति कात्यायनः । २. शपथः कार आक्रोशे शपने च सुतादिभिः । इति हैमः । ३. उत्तरं प्रत्रणौर्ध्वयोः उदीच्यप्रतिवचसोरुत्तरस्तु विराटजे । ४. प्रणादस्तु पुर्नास्तारशब्दे च श्रवणामये । अनुरागकृते शब्दे प्रणादः सीत्कृतं नृणाम् । इति शब्दार्णवः ॥ ५. कीर्तिः प्रसाददद्यसोर्विस्तारे कर्दमेऽपि च ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा।
काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

निन्दायाः दश नामानि।

अवर्णाक्षेप-निर्वाद-परीवादापवादवत्।
उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥
पारुष्यमतिवादः स्याद्भर्त्सनं त्वपकारगीः।

क्तिनि ये ४ नाम स्तुति (खुशामद करने) के हैं। जिनमें 'स्तव' शब्द पुं० स्तोत्र शब्द नपुंसक शेष २ स्त्री० हैं ॥ ११ ॥

आम्रेडितम् (आम्रेड्यते स्म अधिकमुच्यते स्म, क्तः) यह एक नपुं०, नाम एक ही शब्दको वार-वार कहने का है।

उच्चैर्घुष्टम् (उच्चैर्घुष्यते स्म, क्तः) घोषणा (युचि कृते) ये दो नाम मुनादी करने के हैं, जिनमें प्रथम नपुं० दूसरा स्त्री० है।

काकुः (काक्यते उपताप्यते, उण्) एह एक स्त्री० नाम शोक, भय, काम, क्रोधादि से होने वाले विकृत शब्द का है। शोकभीत्यादिभिः ध्वनेः वो विकारःस इति सम्बन्धः ॥ १२ ॥

[१]अवर्णः (वर्ण्यते इति वर्णः घञ्, वर्णः=प्रशंसा तद्विरुद्धः) [२]आक्षेपः (आक्षिप्यते, घञ्) [३]निर्वादः (वादान्निर्गतः घञ्) [४]परीवादः (परिवदनम्, घञ् दीर्घः) [५]अपवादः (अपवदनम् घञ्) उपक्रोशः (उपक्रोशतीति, घञ्) जुगुप्सा (जुगुप्सतीति अः, निन्दायां सन्) कुत्सा (कुत्सयते, अः) [६]निन्दा (निन्दतीति, अः) गर्हणम् (गर्हते, ल्युट्) ये दश नाम निन्दा (शिकायत) के हैं जिनमें प्रथम ६ पुं० हैं शेष ३ स्त्री० और गर्हणम् नपुंसकलिङ्ग है ॥ १३ ॥

[७]पारुष्यम् (परुषस्य निष्ठुरभाषिणो भावः, ष्यञ्) अतिवादः (अतिक्रम्योक्तिः) ये दो नाम अप्रिय वचन के हैं जिनमें प्रथम न० द्वितीय पुं० है।

[८]भर्त्सनम् (भर्त्सयते, ल्युट्) अपकारगीः (अपकारार्था गीः) ये दो नाम फटकारने के हैं जिनमें प्रथम नपुं० द्वितीय स्त्रीलिङ्ग है।

उपालम्भ दो प्रकार के होते हैं—एक गुणप्रकाश पूर्वक, जैसे—श्रीमन्! आप का क्या यह उचित है? दूसरा—निन्दा प्रकाश पूर्वक, जैसे—कुट्टीनीपुत्र का तुम्हारा यह उचित ही है।

---

१. वर्णो द्विजादिशुक्लादियशोगुणकथासु च। स्ततौ ना न स्त्रियां भेदरूपाक्षरविलेपने।
२. आक्षेपो भर्त्सनाकृष्टिकाव्यालंकृतिषु स्मृतः॥ ३. निर्वादः स्याल्लोकवादपरिनिष्ठितवादयोः।
४. परिवादोऽपवादे स्याद्वीणावादनवस्तुनि। ५. अपवादस्तु निन्दायामाज्ञाविस्रम्भयोरपि।
६. निन्दा स्यादपवादेऽपि कुत्सायामपि योषिति। ७. पारुष्यं परुषत्वे च दुर्वाक्ये पुंसि गीष्पतौ।
८. चौरोऽसि घातयिष्यामि त्वाम् इत्यादि भर्त्सनं गीः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात् परिभाषणम् ॥ १४ ॥
तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।
स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥
अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥
सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्नवः ।

इनमें निन्दाप्रकाश पूर्वक जो दूसरा है वह [1]परिभाषणम् (परिभाषते ल्युट् न०) कहलाता है ॥१४॥

परस्त्री निमित्तक पुरुषको, परपुरुष निमित्तक स्त्रीको गाली देने का एक स्त्री० नाम—[2]आक्षारणा (क्षारयति चालयतीति, आङ् पूर्वकात् ण्यन्तात् क्षारिधातोः, युच्) है। मैथुनं प्रति य आक्रोशः तत्रेति सम्बन्धः ।

आभाषणम् (आभाष्यते यत्तत् , ल्युट्) आलापः (आलपनम् , घञ्) ये दो नाम प्रेम-पूर्वक बातचीत करने के हैं, जिनमें प्रथम नपुं० द्वितीय पुं० है।

अर्थ शून्यः वचः—प्रलापः (प्रलपनम् घञ्) यह एक पुं० नाम फजूल बकवाद करने का है ॥ १५ ॥

अनुलापः (अनुलपनम् , घञ्) मुहुर्भाषा (पुनः पुनः भाषणम् घञ्) ये दो नाम बारंबार बोलने के हैं, जिनमें पुं०, द्वितीय स्त्री० है।

विलापः (विलपनम् , घञ्) परिदेवनम् (परिदेवयते, ल्युट्) ये दो नाम पश्चात्ताप के हैं, जिनमें प्रथम पुं०, द्वितीय नपुं० हैं।

[3]विप्रलापः (विरुद्धः निरर्थकः प्रलापः घञ्) विरोधोक्तिः (विरोधस्य उक्तिः, क्तिन्) ये दो नाम परस्पर विरुद्ध बातचीत करने के हैं।

संलापः (संलपनम् , घञ्) यह एक पुं० नाम दो व्यक्तियों के परस्पर बात करने का है। आलाप और संलाप में यह भेद है कि—संलाप बगैर दो के नहीं हो सकता है और 'आलाप' अकेले भी हो सकता है ॥ १६ ॥

सुप्रलापः (सुष्ठु प्रलपनम् , घञ्) सुवचनम् (शोभनं वचनम्) ये दो नाम मीठी बातचीत के हैं, जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय नपुं० है।

अपलापः (अपलपनम्, घञ्) [4]निह्नवः (निह्नवनम् निश्चयेनापनयनम्, अप्) ये दो पुं० नाम छिपाने (सत्य को मिथ्या बनाने) के हैं।

---

१. अप्रत्यये परिभाषा अपि। परिभाषाश्च ततो भविष्यन्ति । इति महाभाष्ये ॥ परिभाषणं सनिन्दोपालम्भे नियमेऽपि च । २. ल्युटि आक्षरणमपि क्षरणाक्षारणक्रोशाः शापमिथ्याभिमैथुनाः । इति दुर्गः । नीचमाक्षारणं यः स आक्रोशो मैथुनं प्रति । इति शब्दार्णवः । ३. विप्रलापो विरुद्धोक्तावनर्थकवचस्यापि । इति हैमः । ४. निह्नवः स्यादविश्वासेऽपलापे निकृतावपि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशौ दुरेषणा ।
अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकत्थनम् ॥ प्र० ॥
सन्देशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥
रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥
निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूनृतं प्रिये ।
सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

चोद्यम्, आक्षेपः, अभियोग, ये तीन नाम विशेष प्रश्न के हैं, जिनमें प्रथम नपुं० शेष दो पुं० हैं। शापः, आक्रोशः, दुरेषणा ये तीन नाम शाप देने के हैं। चाटु चटु ये दो पुं०, नपुं० नाम मुँह देखी बात करने के हैं। श्लाघा, यह एक स्त्री० नाम स्नेह से मिथ्या प्रशंसा करने का है। प्र० ॥

सन्देशवाक् (संदिश्यते, घञ्, संदेशस्य वाक्) वाचिकम् (संदिष्टोऽर्थो यया उच्यते सा वागेव, ठक्) ये दो नाम सम्वाद (संदेश) भेजने के हैं, जिनमें प्रथम स्त्री० द्वितीय नपुं० है। उत्तरे=इसके आगे (वक्ष्यमाण वाग्विशेष रुशती से लेकर सम्यक् पर्यन्त शब्द) त्रि० है ॥१७॥

रुशती (रुशति हन्ति पदं या सा, शतृ, ङीप् नुमो विकल्पः) यह एक त्रि० नाम अशुभ वचन का है। पुं० में रुशन्, नपुं० में रुशत्, रूप होगा।

[1]कल्या (कलासु साधुः, यत्) यह एक त्रि० नाम अत्यन्त शुभ वचन का है।

[2]सान्त्वम् (सान्त्वयतीति अच्) यह एक त्रि० नाम अत्यन्त मधुर वचन का है।

संगतम् (संगच्छते स्म, क्तः) हृदयंगमम् (हृदयं गच्छति, खच्) ये दो त्रि० नाम समय पर की युक्तिसंगत बात के हैं ॥ १८ ॥

निष्ठुरम् (नितिष्ठतीति, कुरच्) [3]परुषम् (पिपर्ति पूरयति, उषच्) ये दो त्रि० नाम कर्कश शब्द के हैं।

[4]ग्राम्यम् (ग्रामे भवम्, यत्) अश्लीलम् (श्रियं लाति, कः, लत्वम् कपिलकादित्वात्, तद्भिन्नम्) ये दो त्रि० नाम असभ्यतापूर्वक बातचीत के हैं।

[5]सूनृतम् (सुष्ठु नृत्यन्त्यनेन कः दीर्घश्च) यह एक त्रि० नाम सत्य (सत्सु साधुः यत्) और प्रियवचन का है।

[6]संकुलम् (संकुलति, कः) क्लिष्टम् (क्लिश्यते विबाध्यते स्म, क्तः) परस्परपराहतम् (परेणाघानि, क्तः पराहतम्, परस्परेण पराहतम्) ये ३ त्रि० नाम परस्पर विरुद्ध वचन के हैं ॥ १९ ॥

---

१. कल्या अपि पवि स्वामी। २. सान्त्वं सामनि दाक्षिण्ये। ३. परुषं कर्बुरे रूक्षे स्यान्निष्ठुरवचस्यपि। पवि लिङ्गः। ४. ग्राम्यं स्त्रीकरणे क्लीबेऽश्लीलप्राकृतयोस्त्रिषु। ५. सूनृत मङ्गलेऽपि स्यात्प्रियसत्ये वचस्यपि। ६. संकुलं त्रिषु विस्पष्टवाचि व्याप्ते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लुप्तवर्ण-पदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।
अम्बूकृतं सनिष्ठेवमबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥
अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् ।
सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं भणितं रतिकूजितम् ।
श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥ प्र० ॥
अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

लुप्तवर्णपदम् (लुप्तो वर्णः, पदं वा यत्र पदे वाक्ये वा, तत्) [१]ग्रस्तम् (ग्रस्यते स्म, क्तः) ये दो त्रि० नाम अधूरे वचन के हैं । [२]निरस्तम् (निरस्यते स्म क्तः) त्वरितोदितम् (त्वरितमुदितम् , क्तः) ये दो त्रि० नाम शीघ्र उच्चरण कर कहे हुए वचन के हैं ।

अम्बूकृतम् (अनम्बु अम्बु अकारि च्वि दीर्घः, क्तः) सनिष्ठेवम्, (निष्ठेवनम्, घञ् गुणः सह निष्ठेवनेन श्लेष्मकणादिनिर्गमनेनेति सनिष्ठेवम् । सनिष्ठीवमिति पाठे पृषोदरादित्वादीकारः) ये दो नाम थूक की छांटा निकालते हुए कहे गये वचन के हैं ।

अबद्धम् (न बद्ध्यते स्म, क्तः [३]अवध्यं वेति) अनर्थकम् (न अर्था यस्य, कप्) ये दो त्रि० नाम फजूल वचन के हैं ॥ २० ॥

अनक्षरम् (न प्रशस्तान्यक्षराणि यत्र) अवाच्यम् (न वक्तुं योग्यम् , ण्यत् , कुत्वाभावः) ये दो त्रि० नाम न कहने योग्य वचन के हैं । [४]आहतम् (आहन्यते स्म, क्तः) [५]मृषार्थकम् (मृषा मिथ्या अर्थो यस्य) ये दो त्रि० नाम झूठे (असंभव) वचन के हैं ।

सोल्लुण्ठनम् (उल्लुण्ठनेन सह वर्तते, ल्युट्) सोत्प्रासम् (उत्प्रासेन सह उपहासेन वर्तते, घञ्) ये दो त्रि० नाम हँसी की बातचीत के हैं ।

भणितम् (भणनम् कूजनम् क्तः) रतिकूजितम् (रतौ कूजितम्) ये दो त्रि० नाम सम्भोग समय में किये गये शब्द के हैं ।

श्राव्यम् (श्रावयितुं योग्यम्) हृद्यम् (हृदयस्य प्रियम्) मनोहारिन् (मनोहरति तच्छीलम्) विस्पष्टम् (विशेषेण स्पष्टम्) प्रकटोदितम् (प्रकटं च तदुदितं च) ये ५ त्रि० नाम स्पष्ट वचन के हैं ॥ प्र० ॥

अथ—[६]म्लिष्टम् (म्लेच्छयते स्म अव्यक्तमुच्यते स्म निपा०) अविस्पष्टम् (न विस्पष्यते स्म, क्तः) ये दो त्रि० नाम अस्पष्ट वचन के हैं ।

वितथम् (विगतं तथा=सत्यं यस्मात्, अच्) [७]अनृतम् (न ऋतम्) ये दो त्रि० नाम असत्य वचन के हैं ॥ २१ ॥

---

१. ग्रस्तं ग्रासीकृतेऽपि स्याल्लुप्तवर्णपदोदिते । २. निरस्तः प्रेषितशरे संत्यक्ते त्वरितोदिते । निष्ठ्यूते प्रतिहते च । इति हैमः ॥ ३. अवध्यमवधार्हे स्यादनर्थकवचस्यपि । इति हैममेदिन्योः । ४. आहतं गुणिते चापि ताडिते च मृषार्थके । स्यात्पुरातनवस्त्रेऽपि नववस्त्रे वितानके ॥ ५. एष वन्ध्यासुतो याति । इत्यादिवचनस्य । ६. म्लिष्टं त्रिष्वव्यक्तवाचि म्लाने । ७. अनृतं कृषावसत्येऽपि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति।

शब्दस्य सप्तदश नामानि

शब्दे निनाद-निनद-ध्वनि-ध्वान-रव-स्वनाः ॥ २२ ॥
स्वान-निर्घोष-निर्ह्राद-नाद-निस्वान-निस्वनाः ।
आरवारावसंराव-विरावा अथ मर्मरः ॥ २३ ॥
स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानान्तु शिञ्जितम् ।
निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥ २४ ॥
वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्वाण-प्रक्वणादयः ।
कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

---

[1]सत्यम् (सति साधुः यति) तथ्यम् (तथा सत्ये साधुः, यत्) [2]ऋतम् (अर्यते स्म, क्तः) [3]सम्यक् (समञ्चति संगच्छते क्विन्) ये चार त्रि० नाम सत्य वचन के हैं। ये सत्यादि ४ शब्द गुणी होने पर भी त्रि० होते हैं। जैसे—सत्या स्त्री, सत्यं वचनम्, सत्यः पुमान् ॥२१½॥

शब्दः (शब्दनम्, अच्) निनादः (निनदनम्, घञ्) निनदः (अप्) ध्वनिः (ध्वननम् इः) ध्वानः (घञि कृते) रवः (रवणम्, अप्) स्वनः (स्वननम्, अप्) स्वानः (घञ्) निर्घोषः (निर्घोषणम्, घञ्) निर्ह्रादः निर्ह्रादनम्, घञ्) नादः (नदनम् घञ्) निस्वानः (निस्वननम्' घञ्) निस्वनः (निस्वननम् अः) आरवः (आरवणम्, अप्) आरावः (घञ्) संरावः (संरवणम्) विरावः (विरवणम्, घञ्) ये १७ पुं० नाम शब्द के हैं।

वस्त्रपर्णानां स्वनिते—[4]मर्मरः (मर्म इति शब्द राति) यह एक पुं० नाम सूखे वस्त्र या पत्तों के शब्द का है ॥ २२–२३ ॥

भूषणानां शब्दे—शिञ्जितम् (शिञ्जते स्मेति, क्तः) निक्वाणः (निक्वणनम्, घञ्) निक्वणः (निक्वणनम्, अप्) क्वाणः (क्वणनम् घञ्) क्वणः (अप्) क्वणनम् (क्वण्यते ल्युट्) ये ६ नाम आभूषण के शब्द के हैं,। जिनमें शिञ्जित और क्वणन शब्द नपुंसक हैं, शेष ४ पुं० है। यह भा० दी० का मत है। क्योंकि अपि शब्द से पूर्वान्वयित्व बोधित होता है। किन्तु मुकुटादि टीकाकारों ने निक्वणदि ५ शब्दों का अर्थ वीणा की ध्वनि एवं अपि शब्द से किन्नरादि की ध्वनि किया है ॥ २४ ॥

वीणायाः क्वणिते=ध्वनौ प्राद्युपसर्गात्–प्रक्वाणः (प्रक्वणनम्, घञ्) प्रक्वणः (प्रक्वणनम्; अप्) उपक्वणः आदि सोपसर्गक नाम वीणा के शब्द के हैं। प्रादेः' कहने से वीणाध्वनि अर्थ में उपक्वणादिवत् निक्वणादि ५ का भी संग्रह हो जाता है।

[5]कोलाहलः (कोलनम् कोल=एकीभावः। तमाहलति आलिखति, अच् को वा)

---

१. सत्यं कृते च शपथे तथ्ये च त्रिषु तद्वति। २. ऋतं शिलोञ्छे पानीये पूजिते दीप्तसत्ययोः। ३. सम्यक् पुंसि, स्त्रियां समीची। ४. मर्मरो वस्त्रभेदे च शुष्कपर्णध्वनौ तथा। पुंसि स्त्रियां पुनः प्रोक्ता मर्मरी पीतदारुणि॥ ५. कलकल उक्तः कोलाहले तथा सर्जनिर्यासे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे।
॥ इति शब्दादिवर्गः ॥

७—अथ नाट्यवर्गः

निषादर्षभ गान्धार-षड्ज-मध्यम धैवताः ।
पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

कलकलः (कलते इति कलोऽव्यक्तः शब्दोऽत्र प्रकारे द्विर्भावः कलादपि कलः, घञ् संज्ञापूर्वकत्वाद्वृद्ध्यभावः) ये दो पुं० नाम बहुतों के एक साथ शोर मचाने के हैं।

तिरश्चां रुतम्–[१]वाशितम् (वाश्यते शब्द्यते स्मः क्तः) यह एक नपुंसक नाम पक्षियों के शब्द का है ॥ २५ ॥

प्रतिश्रुत् (प्रति प्रथम शब्दं लक्ष्यीकृत्य श्रूयते, क्विप्) यह एक स्त्री० नाम प्रतिध्वनि का है। जिसका प्रत्यक्ष गुफा और मन्दिरादियों में होता है।

[२]गीतम् (अगायीति क्तः) गानम् (गीयते इति ल्युट्) ये दो नपुं० नाम संगीत के हैं। इमे=द्वे समे=समानार्थे समानलिङ्गके चेति सम्बन्धः ॥ २५½ ॥ इति शब्दादिवर्गः ॥

[३]निषादः (निषीदति उपविशति मनोऽस्मिन् इति, घञ् षत्वम्) [४]ऋषभः (ऋषति वृषभस्वरसादृश्यं गच्छतीति, अभच्) [५]गान्धारः (गन्धारे देशविशेषे भवः अण्) [६]षड्जः (षड्भ्यो जातः, डः) [७]मध्यमः (मध्ये भवः, मः) धैवतः (धीमतामयम्, पृषोदरादित्वात् अण्, वत्वं च) [८]पञ्चमः पञ्चानां पूरणः, डट्, मडागमश्च पञ्चमस्थानजन्यत्वात् स्वरः पञ्चमः) ये

---

१. वाशिता करिणीनार्योर्वाशितं भाषिते रुते। वासिता करिणीनार्योर्वासितं सुरभीकृते। ज्ञानमात्रे खगारावे वासितं वस्त्रवेष्टिते। इति विश्वकोषात् दन्त्यमध्योऽपि ॥ २. गीतं शब्दितगानयोः। इति हैमः ॥ इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥

३. निषादः स्वरभेदेऽपि चण्डाले धीवरान्तरे। ४. ऋषभस्त्वौषधान्तरे। स्वरभिद्वृषयोः कर्णरन्ध्रकुम्भीरपुच्छयोः। उत्तरस्थः स्मृतः श्रेष्ठे स्त्री नराकारयोषिति। शूकशिम्ब्यां सिरालायां विधवायां क्वचिन्मता। ५. गान्धारो रागसिन्दूरस्वरेषु नीवृदन्तरे। इति हैमः। ६. नासां कण्ठमुरस्तालु जिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन्। षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः ॥ ७. तद्वदेवोत्थितो वायुरुरः कण्ठसमाहतः। नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः ॥ मध्यमो मध्यजे स्वरे। देहमध्ये मध्यदेशे मध्यमाकर्णिकाङ्गुलिः राकारजस्वला चापि। इति हैमः। मध्यमो मध्यजेऽन्यवत्। पुमान्स्वरे मध्यदेशेऽप्यवलग्ने तु न स्त्रियाम्। स्त्रियां दृष्टरजोनार्यां कर्णिकाङ्गुलिभेदयोः। त्र्यक्षरच्छन्दसि तथा। ८. वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्धसु। विचरन्पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते ॥ तज्जन्यत्वात् स्वरः पञ्चमः। पञ्चमो रागभेदे स्यात्स्वरभेदे च पञ्चमी। पाण्डवानां च पत्न्यां स्त्री पञ्चानां पूरणे त्रिषु। पञ्चमो रुचिरे दक्षे। दारवी गात्रवीणा च द्वे वीणे स्वरधारिके। इति वचनात् उक्ताः स्वराः तन्त्रीतः कण्ठाच्चोच्चरन्ति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काकली तु कले सूक्ष्मे, ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।
कलो, मन्द्रस्तु गम्भीरे, तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥
नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।
स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥ प्र० ॥
समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी ।
विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥

---

७ पुं० नाम वीणा के तार तथा कण्ठ से निकले हुए स्वर के हैं। यहाँ [1]ज्ञातव्य है कि निषाद स्वर में गज, ऋषभ स्वर में गाय, बैल, गान्धार में बकरी आदि, षड्ज में मोर, मध्यम में लावपक्षी, धैवत में घोड़े और पंचम में कोकिल बोलते हैं ॥ १ ॥

काकली (ईषत्कलः. कोः कादेशे, ङीष् च, गौरादिः । कलेः इन् , कलिः शब्द ईषदत्रेति [2]काकलिर्वा) यह एक स्त्री० नाम सूक्ष्म मधुर ध्वनि का है। [3]कलः (मधुर अस्पष्टध्वनिविशेष को—कलःकडति माद्यत्यनेन, घञ् वृद्ध्यभावः संज्ञापूर्वकत्वात्=कहते हैं) यह एक त्रि० नाम अस्पष्ट मधुर शब्द का है। मन्द्रः (मन्दते स्तौति, रक् , गम्भीरे मेघादिध्वनौ) यह एक त्रि० नाम मेघादि की गम्भीरध्वनि का है। तारः (तारयति अन्यान् शब्दान् अतिक्रामतीति, अच्) यह एक त्रि० नाम ऊँचे शब्द का है। ये कलः, मन्द्रः और तारः तीनों नाम विशेष्यगत लिङ्ग वाले हैं। अभिप्राय यह है कि इनका तीनों लिङ्गों में प्रयोग होता है ॥ २ ॥

मनुष्यों के हृदय में २२ प्रकार की ध्वनियाँ रहती हैं। वे ही कण्ठ में मन्द्र नाम से और शिरः प्रदेश में तार नाम से कही जाती हैं ॥ प्र० ॥

समन्वितलयः—एकतालः (एकः समः तालो मानमस्य) यह एक पुं० नाम गीत और बाजाओं के एक स्वर में मिलने का है। सम्यगन्वितो लयो नृत्य-गीत-वाद्यानां साम्यं यत्र सः इति ।

[4]वीणा (वेति जायये स्वरोऽस्याम् निपातनात् नः णत्वं गुणाभावश्च) वल्लकी (वल्लते संवृणोति, क्वुन् , ङीष्) विपञ्ची (विपञ्चयति विस्तारयति ध्वनिम् , ण्यन्तादच् ङीष्) ये तीन स्त्री० नाम वीणा के हैं।

यही वीणा सात तारों से युक्त होने पर—परिवादिनी (परिवदति स्वरानिति, णिनिः) कहलाती है। अर्थात् सितारा का एक स्त्री० नाम परिवादिनी है ॥ ३ ॥

---

१. षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम्। अजाविकौ च गान्धारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् । पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् । अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः । इति नारदः ॥ २. अत एव साधूदितं काकलिभिः कुलीनैः । इत्यभिनन्दप्रयोगः संगच्छते। ३. कला स्यान्मूलरैवृद्धौ शिल्पादावंशमात्रके । षोडशांशे च चन्द्रस्य कलनाकालमानयोः ॥ कलं शुक्रे त्रिष्वजीर्णे नाव्यक्तमधुरध्वनौ ॥ ४. वीणा विद्युति वल्लक्याम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम्।
वंशादिकं तु शुषिरं कांस्यतालादिकं घनम्॥ ४॥
चतुर्विधमिदं वाद्यवादित्रातोद्यनामकम्।
मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः॥ ५॥
स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान्।
आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम्॥ ६॥

---

¹ततम् (तन्यते, तन्) यह एक नपुंसक नाम वीणा सैरन्ध्री, रावण अदि वाद्यविशेष का है। ²आनद्धम् (आनह्यते स्म, चर्मणा मुखे वध्यते स्मेति, क्तः ह्रस्य धः) यह एक नपुं० नाम मृदङ्गादि बाजों का है। ³शुषिरम् (शुषिः छिद्रमस्यास्तीति, रः) यह एक नपुं० नाम बांस की बनी बाँसुरी आदि का है।

⁴घनम् (हन्यते, अप् घनादेशश्च) यह एक नपुं० नाम कांसा आदि से बने घड़ी घण्टा आदि का है॥ ४॥

वाद्यम् (वाद्यते ध्वन्यते, ण्यन्ताद् यत्) वादित्रम् (वाद्यते, णित्रन्) आतोद्यम् (आसमन्ताद् तुद्यते, ध्वन्यते, ण्यत्) ये तीन नपुं० नाम उक्त तत, सैरन्ध्री, रावण, हस्त, किन्नर आदि बाजों के हैं। ⁵मृदङ्गः (मृद्यते क्षोद्यते, अङ्गच्) मुरजः (मुराद् वेष्टनात् जातः डः) ये दो पुं० नाम मृदङ्ग के हैं। इनके तीन भेद हैं—(अतः मूल में बहुवचनान्त पाठ है) यथा—⁶अङ्क्यः (अङ्के क्रोडे भवः, यत्) आलिङ्ग्यः (आलिङ्गते आश्लिष्यते, ण्यत्) ऊर्ध्वकः (ऊर्ध्वं कायति शब्दायते, कः)॥ ५॥

यशः पटहः (यशोर्थः पटहः शाकपार्थिवादिः) ढक्का (ढक् इति शब्दं कायति उच्चारयतीति, कः) ये दो नाम नगारा के हैं जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय स्त्री० है।

भेरी (बिभेति शब्दादस्य, रन् ङीप्) ⁷दुन्दुभिः (दुन्दु इति ध्वनिना भातीति, किः) ये दो नाम भेरी के हैं जिनमें प्रथम स्त्री० द्वितीय पुं० हैं।

⁸आनकः (आनयति योधान् उत्साहयतीति, ण्वुल्) ⁹पटहः (पटेन हन्यते, डः पट इति

---

१. अथ ततं व्याप्ते विस्तृते च त्रिलिङ्गकम्। क्लीबं वीणादिवाद्ये स्यात्पुलिङ्गस्तु सदागतौ। २. आनद्धं मुरजादौ च क्लीबं स्यात्सन्दिते त्रिषु। ३. शुषिरं वंशादिवाद्ये विवरेऽपि नपुंसकम्। शुषिरो न स्त्रियां गर्तो, वह्नौ रन्ध्रान्विते त्रिषु। सूर्म्यं सुषिरामिव इति प्रयोगात् दन्त्यादिः इति पक्षशाह्निकमाप्यस्थश्रुतौ। ४. घनः सान्द्रे दृढे दार्ढ्ये विस्तारे मुद्गरेऽम्बुदे। सङ्घे मुस्ते घनं मध्यनृत्तवाद्यप्रभेदयोः। इति हैमः। ५. मृदङ्गो घोषवाद्ययोः। इति हैमः। ६. हरीतक्याकृतिस्त्वङ्क्यो यवमध्यस्तथोर्ध्वकः। आलिङ्ग्यश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगाः। ७. दुन्दुभिस्तु येषां दितिसुते विषे। अक्षविन्दुत्रिकद्वन्द्वे। ८. आनकः पटहे भेर्यां मृदङ्गेध्वनदम्बुदे। ९. पटहो ना समारम्भे आनके पुंनपुंसकम्। उपवासं गृहं देहं लोहं पटहमित्यपि' इति पुंनपुंसकाधिकारे चन्द्रगोम्युक्तेः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वीणादण्डः प्रवालः स्यात् ककुभस्तु प्रसेवकः ।
कोलम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥
वाद्यप्रभेदा डमरु-मड्डु डिण्डिम झर्झराः ।
मर्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥

शब्दं जहातीति को वा) ये दो नाम तासा के हैं । जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय पुं० नपुं० दोनों है ।

१वीणा वगैरह बजाया जाता है जिस धनुष आकारवाले वस्तु विशेष से उसका—कोणः (कुण्यते शब्द्यतेऽनेन, घञ्) यह एक पुं० नाम है ॥ ६ ॥

२प्रवालः (प्रकर्षेण वल्यते संव्रियते, घञ्) यह एक पुं० नाम वीणा दण्ड का है जिसमें तीन तार लगे होते है । ३ककुभः (कं वातं स्कुभ्नाति पूरयति, कः, सलोपः) ४प्रसेवकः (प्रसेव्यते अङ्के स्थाप्यते, क्वुन्) ये दो पुं० नाम वीणा के निचले भाग के हैं । वीणा के तार रहित ढाँचेका = कोलम्बकः (कोल् चासौ अम्बकश्च) यह एक पुं० नाम है । अस्याः कायः इति सम्बन्धः ।

५उपनाहः (उपनह्यते बध्यते अनेन, घञ्) निबन्धनम् (निबध्यतेऽनेन, ल्युट्) ये दो नाम जहाँ तार बाँधे जाते हैं, उसके ऊपरी भाग के हैं जिनमें प्रथम पुं०, द्वि० नपुंसक है ॥ ७ ॥

डमरुः (डमिति शब्दम् इयतीति, ऋगतौ अस्मात् कुः गुणः) यह एक नाम डमरू का है । स एव महान् मड्डुः (उप्रत्यये पृषोदरादित्वात् साधुः) यह एक पुं० नाम महा डमरू का है ।

डिण्डिमः (डिण्डि'इति शब्दं मिनोति प्रकटयति, डः) यह एक नाम तम्बूरा का है ।

६झर्झरः (झर्झरशब्दं राति ददातीति कः) यह एक पुं० नाम झाँझ का है । मर्दलः (मर्दम् उपमर्दं लातीति, कः) यह एक पुं० नाम मृदङ्गाकार वाद्यविशेष का है ।

पणवः (पणं व्यवहारं वाति गच्छतीति, कः) यह एक पुं० नाम सींगा नामक वाजा का है । ७अन्ये = गोमुखहुडुकादयोऽपि बोध्याः ।

८नर्तकी (नृत्यति, ष्वुन्, ङीष्) ९लासिका (लसति श्लिष्यतीति ण्वुल्) ये दो स्त्री० नाम नाचने वाली के हैं । वस्तुतः ये दोनों शब्द विशेष्यगत लिङ्गवाले हैं ।

---

१. द्वयोस्तु कोणो वीणादेवर्दानं सारिका च सा । इति शब्दार्णवः । कोणो वाद्यप्रभेदे स्याद्वीणादीनां च वादने । एकदेशे गृहादीनामस्त्रौ च लगुडेऽपि च । इति मेदिनी । कोणो वीणादिवादने । लगुडेऽस्त्रौ लोहिताङ्गे । इति हैमः । २. प्रवालो विद्रुमे वीणादण्डेऽभिनवपल्लवे । इति हैमः । ३. ककुभो रागभेदेऽपि वीणाङ्केऽर्जुनपादपे । ४. प्रसेवस्तु वीणाङ्गस्यूतयोर्दृतौ । ५. उपनाहो व्रणलेपपिण्डे वीणानिबन्धने । ६. झर्झरः स्यात्कलियुगे वाद्यभाण्डे नदान्तरे । झल्लरी झर्झरी च द्वे केशचक्रे तु वाद्यके । ७. गोमुखं कुटिलागारे वाद्यभाण्डे च लेपने । हुडुकं मदमत्ते स्याद्दात्यूहे वाद्यभिद्यपि । ८. नर्तकः केवले पोटगलचारणयोर्नटे । नर्तकी लासिकायां चकरेण्वामपि योषिति ॥ ९. लासको केकिनर्तकौ । इति हैमः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात्।
तालः कालक्रियामानं लयः साम्यमथास्त्रियाम्॥ ९॥
ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने।
तौर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम्॥ १०॥

विलम्बितम् (करचरणादयो विलम्बतेऽत्रेति, क्तः) द्रुतम् (द्रवन्ति शीघ्रं गच्छन्ति करचरणादयोऽत्र, क्तः) [१]मध्यम् (विलम्बितद्रुतयोर्मध्ये भवत्वात्, अः) इन तीनों के अर्थ में क्रमिक—[२]तत्त्वम् (तननं तत् क्विप् तदस्यास्तीति वः, भत्वान्न जस्त्वम्) [३]ओघः (ओचनम् घञ् पृषोदरादित्वात् घत्वे गुणे) [४]घनम् (हननम्—हिंसनम्, अप् घनादेशश्च) इन तीनों का प्रयोग होता है। अभिप्राय यह कि विलम्बितादिको क्रमिक तत्त्वादि कहते हैं जैसे—विलम्बित के अर्थ में तत्व, द्रुत के अर्थ में ओघ और मध्य के अर्थ में घन शब्द का प्रयोग होता है। तत्त्वम् नपुं०, ओघः पुं०, घनम् नपुं० हैं।

[५]तालः (तलनम् प्रतिष्ठापनम्, घञ् कालस्य क्रियया: मानं परिच्छेदनम्) यह एक पुं० नाम ताल का है। जिसके द्वारा समय और क्रिया का माप हो उसे संगीतज्ञ ताल कहते हैं। दूसरे शब्दों में मात्रा गिनकर ताली बजाने को भी ताल कहते हैं।

[६]लयः (लयनम् श्लेषणम्, अच्) यह एक पुं० नाम लय का है। गान, वाद्य, पैर चलाने की क्रिया तथा समय के साम्य को लय कहते हैं॥ ९॥

अथास्त्रियाम् [७]ताण्डवम् (तण्डुना प्रोक्तम्, अण्) नटनम् (नट्यते आस्कन्द्यते, ल्युट्) [८]नाट्यम् (नटस्य कर्मेति, ष्यञ्) [९]लास्यम् (लसनम् क्रीडनम् ण्यत्) [१०]नृत्यम् (नर्तनम्, क्यप्) नर्तनम् (ल्युटि) ये छ नाम नाच के हैं, जिनमें प्रथम में 'अस्त्रियां' का सम्बन्ध होने से पुं० नपुं० दोनों हैं, शेष ५ शब्द नपुं० हैं।

तौर्यत्रिकम् (नृत्यगीतवाद्यमिदं त्रयं तारितुमर्हं तूर्यं मृदङ्गमुरजादि तत्र भवम् तौर्यं मृदङ्गादिशब्दः, त्र्योंऽशा यस्येति त्रिकम् तौर्येण उपलक्षितं त्रिकम् इति) यह एक नपुं० नाम सम्मिलित नाच, गान और वाद्य का है। यही नाच, गान और वाद्य नाट्य भी कहा जाता है। अभिप्राय यह कि तौर्यत्रिकम् और नाट्यम् (नटस्य इदम् ष्यः) ये दो नाम नाच के हैं॥ १०॥

---

१. मध्यं वलग्ने न स्त्री स्यान्न्याय्येऽन्तरेऽधमे त्रिषु। २. तत्त्वं परात्मनि। वाद्यभेदे स्वरूपे च। इति हैमः। ३. ओघो वेगे जलस्य च। वृन्दे परम्परायां च द्रुतनृत्योपदेशयोः। ४. संघे मुस्ते घनं मध्यतृत्तवाद्यप्रभेदयोः। इति हैमः। ५. तालः करतलेऽङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां च संमिते। गीतकालक्रियामाने करास्फाले द्रुमान्तरे॥ वाद्यभांडे च कांस्यस्य त्सरौ ताली जटौषधौ। क्लीबं तु हरिताले स्यात्। इति विश्वमेदिन्यौ। ६. लयस्तूर्यत्रयीसाम्ये संश्लेषणविलासयोः। इति हैमः। ७. ताण्डवं तृणभिन्नाट्यभेदयोः। इति हैममेदिन्यौ। ८. नाट्यं तौर्यत्रिके लास्ये। ९. लास्यं तौर्यत्रिके मतम्। नृत्ये च। इति विश्वः। १०. नृत्यं स्यात्ततेऽपि च। शाश्वते त्रिषु।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तकः।
स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाऽज्जुका ॥ ११ ॥
भगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः।
जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥
राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका।
देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

---

[१]अकुंसः (भ्रुवा कुंसयति भाषते, अच्) भ्रुकुंसः, भ्रूकुंसः ये तीन पुं० नाम स्त्रीवेषधारी पुरुष नर्तक के हैं। 'अङ्गहार' के पूर्व तक 'नाट्योक्तौ' का अधिकार है।

[२]गणिका (गणः = लम्पटगणः उपपतित्वेनास्त्यस्याः, ठन्) अज्जुका (अर्जयति नायकादर्थमुपार्जयतीति, उकन् रस्य जः) ये दो स्त्री० नाम वेश्या के हैं ॥ ११ ॥

आवुत्तः (आपनमाप् क्विप् आपमुत्तनोतीति, डः) यह एक पुं० नाम बहनोई का है। [३]भावः (भावयति विचारयतीति, अच्) यह एक पुं० नाम विद्वान् (वेत्ता) का है।

[४]जनकः-आवुकः (अवति रक्षतीति उकण्) यह एक पुं० नाम पिता एवं राजा का है।

युवराजः (युवा: चासौ राजा च) [५]कुमारः (कुमारयति क्रीडयति, अच्) भर्तृदारकः (दारयति नाशयति जनकस्य ऋणम्, ण्वुल् भर्तुः स्वामिनो दारकः पुत्रः) ये तीन पुं० नाम युवराज के हैं ॥ १२ ॥

नट्योक्तौ राजा [६]भट्टारकः (भटति भाषते इति, क्विप्, भट् चासौ तारकश्च) [७]देवः (दोव्यतीति, अच्) ये दो पुं० नाम राजा के हैं। भर्तृदारिका (भर्तुः दारिका) यह एक स्त्री० नाम राजकन्या का है।

[८]देवी (दीव्यतीति अच् स्त्रीत्वविवक्षायां, ङीप्) यह एक स्त्री० नाम राजपत्नी का है। [९]भट्टिनी (भट्टोऽस्याः पतित्वेन, इनिः) यह एक स्त्री० नाम राजा की साधारण स्त्री का है ॥१३॥

---

१. अकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्च भ्रुकुंसवत्। इति शब्दार्णवः। २. गणिका यूथिवैश्येभीतकारीषु ना तु दैवज्ञे। ३. भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु। क्रियालीलापदार्थेषु बुधजन्तुविभूतिषु। रत्यादौ च। ४. जनकः पितृभूपयोः। ५. कुमारोऽश्वानुचारके। युवराजे शिशौ स्कन्दे शुके वरुणपादपे। कुमारं जात्यकनके कुमारी त्वपराजिता। नदीभिद्रामतरुणी कन्यकानवमाल्युमा। जम्बूद्वीपविभागश्च। इति हैमः। ६. भट्टारको नृपे नाट्यवाचा, देवे तपोधने। इति मेदिनी। ७. देवं हृषीके देवस्तु नृपतौ तोयदे सुरे। इति हैमः। ८. देवी कृताभिषेकायां तेजनीस्पृक्कयोरपि। इति हेमचन्द्रः। ९. भट्टिनी द्विजभार्यायां, नाट्योक्तया राजयोषिति। गणिकानुचरैरज्जुकेति नाम्ना नृपेण सा। युवराजस्तु सर्वेण कुमारो भर्तृदारकः॥ भट्टारको वा देवो वा वाच्यो भृत्यजनेन सः। ब्राह्मणेन तु नाम्नैव राजन्नित्यृषिभिः स च॥ वयस्य राजन्निति वा विदूषक इमं वदेत्। अभिषिक्ता तु राज्ञासौ देवीत्यन्या तु भागिनी॥ भट्टिनीत्यपरैरन्या नीचैर्गोस्वामिनीति सा। इति शब्दार्णवः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रियः।
अम्बा माताऽथ बाला स्याद्वासूरार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥
अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठा निर्वहणे समे।
हण्डे हञ्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

वधयोग्य नहीं है यह कहने का अर्थात् दुहाई देने का—[१]अब्रह्मण्यम् (ब्रह्मणि साधुः यत्, न ब्रह्मण्यम्) यह एक नपुंसक नाम है। राष्ट्रियः (राष्ट्रे अधिकृतः घः) यह एक पुं० नाम राजश्यालक का है।

अम्बा (अम्ब्यते शब्दयते अः) यह एक स्त्री० नाम माता का है।

अथ बाला—वासूः (वास्यते गृहे निवास्यते, ण्यन्ताद्, ऊः) यह एक स्त्री० नाम कुमारी कन्या का है।

[२]आर्यः (अर्तुंयोग्यः, ऋ गतावित्यस्मात्, ण्यत्) [३]मारिषः (रिषति हन्ति इति कः, ततो निषेधार्थकमाशब्देन समासः, सहनशीलत्वात् मारिष इति) ये दो पुं० नाम मान्य पुरुष के हैं ॥ १४ ॥

[४]अत्तिका (ज्येष्ठा भगिनी अत्ता माता सैव, कन्) यह एक स्त्री० नाम बड़ी बहन का है। समे=समान अर्थ में (न तु समान लिङ्ग में) निष्ठा और निर्वहण का प्रयोग होता है। (निर्वहणे अर्थे निष्ठा वर्तते इति सम्बन्धः)। [५]निष्ठा (नियतं स्थानं यस्याः, अङ्) [६]निर्वहणम् (निर्वाहः, ल्युट्) ये दो नाम प्रस्तुत कथा समाप्ति के हैं जिनमें प्रथम स्त्री० द्वितीय नपुंसक हैं। किसी आचार्य के मत में नाटक में ५ सन्धियाँ होती हैं। उनमें ५वीं निर्वहण नामक सन्धि के उक्त दो नाम हैं ॥ १४½ ॥

नीचां प्रति–हण्डे (हिण्डते गच्छतीति, ए, धात्वादयवयवेकारस्याकारः) यह एक अव्यय नाम नीच दासीको बुलाने का है। चेटी प्रति हञ्जे (डस्य जः) यह एक अव्यय नाम साधारण दासी को बुलाने का है। सखी प्रत्याह्वानम्–[७]हला (हलति विलखति, आ) यह एक अव्यय नाम सखी को बुलाने का है ॥ १५ ॥

---

१. ब्रह्मण्यं स्याद्ब्रह्मसाधुब्रह्मदारुशनैश्चरे। २. कर्तव्यमाचरन्काममकर्तव्यमनाचरम्। तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृतः। इति वसिष्ठः। आर्यौ सज्जनसौविदौ। ३. मारिषः शाकभिधार्ये नाट्योक्तौ पुंसि भाषितः। इति मूर्धन्यान्ते रभसः। आर्ये मारिषमार्षकौ। इति शब्दार्णवः। मारिषः शाकभिद्यार्ये नाट्योक्त्या पुंसि योषिति। दक्षाम्बायाम्। ४. अत्तिका चान्तिका तथा। इति द्विरूपकोशः। अन्तिकं निकटे वाच्यलिङ्गं स्त्री सातलौषधौ। चुल्ल्यां ज्येष्ठभगिन्यां च नाट्योक्त्या कीर्त्यतेऽन्तिका। ५. निष्ठोत्कर्षव्यवस्थयोः। क्लेशे निष्पत्तौ नाशेऽन्ते निर्वाते याचने व्रते। ६. निर्वहणं तु निष्ठा स्त्री संहारश्च समापने। इति शब्दार्णवः। ७. वाला वासूः सखी एका। इति पोपालि तावत् हलाशब्दष्टावन्तो सखी पर्यायः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।
निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥

अष्टौ रसनामानि

शृङ्गार-वीर करुणाद्भुत-हास्य–भयानकाः ।
बीभत्स रौद्रौ च रसाः शृंगारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥
उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ।

---

[1]अङ्गहारः (हरणं हारः, घञ् , अङ्गस्य हारः = अङ्गस्य यथास्थानात् स्थानातरे नयनम् = अंगुली आदिका स्थानान्तरमें स्थापन) अङ्गविक्षेपः (अङ्गानां शरीरावयवानां विक्षेपः प्रेरणम्, घञ्) ये दो पुं० नाम नृत्य विशेष के हैं । अङ्गहारः तक 'नाट्योक्तौ' का अधिकार था ।

व्यञ्जकः (व्यनक्तीति, ण्वुल्) अभिनयः (अभिनयति अर्थं प्रापयतीति अच्) ये दो पुं० नाम वाग्व्यापार द्वारा मनोगत भाव को व्यक्त करने के हैं ।

आङ्गिकम् (अङ्गेन निर्वृतम् , ठक्) सात्त्विकम् (सत्वेन मनोवृत्या निर्वृत्तम् , ठक्) ये दो स्त्री० नाम भ्रूविक्षेप तथा मनोव्यापार से व्यक्त हुए भाव के हैं। सात्त्विक गुण आठ हैं। यथा—स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्त्विका गुणाः ॥ १६ ॥

शृङ्गारः, वीरः, करुणः, अद्भुतः, हास्यः, भयानकः, बीभत्सः, रौद्र इत्यष्टौ [2]रसाः (रस्यन्ते आस्वादयन्ते घञ्) ये आठ पुं० नाम पृथक् पृथक् रस के हैं। च शब्द से शान्त और वात्सल्य का भी संग्रह है ।

[3]शृंगारः (शृंगं सानु इयर्ति प्राप्नोतीति, अण्) [4]शुचिः (शोचत्यनेन इन् , किच) [5]उज्ज्वलः (उच्चैः ज्वलति प्रकाशते, अच्) ये तीन पुं० नाम शृंगार रस के हैं ॥ १७ ॥

उत्साहवर्द्धनः (उत्साह वर्द्धयतीति, ल्युः) [6]वीरः (वीरयति विक्रान्ति, प्राप्नोतीति पचाद्यच्) ये दो पुं० नाम वीर रस के हैं।

कारुण्यम् , (करुणस्य भावः, ष्यञ्) [7]करुणा (करणम् विक्षेपणम् , कृधातोरुनन्)

---

१. अंगहारस्त्वङ्गहारिर्द्वित्रादिमाम्बिकाम्बिका । इति शब्दार्णवः ॥ २. रसो गन्धरसे जले । शृङ्गारादौ विषे वीर्ये तिक्तादौ द्रवरागयोः । देहधातुप्रभेदे च पारदस्वादयोः पुमान् । स्त्रियां तु रसना पाटा शल्लकी कङ्गुभूमिषु । इति विश्वमेदिन्यौ ।

३. शृङ्गारो गजमण्डने । सुरते रसभेदे च शृगारं नागसंभवे । चूर्णेलवङ्गपुष्पे च इति हैमः । ४. शुचिः शुद्धे सितेऽनले । ग्रीष्माषाढानुपहतेषूपधाशुद्धमन्त्रिणि । शृङ्गारे च । इति हेमचन्द्रः । ५. उज्ज्वलस्तु विकासिनी । शृङ्गारे विशदे दीप्तेऽपि । इति हैमः । ६. वीरोजिने भटे श्रेष्ठे वीरं शृङ्ग्यां नतेऽपि च । वीरा गम्भारिकारम्भातामलक्येलवालुषु । मदिरा क्षीरकाकोली काष्ठोदुम्बरिकासु च । पतिपुत्रवतीक्षीरविदारी दुग्धिकास्वपि । इति हेमचन्द्रः । ७. करुणो रसवृक्षयोः । करुणा तु कृपायां स्यात् । इति हैमः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥
हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।
विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥
दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।
भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्रममी त्रिषु ॥ २० ॥

---

[१]घृणा (ध्रियते सेच्यतेऽनया, नक्, टाप्) [२]कृपा (कल्पनम् कृपार्थकक्रप्धातोरङ्संप्रसारणं च) दया (दयते रक्षत्यनया, अङ्) अनुकम्पा (अनुकम्पनम् किंचिच्चलनम् अः) अनुक्रोशः (अनुक्रोशत्यनेन घञ) ये ७ नाम करुणरस के हैं, जिनमें प्रथम नपुं०, शेष ५ स्त्री० और अनुक्रोशः पुं० है ॥ १८ ॥

अथो [३]हसः (हसनम्, अप्) हासः (घञ्) हास्यम् (ण्यत्) ये तीन नाम हास्यरस के हैं जिनमें आदि के दो पुं०, तृतीय स्त्री० हैं ।

[४]बीभत्सम् (बधितुं निन्दितुमिच्छतीति सन्, ततो भावे घञ् अर्शाद्यच् वा) [५]विकृतम् (विकरणम्, क्तः, ये दो त्रि० नाम बीभत्सरस के हैं । इदं द्वयन्त्रिष्विति संबन्ध [६]विस्मयः (विस्मयनम् ईषद्धसनम्, अच्) अद्भुतम् (आश्चर्यार्थेऽव्ययम्—अत्, तस्य भवनम्, डुतच्) आश्चर्यम् (आ चर्यते अभिनीयते इति निपातनात्) [७]चित्रम् (चित्रयति चित्रकरणार्थकचित्रधातोः ण्यन्तात्, अच्) ये ४ नाम अद्भुतरस के हैं, जिनमें प्रथम पुं०, शेष ३ त्रि० हैं ॥ १९ ॥

अथ–[८]भैरवम् (भीरोरिदम्, अण्) [९]दारुणम् (दारयति विदारयति चित्तम्, ऊनन्) [१०]भीषणम् (भीषयतेऽनेन, ल्युः) [११]भीष्मम् (बिभेति अस्मात् मक् षुगागमश्च) [१२]घोरम् (हन्तीति, अच् घुरादेशश्च) [१३]भीमम् (षुगभावे) [१४]भयानकः (बिभेत्यस्मात्, आनक्) भयंकरम् (भयं करोतीति, खच्) [१५]प्रतिभयम् (प्रतिगतं भयमस्मिन्) ये ९ त्रि० नाम भयानक रस के हैं ।

---

१. घृणा तु स्याज्जुगुप्सायां करुणायाम् । इति हैमः । २. कृपो द्रोणश्यालके स्याद्द्रोणपत्न्यां कृपो दयायाम् । ३. तत्र हासो हसो हास्यं घर्घरं हासिका स्त्रियाम् । इति शब्दार्णवः ॥ ४. बीभत्सो नार्जुने क्रूरघृणात्मविकृते त्रिषु । विष्ठाकामजउद्वेगी क्षोभणो रुधिरादिजः बीभत्सो द्विविधः । ५. विकृतो वैकृतोऽथाग्रहायण्यामग्रहायणम् । इति शब्दार्णवः । विकृतं त्रिषु बीभत्से रोगितेऽसंस्कृतेऽपि च । विश्वः । ६. विस्मयोऽद्भुतदर्पयोः इति हैमः । ७. चित्रंखे तिलकेऽद्भुते । आलेख्ये कर्बुरे । चित्रात्वाखुपर्णी सुभद्रयोः । गोडुम्बाप्सरसोर्दन्त्यां नक्षत्रोरगभेदयोः । इति हेमचन्द्रः । ८. भैरवः पुंसि शंकरे, भीषणे त्रिषु । रागभेदे च । ९. दारुणो रसभेदे ना । त्रिषु तु स्याद्भयावहे । इति विश्वमेदिन्यौ । १०. भीषणं रसे शल्लक्यां, ना गाढे दारुणे त्रिषु । ११. भीष्मो रुद्रे च गाङ्गेये राक्षसे च भयंकरे इति हैमः । १२. घोरो हरे दारुणे च । इति हैमः । १३. भीमो वृकोदरे घोरे शंकरेऽत्यम्लवेतसे । इति हैमः । १४. भयानकः स्मृतौ व्याघ्रे रसे राहौ भयंकरे । १५. प्रतिभयं भये भीष्मे । इति हैमः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।
विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥
गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः ।
दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः ॥ प्र० ॥

---

[1]रौद्रम् (रुद्रस्य इदम् , अण्) [2]उग्रः (उच्यते, रन्) ये दो त्रि० नाम रौद्ररस के हैं।

ये १४ (अमी अद्भुताद्याश्चतुर्दश तद्वति त्रिषु इति सम्बन्धः—अद्भुत से लेकर उग्र पर्यन्त) नाम गुण वाचक ('रस' अर्थ में प्रयुक्त) होने पर नपुं० हैं और विशेषण होने पर त्रि० हैं ॥ २० ॥

[3]दरः (दीर्यते भीषयते अस्मात् , अप्) [4]त्रासः (त्रस्यते उद्विज्यते, घञ्) [5]भीतिः (बिभेति अस्मात् क्तिन्) भीः (क्विपि) साध्वसम् (साधूनामसनम्, अच्) [6]भयम् (भयनं अच्) ये छ नाम भय के हैं, जिनमें प्रथम दो पुं०, भीतिः, भीः स्त्री० शेष दो नपुं० है।

[7]भावः (भावयतीति अण्) यह एक पुं० नाम रतिविषयक मानसिकविकार का है। [8]अनुभावः (अनुभावयतीति, अण्) यह एक पुंलिंग नाम रतिविषयक मानसिकविकार के सूचक रोमाञ्चआदि का है ॥ २१ ॥

गर्वः (गर्वयते मानयति, घञ्) [9]अभिमानः (अभि सर्वतः मानः, मननम् , घञ्) अहंकारः (अहं करणम् घञ्) ये तीन पुं० नाम अहंकार के हैं।

मानः[10] (मत्सदृशोऽन्यो नास्ति इति मननमवबोधनम् , घञ्) चित्तसमुन्नतिः (नमनम् नतिः, सम्यक् नतिः समुन्नतिः, चित्तस्य समुन्नतिः) ये दो नाम चित्तोत्कर्ष के हैं, जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय स्त्रीलिंग हैं ॥ २१$\frac{1}{2}$ ॥

दर्पः (दृप्यते, भावे घञ्) अवलेपः (अवलेपनम् अवदूषणम् घञ्) अवष्टम्भः; चित्तोद्रेकः (चित्तस्य उद्रेकः उन्नतिः) स्मयः (स्मयनम्) मदः (मदयतीति) ये ६ पुं० नाम घमण्ड के प्र० हैं।

---

१. रौद्रो भीष्मे रसे तीव्रे रौद्री गौर्याम् इति हैमः । २. उग्रः शूद्रासुते क्षत्राद्रुद्रे पुंसि, त्रिषूत्कटे । स्त्री वचाक्रुद्रयोः ।

३. दरः स्याद्भयगर्तयोः । दरी तु कन्दरे । इति हैमः ४. त्रासो भये मणेर्दोषे । इति हैमः । ५. भीतिर्भये स्त्रियाम् । भीतं भये भीतियुते त्रिषु । ६. भयं भीतो भयंकरे । कुब्जकपुष्पे । इति हैमः । स्यार्दतनमृतीया च गर्हा, चाथ भयं भिया । त्रासोत्त्रसौ दरो भीतमातङ्को भीश्च साध्वसम् । इति शब्दार्णवः । आशङ्का साध्वसं दरः । भिया च । इति हैमः । ७. भावोऽभिप्रायवस्तुनोः । इति हैमः । ८. अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचने । इति मेदिनी । ९. अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः । १०. मानं प्रमाणे प्रस्थादौ मानश्चित्तोन्नतौ ग्रहे । इति हैमः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिभवस्य नव नामानि

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥
रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ।
मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा सापत्रपाऽन्यतः ॥ २३ ॥
क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।
अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

अनादरः (न आदरः) [१]परिभवः (परि भवनम्, अप्) परीभावः (घञ्, दीर्घः) तिरस्क्रिया (तिरस्करणम्, शः, सत्वम्) रीढा (रेहणम् हिंसनम्, क्तः) अवमानना (अव माननम्, मनधातोर्ण्यन्तात् युच्) अवज्ञा (अवज्ञानम्, अङ्) अवहेलनम् (अनादरार्थकहेडृ-धातोर्घञ् अवहेलः) असूर्क्षणम् (सूक्ष्यते आद्रियते, ल्युट् ततो नञा समासः) ये नौ नाम अनादर के हैं, इनमें प्रथम तीन पुं०, ४ स्त्री० शेष दो नपुं० हैं ॥ २२½ ॥

मन्दाक्षम् (मन्दं अक्षं ज्ञानमत्र) ह्रीः (जिह्रेतीति क्विप्) [२]त्रपा (त्रपते लज्जते अनया, अङ्) [३]व्रीडा (व्रीडनम् लज्जनम् अः) लज्जा (लज्जनम् व्रीडनम्, ओलस्जी धातोरप्रत्ययः सस्य जः) ये ५ नाम लज्जा के हैं, जिनमें प्रथम नपुं० शेष ४ स्त्री० हैं। सालज्जा अन्यतश्चेत्— [४]अपत्रपा (अपत्रपते पितुः सकाशात लज्जते, अङ्) यह एक स्त्री० नाम पिताके समीप होनेवाली लज्जा का है ॥ २३ ॥

[५]क्षान्तिः (क्षमणम् सहनम्, क्तिन्) तितिक्षा (तेजितुं क्षमितुमिच्छतीति सन्नन्तादप्, टाप्) ये दो स्त्री० नाम क्षमा के हैं।

अभिध्या (अभिसर्वतः ध्यानम् चिन्तनम्, अङ्) यह एक स्त्री० नाम [६]परद्रव्य हरण करने की इच्छा का है।

अक्षान्तिः (असहनम्, सहनार्थकक्षमू धातो क्तिन् नञा समासः) ईर्ष्या (ईर्ष्यणम् अक्षमणम् अः) ये दो स्त्री० नाम दूसरे की उत्कर्षताको न सहने के हैं।

गुणेषु दोषारोपः—[७]असूया (असूयनम् दोषारोपणम्, असूयार्थक असूञ् धातोर्यकि अप्रत्ययः) यह एक स्त्री० नाम गुणों में दोष निकालने का है ॥ २४ ॥

---

१. परापूर्वकादपि भुवेऽपि पराभवः। पराभवस्तिरस्कारे नाशे। इति हैमः। व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्। इति प्रयोगश्च। २. त्रपा लज्जाकुलटयोः। इति हैमः। ३. गण्डूपगर्जभुजजागरहारकीलज्वालाजटारभसवर्तकगर्धशृङ्गाः व्रीडादयश्च वरटश्च वराटकश्च उत्कण्ठवाणकरकाश्च समामयाश्च। इति स्त्रीलिंग पुंलिङ्गकथने रभसः। व्रीडोऽक्लीवे त्रपा लज्ज। ४. ह्रीर्लज्जापत्रपा व्रीडा। इति रत्नकोशोक्तेः लज्जामात्रेऽपत्रपा शब्दस्य प्रयोगः।

५. अषित क्षाम्यतेः क्षान्तिः पितस्तु क्षमतेः क्षमा। इति। क्षमः शक्ते हिते युक्ते क्षमावति। क्षमा क्षान्तौ क्षितौ इति हैमः। ६. परस्वविषये इति पाठः। ७. असूया त्वभ्यसूया च। इति शब्दार्णवः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम्।
पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥
कोप-क्रोधामर्ष-रोष-प्रतिघा रुट्-क्रुधौ स्त्रियौ।
शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥
प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽथ दोहदम्।
इच्छाकाङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

वैरम् (वीरस्य कर्म भावो वा अण्, निर्देशात् सिद्धिः) विरोधः (विरोधनम्, घञ्) विद्वेषः (विद्वेषणम्, घञ्) ये तीन नाम शत्रुता के हैं जिनमें प्रथम नपुं० शेष दो पुं० हैं।

[1]मन्युः (मन्यते ज्ञायतेऽसौ युः) शोकः (शोचनम्, घञ्) शुक् (शोचतीति क्विप्) ये तीन नाम शोक के हैं। जिनमें आदि के दो पुं० शेष तृतीय स्त्री० है।

पश्चात्तापः (पश्चात् तपनम्, घञ्) अनुतापः (अनुतपनम्, घञ्) [2]विप्रतीसारः (सरणम्, सारःवि+प्रति+सृ+घञ्, दीर्घः) ये तीन पुं० नाम पछतावे के हैं ॥ २५ ॥

कोपः (कोपनम् क्रोधनम्, घञ्) क्रोधः (क्रोधनम् कोपनम्, घञ्) अमर्षः (मर्षणम् सहनम्, घञ् ततो नञा समासः) रोषः (रोषणम् हिंसनम् घञ्,) [3]प्रतिघः (प्रतिहननम्, डः, कुत्वम्) रुट् (रोषतीति क्विप्) [4]क्रुध् (क्रुध्यतीति, क्विप्) ये ७ नाम क्रोध के हैं जिनमें आदि के ५ नाम पुं० हैं और शेष दो स्त्री० हैं।

शुचौ चरिते—[5]शीलम् (शीलयति समाधयतीति, अच्) यह एक नपुं० नाम सुस्वभाव का है।

उन्मादः (उन्मदनम् घञ्) चित्तविभ्रमः (चित्तस्य विभ्रमः विपर्यासः) ये दो पुं० नाम पागलपने के हैं ॥ २६ ॥

[6]प्रेमा (प्रियस्य भावः इमनिच्, प्रादेशश्च) प्रियता (तलि) हार्दम् (हृदयस्य कर्म, अण्, हृदादेशश्च) प्रेम (प्रयणम्=तर्पणम्, मनिन्) [7]स्नेहः (स्नेहनम्, घञ्) ये ५ नाम स्नेह के हैं, जिनमें प्रेमा पुं० प्रियता स्त्री० हार्दम् और प्रेम नपुं०, स्नेहः पुं० हैं।

अथ—[8]दोहदम् (दोहम् आकर्ष ददातीति, कः) इच्छा (एषणम्, शप्रत्ययान्तो निपातः) काङ्क्षा (काङ्क्षणम्=एषणम्, अः) स्पृहा (स्पृहयतीति अङ्, टाप्) [9]ईहा (ईषते चेष्टते अः,) [10]तृट् (तर्षणम् क्विपि, तृषाऽपि भागुरिमते) वाञ्छा (वाञ्छनम्) लिप्सा

---

१. मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि। इति हैमः। २. विप्रतीसार उद्दिष्टः कौकृत्ये नुशये रुषि। इति मेदिनी। विप्रतिसारस्त्वनुशये रुषि। कौकृत्ये। इति हैमात् ह्रस्वतृतीयोऽपि। ३. प्रतिघौ रुट् प्रतीघातौ। इति हैमः। ४. कोधो भामः क्रुधा रुषा। इति शब्दार्णवः। भामः क्रोधे रवौ दीप्तौ। ५. शीलं स्वभावे सद्वृत्ते। इति विश्वः निष्ठा च शीलं चारित्रं चरितं तथा। इति रत्नकोषः। ६. प्रेमाऽस्त्री स्नेहनमणोः। ७. स्नेहः प्रेम्णि घृतादिके। ८. दोहदो गर्भलक्षणे। अभिलाषे तथा गर्भे। इति हैमः। ९. इहोद्यमवाञ्छयोः। १०. तृट् लिप्सायामुदन्यां स्मरपुत्र्यामपि स्त्रियाम् तृषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः।
उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥
स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे।
उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्म कैतवे।

(लब्धुमिच्छा सन् अः, टाप्) मनोरथः (मन एव रथोऽत्र) [1]कामः (कामनम् , घञ्) अभिलाषः (अभिलषणम् कामनम्, घञ्) [2]तर्पः (तर्षणम् , घञ्) ये १२ नाम इच्छा के हैं, जिनमें प्रथम नपुं० मध्य के ७ स्त्री० और अन्त के ४ शब्द पुं० हैं।

स तर्षः महांश्चेत्—[3]लालसा (लालयते ईप्सते इति असण् , टाप्) यह एक स्त्री० पुं० नाम अतितृष्णा का है। स्त्रीलिङ्ग निर्देश आवन्तता सूचनार्थ है।

[4]उपाधिः (आधेः समीपः, किः) धर्मचिन्ता (धर्मस्य चिन्ता) ये दो नाम धर्मविषयक चिन्ता के हैं, जिनमें प्रथम पुं० द्वितीय स्त्री० है।

मानसी व्यथा—[5]आधिः (आधीयते आध्रियते दुःखमनेन, किः) यह एक पुं० नाम मन की पीड़ा का है ॥ १७–२८ ॥

चिन्ता (चिन्तनम् , अङ्) [6]स्मृतिः (स्मरणम् , क्तिन्) आध्यानम् (आधीयते ल्युट्) ये ३ नाम स्मरण (याद) करने के हैं जिनमें प्रथम दो स्त्री० और तृ० नपुं० हैं।

उत्कण्ठा (उत्कण्ठनम् , अः) [7]उत्कलिका (उत्कलनम् , क्वुन्) ये दो स्त्री० नाम कामादिजन्य स्मरण के हैं :

[8]उत्साहः (उत्साहनम् , घञ्) अध्यवसायः (अध्यवसानम् , अधि+अव+षो+घञ+युक्) ये दो पुं० नाम उत्साह के हैं।

स उत्साहः अतिशक्तिभाक् चेत् वीर्यमित्यन्वयः—[9]वीर्यम् (वीरे साधुः, वत्) यह एक नपुं० नाम अतिशक्तिमुक्त उत्साह का है ॥ २९ ॥

कपटः (के मस्तके पट इव आच्छादकः, अच्) [10]व्याजः (व्यजन्ति क्षिपन्त्यनेन, घञ्) [11]दम्भः

लिप्सातृषोः स्त्रियाम्। इति मेदिनी। भागुरिमते टाबन्ताऽपि।

१. कामः स्मरेच्छयोः पुमान्। रेतस्यपि निकामे च काम्येऽपि स्यान्नपुंसकम्। २. तर्षो लिप्सोदन्ययोः। ३. लालसौत्सुक्यतृष्णातिरेकयाच्छासु च द्वयोः। इति विश्वमेदिन्योः। ४. उपाधिस्तु धर्मध्याने विशेषणे। कुटुम्बव्यापृते छद्मनि इति हैमः। ५. आधिर्मनोतौ व्यसनेऽधिष्ठाने बन्धकाशयोः। ६. स्मृतिः स्मरणधीच्छासु शास्त्रे। इति हैमः। ७. उत्कलिका तु हेलायां तरङ्गोत्कण्ठयोरपि। चिन्ता तु स्मृतिराध्यानं स्मरणं, सस्पृहे पुनः। उत्कण्ठोत्कलिके तस्मिन् , अभिध्या तूभयोरपि। इति शब्दार्णवः। ८. उत्साहस्तूद्यमे सूत्रे। ९. वीर्यं तेजः प्रभावयोः। शुक्रे शक्तौ च। अतिशयशक्तिर्वीर्या। इति अमरमालया स्त्रीत्वमपि। १०. व्याजः शाठ्येऽपदेशे च इति विश्वः। ११. दम्भः कल्के कैतवे च इति हेमचन्द्रः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥
कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्।
स्त्रीणां विलास-बिब्बोक विभ्रमाः ललितं तथा ॥ ३१ ॥
हेलालीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः।

(दभ्यतेऽनेन घञ्) [1]उपधिः (उपधीयते आरोप्यतेऽनेन, किः) [2]छद्म (छाद्यते अपवार्यते अनेन, मनिन्, ह्रस्वः) [3]कैतवम् (कितवस्य कर्म भावो वा अण्) कुसृतिः (कुत्सिता सृतिः सरणम्, क्तिच्) [4]निकृतिः (निकृष्टा कृतिः क्रिया परप्रतारणरूपा) शाठ्यम् (शठतीति अच्, तस्य कर्म, ष्यञ्) ये नौ नाम छल के हैं जिनमें कपटः पुं० नपुं०, व्याजः, दम्भः, पुं०, छद्म, कैतवम्, शाठ्यम् नपुं०, कुसृतिः, निकृतिः स्त्रीलिङ्ग हैं।

[5]प्रमादः (प्रमद्यते प्रहर्षयते, घञ्) अनवधानता (अवधानस्य भावः, नञाः, नञा समासः) ये दो नाम असावधानी के हैं, जिनमें प्रथम पुं०, द्वि० स्त्री० है ॥ ३० ॥

कौतूहलम् (कुतूं चर्मनिर्मितं तैलपात्रं हलतीति, कः, अण्, अणभावे-[6]कुतूहलम्) [7]कौतुकम् (कुतूमिव कायति शब्दं करोतीति, कः, ह्रस्वत्वमण् च, कुतुकम्, अणभावे)—ये ४ नपुं० नाम आश्चर्ययुक्त खेल तमाशा के हैं ॥ ३०$\frac{1}{2}$ ॥

शृङ्गारादि और मनोविकार से स्त्रियों में विलासादि ६ प्रकार की क्रियायें ([8]अलङ्कार) होती हैं। जो—[9]विलासः, [10]विब्बोकः, [11]विभ्रमः (३ पुं०) [12]ललितम् (न०) [13]हेला और [14]लीला (स्त्री०) कहलाती हैं। ये 'हाव' (हवनम् घञ्) शब्द वाच्य हैं।

१. उपधिर्व्याजचक्रयोः। २. छद्म शाठ्येऽपदेशे घातिकर्मणि। ३. कैतवं द्यूतदम्भयोः। इति हैमः। ४. निकृतिर्भर्त्सने क्षेपे शठे शाठ्येऽपि च स्त्रियाम्। इति विश्वमेदिन्यौ। ५. प्रमादः संमदे मत्ते स्त्रियामुन्मदयोषिति। ६. कुतूहलं कौतुके स्यात्प्रशस्तेऽपि च दृश्यते। ७. कौतुकं नर्मणी च्छायामुत्सवे कुतुके मुदि। पारम्पर्यागतख्यातमङ्गलोद्वाहसूत्रयोः। गीतादौ भोगकाले च। ८. अलङ्कारश्च नाट्यज्ञैर्ज्ञेया भावरसाश्रयाः। यौवनेऽभ्यधिकाः स्त्रीणां विकारा वक्त्रगात्रजाः ॥ ९. विलासोऽङ्गे विशेषो यः प्रियाप्तावासनादिषु। विलासो हावभेदे स्याल्लीलायामपि पुंस्ययन्। १०. बिब्बोकोऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः। ११. चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो मतः। अथ विभ्रमः। शोभायां संशये हावे। इति हैमः। विभ्रमो भ्रान्तिहावयोः। १२. अनाचार्योपदिष्टं स्याल्ललितं रतिचेष्टितम्। ललितमीप्सिते। लडिते हावभेदे स्यात्। १३. स्याद्भावसूचको हावो हेलाऽस्यैवानुभावभम्। प्रौढेच्छा सुरते हेला' इति वा। हेला स्त्रियामवज्ञायां विलासे वारयोषिताम्। १४. प्रियस्यानुकृतिर्लीला। श्लिष्टा वाग्वेषचेष्टितैः। लीला केलिर्विलासश्च शृंगारभावजा क्रिया। इति शब्दार्णवः। लीला विलासो विच्छित्तिर्विभ्रमः किलकिञ्चितम्। मोट्टायितं बिब्बोको ललितं तथा विहृतं मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः। इति नाटकरत्नकोषः। मण्डनानादरन्यासो विच्छित्ती रूपदर्पतः। स्यादङ्गरागे। हावविच्छेदयोरपि। हर्षाद्रुदितगीतादिव्यामिश्रं किलकिञ्चितम्। मोट्टायितं प्रियं स्मृत्वा साङ्गभङ्गविजृम्भणम्। दुःखोपचारः सौख्येऽपि हर्षात्कुट्टमितं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा खेला च नर्म च ॥ ३२ ॥
व्याजोऽपदेशो लक्ष्य च क्रीडा खेला च कूर्दनम्।
घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
अवहित्थाऽऽकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ।
स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

---

[1]द्रवः (द्रवणम्, अप्) [2]केलिः (केलनन् क्रीडनम्, इन्) परीहसनम् घञ् उपसर्गस्य दीर्घः) [3]क्रीडा (क्रीडनम्, अः) खेला (खेलनम्, अः) नर्म (नरतीति, नृ नयेऽस्मात् मनिन्) ये ६ नाम क्रीडा के हैं, जिनमें प्रथम पुं०, क्रीडा लीला स्त्री०, नर्म नपुं० हैं ॥३१ ३२॥

व्याजः (व्यजति क्षिपन्त्यनेन, घञ्) [4]अपदेशः (अपदेशनम् अतिसर्जनम्, घञ्) लक्ष्यम् (लक्षणम् आलोचनम्, ण्यत्) ये तीन नाम बहाना करने के हैं, जिनमें प्रथम दो नाम पुं० हैं और अन्त्य का एक नपुं० है।

क्रीडा (क्रीडनम् विहरणम्, अः) खेला (खेलनम् चलनम्, अः) कूर्दनम् (कूर्दति क्रीडतीति, ल्युट् दीर्घः) ये तीन नाम खेल के हैं, जिनमें प्रथम दो स्त्रीलिङ्ग हैं और कूर्दनम् नपुंसक हैं।

[5]घर्मः (जिघर्ति क्षरतीत्यङ्गमनेनेति निपातितः) निदाघः (निदह्यते तप्यतेऽङ्गमनेन, घञ्, कुत्वम्) [6]स्वेदः (स्विद्यतेऽन्नमनेन. घञ्) ये तीन पुं० नाम पसीना उत्पन्न करने वाले ताप के हैं।

[7]प्रलयः (प्रलीयते, अच्) नष्टचेष्टता (नष्टा चेष्टा यस्य तस्य भावः तल्) ये दो नाम मूर्छा के हैं, जिनमें प्रथम पुं० द्वि० स्त्रीलिङ्ग है ॥ ३३ ॥

अवहित्था (अवहिः स्थितिः स्थानम्, कः, सस्य तः) आकारगुप्तिः (आकारस्य गोपनम्; क्तिन्) ये दो स्त्री० नाम चेहरे प्रकट हुए भाव को छिपाने के हैं।

संवेगः (संवेजनम् संचलनम्, घञ्) [8]संभ्रमः (संभ्रमणम्, घञ्) ये दो पुं० नाम हर्षादि के कारण कार्य में शीघ्रता करने के हैं ॥ ३३½ ॥

उत्प्रासेन (उत्प्रासनम् क्षेपणार्थकासुधातोर्यति दीप्त्यादानार्थकासधतर्वा घञ्) आधिक्येन क्षेपणेन वा सहितः—सोत्प्रास हासः—आच्छुरितकं स्यादित्यन्वयः—[9]आच्छुरितकम्

मतम्। वक्तव्यभाषणं व्याजाद्विहृतं दार्शितेङ्गितम्। १. द्रवो विद्रवनर्मणाः। प्राद्रवे रसगत्योश्च। इति हैमः। २. केली इति स्त्रियामपि। केलीषु तद्दानगुणान्निपीय' इति नैषधात्। इति मुकुटः। ३. क्रीडा क्रेलिप्रकारे स्यात्खेलावज्ञानयोरपि। इति विश्वमेदिन्यौ। ४. अपदेशः पुमांल्लक्ष्ये निमित्तव्याजयोरपि। लक्ष्यं स्यादपदेशेऽपि शरव्येऽपि नपुंसकम्। इति मेदिनी। संख्यायां च न ना लक्षं न क्लीबं व्याजशरव्ययोः। इति मूर्धन्यान्ते रभसः। ५. घर्मः स्यादातपे ग्रीष्मेऽप्युष्णस्वेदाम्बुनोरपि। ६. स्वेदो घर्मे स्वेदने च। इति हैमः। ७. प्रलयो मृत्युकल्पान्तमूर्च्छापयोषु पुस्ययम्। ८. संभ्रमः साध्वसेऽपि स्यात्संवेगादरयोरपि। ९. स्यादाच्छुरितकं हासनखराघातभेदयोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मध्यमः स्याद्विहसितम्, रोमाञ्चो रोमहर्षणम्।
क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम्॥ ३५॥
विप्रलम्भो विसम्वादो रिङ्गणं स्खलनं समे।

पञ्च निद्राया नामानि

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि॥ ३६॥

(आच्छुरणं परिच्छेदनम् छुर धातोः भावे क्तः ततः स्वार्थे कन्) यह एक नपुं० नाम साभिमान हंसने का है।

स हासोऽल्पः—[1]स्मितम् (स्मयते ईषत् हसतीति, क्तः) यह एक नपुं० नाम मुस्कुराने का है॥ ३४॥

स हासः मध्यम इत्यन्वयः—[2]विहसितम् (विशेषेण हसनम्, भावेक्तः) यह एक नपुं० नाम साधारण हँसने का है।

[3]रोमाञ्चः (रोम्णामञ्चनम्, घञ कुत्वाभावः) रोमहर्षणम् (रोम्णां हर्षणम्) ये दो नाम रोमाञ्च के हैं जिनमें प्र० पुं० द्वि० नपुं० है।

[4]क्रन्दितम् (क्रन्दते स्मेति, क्तः) रुदितम् (रोदतीति, क्तः) [5]क्रुष्टम् (क्रोशते स्मेति, क्तः) ये तीन नपुं० नाम रोने के हैं।

जृम्भः (जृम्भते गात्रं विनमतीति, घञ् अप्रत्ये [6]जृम्भाऽपि) जम्भणम् (ल्युटि) ये दो नाम जम्भाई के हैं, जिनमें प्र० त्रिलिं० द्वि० नपुं० है॥ ३५॥

विप्रलम्भः (विशेषेण प्रलम्भनम्, घञ्) विसंवादः (विरुद्धं सम्यक् वदनम्, घञ्) ये दो पुंल्लिङ्ग नाम धोखा युक्त वचन (स्वीकृत कार्य को न करने) के हैं।

रिङ्गणम् (रिङ्गयते गम्यते ल्युट्) स्खलनम् (स्खल्यते, ल्युट्) ये दो नपुं० नाम धर्म मार्ग से च्युत होकर चलने, बालकों के घुटने के बल चलने, फिसलने आदि के हैं) समे= समानार्थे समानलिङ्गे चेत्यन्वयः॥ ३५½॥

निद्रा (निन्द्यतेऽनया कुत्सार्थकनिदिधातोः रक् नलोपश्च) [7]शयनम् (शीयते ल्युट्) [8]स्वापः (ञिष्वप् धातोः घञ्) [9]स्वप्नः (नन्) [10]संवेशः (संवेशनम् प्रवेशनम्

---

१. इषद्विकासितैर्दन्तैः कटाक्षैः सौष्टवान्वितैः। अलक्षितद्विजद्वारमुत्तमानां स्मितं भवेत्। २. आकुञ्चितकपोलाक्षं सस्वनं निःस्वनं तथा। प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं बुधाः। ३. पुलको गजान्नपिण्डे रोमाञ्चे प्रस्तरान्तरे। अस्त्रराज्यां मणिदोषे चषके तालके कृमौ। कण्टकः क्षुद्रवैरिणि। वेणौ द्रुमाङ्गे रोमाञ्चे। पुलकः पुनः। रोमाञ्चकण्टकौ रोमविक्रिया रोमहर्षणम्। रोमोद्गम उद्धर्षणमुल्लासनकमित्यपि। इति हैमात्। ४. अथ क्रन्दितमाह्वाने रुदिते च नपुंसकम्। ५. क्रुष्टं रोदनरावयोः। ६. जृम्भां विकासजृम्भणयोस्त्रिषु।

७. शयनं सुरते निद्राशय्ययोश्च नपुंसकम्। ८ स्वापः शयननिद्रयोः स्पर्शाज्ञतायामज्ञाने। ९. स्वप्नः स्वापे प्रसुप्तस्य विज्ञाने दर्शने पुमान्। १०. संवेशः स्वापस्त्रीरतबन्धयोः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तन्द्री प्रमीला, भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम् ।
अदृष्टिःस्यादसौम्येऽक्षिण संसिद्धिः प्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥
स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाऽथ वेपथुः ।
कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

॥ इति नाट्यवर्गः ॥

१सुप्तिरपि) ये ५ नाम निद्रा के हैं जिनमें प्रथम स्त्री० शयनम् नपुं० और शेष ३ शब्द पुं० हैं ॥ ३६ ॥

२तन्द्री (तन्द्रायाः करणम् ण्यन्तात् ङीष्) प्रमीला (प्रमीलनम् , अः) ये दो स्त्री० नाम तन्द्रा (आलस्य) के हैं।

भ्रकुटिः (भ्रुवोः कुटिः कौटिल्यम् इन् , आकारादेशे, ह्रस्वे, तदभावे च भ्रुकुटिः, भ्रूकुटिः इति रूपत्रयम् पृषोदरादित्वात् 'भृकुटि' इत्यपि) ये तीन स्त्री० नाम क्रोधादि वश भौं चढ़ाने के हैं।

असौम्येऽसुन्दरेऽक्षिण—अदृष्टिः (विरुद्धा दृष्टिः) यह एक स्त्री० नाम असौम्य (क्रूर) दृष्टि का है।

३संसिद्धिः (संसेधनम् , क्तिन्) प्रकृतिः (प्रकरण, क्तिन्) दोनों का स्त्रीत्व ज्ञान कराने के लिए ही 'इमे' का प्रयोग है। स्वरूपं (स्वं रूपम्) स्वभावः (स्वो भावः) ४निसर्गः (निसर्जनम् घञ्) ये ५ नाम स्वभाव के हैं, जिनमें प्रथम दो स्त्री० स्वरूप शब्द नपुं०, शेष दो पुंलिङ्ग हैं।

अथ वेपथुः (वेपनम् कम्पनम् , अथुच्) कम्पः (कम्पनम् , घञ्) ये दो पुं० नाम कम्प के हैं।

अथ ५क्षणः (क्षणोति हन्ति दुःखम् , अच्) उद्धर्षः (उद्धर्षयति उद्गतो हर्षोऽत्र वा अच्) ६महः (महनम् , महतीति वा घञ्) ७उद्धवः (उद्धुनोति दुःखम् , अच्) ८उत्सवः (उत्सुवतीति, अच्) ये ५ पुं० नाम उत्सव के हैं ॥ ३७–३८ ॥

॥ इति नाट्यवर्गः ॥

---

१. सुप्तिः स्पर्शाज्ञतानिद्राविश्रम्भे शयने स्त्रियाम् । इति मेदिनी । २. तन्द्री निद्राप्रमीलयोः । ३. संसिद्धिः प्रकृतौ सिद्धौ मदोग्रायामपि स्त्रियाम् । ४. निसर्गः सृष्टौ स्वभावे च । इति हैमः । ५. क्षणः काल विशेषे स्यात्पर्वण्यवसरे महे । व्यापारविकलत्वे च परतन्त्रत्वमध्ययोः । इति हैमः । ६. मही नचन्तरे भूमौ मह उद्धवतेजसोः । ७. उद्धवो यादवभिदि महे च क्रतुपावके । ८. उत्सवो मह उत्सेके इच्छाप्रसरकोपयोः । इति नाट्यवर्गः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८—अथ पातालभोगिवर्गः

अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम् ।
नागलोकोऽथकुहरं शुषिरं विवरं विलम् ॥ १ ॥
छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रश्वभ्रं वपा शुषिः ।
गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्र शुषिरं त्रिषु ॥ २ ॥
अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

---

[१]अधोभुवनम् (अधश्च तद्भुवनं च) पातालम्[२] (पतन्त्यत्रेति आलञ्) बलिसद्म (बलेः सद्म) रसातलम् (रसायाः तलम्) नागलोकः (नागानां लोकः) ये पाँच नाम पाताल के हैं, जिनमें 'नागलोकः' पुंलिङ्ग है और शेष ४ नपुं० लिङ्ग है ।

अथ—[३]कुहरम् (कुहं विस्मयं रातीति, कः) [४]शुषिरम् (शुषिः शोषणमस्यास्तीति, रः) [५]विवरम् (विवृणोतीति विपूर्वकात् वृञ् धातोः अच्) [६]विलम् (विलति भिनत्तीति, कः) [७]छिद्रम् (छिद्र्यते इति घञ् छिद्यते रकि वा) निर्व्यथनम् (निः निश्चयेन व्यथ्यते व्यथनं भयं चलनं वा यत्र, ल्युट्) [८]रोकम् (रोचते दीप्यतेऽत्र, घञ् कुत्वम्) [९]रन्ध्रम् (रन्धयति हिनस्तीति रक्) श्वभ्रम् (शु शोभनमभ्रं यत्र) [१०]वपा (उप्यतेऽत्र अङ्) [११]शुषिः (शुष्यत्यत्र किः) ये ११ नाम बिल के हैं ।

[१२]गर्तः (गिरतीति तन्, स्त्रियां टाप्) [१३]अवटः (अवत्यस्मात्, अटन्) ये दो पुं० नाम पृथ्वी में किये हुए गढ़े के हैं । शुषिरम् (शुषिरस्यास्तीति रः) यह एक त्रिलिङ्ग नाम सछिद्र का है । सरन्धे शुषिरमित्यन्वयः ॥ १–२ ॥

अन्धकारः (अन्धं दृष्ट्युपघातम् करोतीति, अण्) ध्वान्तम् (ध्वन्यते शब्द्यते निपातनात्) [१४]तमिस्रम् (तमोऽस्त्यस्मिन्निति, निपातनात्) [१५]तिमिरम् (तिम्यति आर्द्रीभवतीति, किरच्)

---

१. अधोऽव्ययं स्यात्पाताले । इति त्रिकाण्डशेषः । २. पातालं वडवानले । रसातले च । इति हैमः । ३. कुहरं गह्वरे च्छिद्रे क्लीबं नागान्तरे पुमान् । ४. शुषिरं वंशादिवाद्ये विवरेऽपि नपुंसकम् । शुषिरो न स्त्रियां गर्ते वह्नौ रन्ध्रान्विते त्रिषु । ५. विवरं दूषणे गर्ते । ६. बिलं छिद्रे गुहायां च पुमान्तुश्चैः श्रवो हये । ७. छिद्रं विवररन्ध्रवत् । गर्ते दोषे । इति हैमः । ८. रोकं क्र.गण-भेदेना विवरेऽथाविले चले । रोकोऽशौ । इति हेमचन्द्रः । ९. रन्ध्रं तु दूषणेच्छिद्रे । इति त्रिर-मेदिन्यौ । १०. वपा विवरमेदसोः । ११. शुषिः शोषे विलेऽस्त्री स्यात् । इति मेदिनी । विवराभिधायिनि शुषिरादौ शास्त्रेषु दन्त्यतालव्यौ । इति ऊष्मविवेकः । १२. शरट-कृसर-गर्त-श्रृङ्गाः । इति स्त्रीपुंसप्रकरणे रभसः । १३. गर्तोऽवटे कुकुन्दरे । त्रिगर्तांशे । इति हैमः दर्भेऽपि पवित्रमवटिरवटेऽपि । इति हलायुधादिदन्तोऽपि । अवटः कूपबिलयोर्गर्ते कुहकजीविनि । इति हैमः । १४. तमिस्रं तिमिरे कोपे, तमिस्रा तु तमस्ततौ । कृष्णपक्षनिशायां च । इति विश्वमेदिन्यौ । १५. तिमिरं ध्वान्ते नेत्रामयान्तरे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥
विष्वक्संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वराः ।
शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥
तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।
अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥

---

[1]तमः (ताम्यति ग्लानिं प्राप्नोत्यनेन, असुन्) ये ५ नाम अन्धकार के हैं। इनमें 'अन्धकारः' पुं० न० दोनों है, शेष ४ नपुंसक हैं।

गाढे ध्वान्ते—अन्धतमसम् (अन्धयतीति, अन्धं च तत् तमश्चेति अच्) यह एक नपुं० नाम घना (अधिक) अन्धकार का है।

क्षीणे तमः—अवतमसम् (अवहीनं तमः अच्) यह एक नपुं० नाम क्षीण (थोड़े) अन्धकार का है ॥ ३ ॥

विष्वक् तमः—संतमसम् (सं=समन्तात् तमः, अच्) यह एक नपुंसक नाम व्यापक अन्धकार का है।

[2]नागः (नगे पर्वते भवः) काद्रवेयः (कद्र् वा अपत्यम् ढक) ये दो पुंलिङ्ग नाम सर्पातिरिक्त देवयोनिविशेष (फणा पूंछ युक्त नराकार व्यक्तिविशेष) के हैं।

तेषां नागानामीश्वरः—[3]शेषः (शिष्यते विशिष्यते इति घञ्) [4]अनन्तः (न अन्तो यस्य) ये दो पुंलिङ्ग नाम यमराज के हैं। वासुकिः (वसु धनं के मूर्ध्नि यस्य, वसुकस्यापत्यम्, इञ्) सर्पराजः (सर्पाणां राजा) ये दो पुं० नाम वासुकि के हैं।

अथ—[5]गोनसः (गोरिव नासिकाऽस्येति अच् नसादेशश्च) तिलित्सः तिलमेतीति क्विप्, तुक्, तिलितं स्यतीति कः) ये दो पुं० नाम सर्प विशेष के हैं ॥ ४ ॥

[6]अजगरः (अजस्य गरः, अच्) शयुः (शेते, उः) [7]वाहस (वाहं गति स्यतीति, कः) ये तीन पुं० नाम अजगर सर्प के हैं।

अलगर्दः (अलतीति अलः, गर्दतीति गर्दः अच्, अलश्चासौ गर्दश्चेति) जलव्यालः (जलस्थो व्यालः) ये दो पुं० नाम जल में रहने वाले सर्प के हैं।

---

१. तमो ध्वान्ते गुणे शोके क्लीबं, वा ना विधुंतुदे। इति मेदिनी। तमसमपि तमसं तु निशाचर्म। इति त्रिकाण्डशेषः। २. नागो मतङ्गजे सर्पे पुंनागे नागकेसरे। क्रूराचारे नागदन्ते मुस्तके वारिदेऽपि च। देहानिलविशेषे च श्रेष्ठे स्यादुत्तरस्थितः। नागं रंगे सीसपत्रे स्त्रीबन्धे कारणान्तरे। इति हैमः। ३. शेषोऽनन्ते वधे सोरिण्युपयुक्तेतरेऽपि च। शेषा निर्माल्यदाने स्यात्। इति हैमः। ४. अनन्तः केशवे शेषे पुमान्, निरवधौ त्रिषु। ५. गोनासगोनसौ। इति त्रिकाण्डशेषः। गोनसी मण्डली वोडः। इति तु विक्रमादित्यः। ६. अजगरः स्मृतः सर्पभेदेऽपि कवचे बुधैः। ७. वाहसोऽजगरे वारिनिर्याणसुनिषण्णयोः। इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।

सर्पमात्रस्य पञ्चविंशतिर्नामानि

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गम ॥ ६ ॥
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गूढपात् चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ।
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥

राजिलः (राजिं रेखां लातीति, कः) डुंण्डुभः (डुण्डुं भणतीति, डः) ये दो पुं० नाम द्विमुख, निर्विष सर्प के हैं ॥ ५ ॥

[1]मालुधानः (मालुरोषधी, मालौ धानं स्थानमस्य) मातुलाहिः (मां तुलयति कः, मातुलश्चासौ अहिश्च) ये दो पुं० नाम चित्र-विचित्र (चितकबरे) सर्प के हैं ।

[2]निर्मुक्तः (अमोचीति क्तः, निर=निश्चयेन मुक्तः) मुक्तकञ्चुकः (मुक्तः कञ्चुको येन) ये दो पुं० नाम केचुल छोड़े हुए सर्प के हैं ॥ ५½ ॥

सर्पः (सर्पतीति अच्) [3]पृदाकुः (पर्दते कुत्सितं शब्दं करोतीति, काकुः प्रत्ययः भुजगः (भुजः कुटिलः सन् यच्छतीति, डः) [4]भुजंगः (खचि कृते टिलोपे) [5]अहिः (आहन्यत इति इनिः) भुजङ्गमः (खचि, डित्वाभावः) [6]आशीविषः (आशीः तालुदंष्ट्रा तस्यां विषमस्य) विषधरः (धरतीति धरः विषस्य धरः) [7]चक्री (चक्रमस्यास्तीति इनिः) [8]व्यालः (व्यादतीति, अच् , डलयोरैक्यात्) [9]सरीसृपः (कुटिलं सर्पतीति यङ् पचाद्यच्) [10]कुण्डली (कुण्डलमस्यातीति) [11]गूढपात् (गूढाः पादा अस्य) चक्षुःश्रवाः (चक्षुःश्रवः [12]कर्णोऽस्यास्तीति सान्तः) काकोदरः (काकस्येवोदरमस्य) फणी (फणाऽस्यास्तीति इनिः) दर्वीकरः (दर्व्याकारः फण एव करो यस्य) दीर्घपृष्ठः (दीर्घं पृष्ठमस्य) [13]दन्दशूकः (गर्हितं दशतीति, यङ् लुक् , ऊकः) [14]विलेशयः (विले शेते अच्) उरगः (उरसा गच्छतीति, डः) [15]पन्नगः (पन्नं पतितं गच्छ-

---

१. मालुधानश्चित्रसर्पे महापद्मे च दृश्यते। इत्युपलिनी । मालुधानो मातुलाहौ मालुधानी लतान्तरे । इति विश्वः । २. निनिश्चयनिषेधयोः । निर्मुक्तस्त्यक्तसङ्गे स्यान्मुक्तकञ्चुकभोगिनि । ३. पृदाकुर्वृश्चिके व्याघ्रे सर्पचित्रकयोः पुमान् । ४. भुजंगः सर्पखिङ्गयोः । इति हैमः । ५. अहिर्वृत्रासुरे सर्पे पुंसि । ६. आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तया विद्धो न जीवति । अशीमिव कलामिन्दोः । इति राजशेखरादीकारान्त-आशीशब्द । ७. चक्री कोके कुलालेऽहौ वैकुण्ठे चक्रवर्तिनि । इति हैमः । ८. व्याडोहिंस्रपसौ सर्पे । व्यालो दुष्टगजे सर्पे खले श्वापदसिंहयोः इति विश्वमेदिन्यौ । ९. संसार सारस–सरीसृप–सस्य–सारना । इतिः द्विदन्त्ये ऊष्मविवेकः । १०. कुण्डली वरुणे सर्पे मयूरे कुण्डलान्विते । ११. पादानामपि विज्ञेये द्वे शते द्वे च विंशति । इत्यागमः । १२. गोकर्णः प्रथमान्तरे । अङ्गुष्ठानामिकोन्माने मृगेऽश्वतरसर्पयोः । १३. दन्दशूकस्तु पुंलिङ्गो राक्षसे च सरीसृपे । १४. विलेशयो मूषिकेऽहौ । इति हैमः । १५. पन्नगश्चौषधीभेदे तथैव पवनाशने ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेहिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा ॥ प्र० ॥
कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥ प्र० ॥
अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका ॥ प्र० ॥
त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
समौ कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

विषभेदानां नव नामानि

पुंसि क्लीबे च काकोल-कालकूट-हलाहलाः ।

तीति, डः) [१]भोगी (भोगः फणोऽस्यास्तीति) [२]जिह्मगः (जिह्मं कुटिलं गच्छतीति, डः) पवनाशनः पवनोऽशनं यस्य) ये २५ पुं० नाम सर्प के हैं ॥ ६–८ ॥

लेलिहानः (लेलिंह्यते इति) द्विरसनः (द्वे रसने यस्य) गोकर्णः (गोरिव कर्णौ अस्य) कञ्चुकी (कञ्चुकमस्यास्तीति) कुम्भीनसः (कुम्भीव नासिकाऽस्य) फणधरः (फणस्य धरः) हरिः, भोगधरः (भोगस्य धरः) ये ८ पु० नाम सर्प के प्रक्षिप्त हैं ।

भोगः (भुजति कुटिलं गच्छतीति, घञ्) यह एक पुं० नाम सर्प के शरीर का है । आशीः (आशास्ते क्विप् ईत्वं) अहिदंष्ट्रिका । ये दो स्त्री० नाम सर्प के दाँतों के प्रक्षिप्त हैं ।

आहेयम् (अहौ भवम् , ढक्) यह एक त्रिलिंग सर्पसम्बन्धी समस्त पदार्थों (विष, हड्डी आदि) के हैं ।

[३]स्फटा (स्फटतीति, अक्) फण (फणतीति अच्) ये दो स्त्री०, पुं० नाम सर्प की फणा के हैं ।

[४]कञ्चुकः (कञ्चते दीप्यते, उकन्) [५]निर्मोकः (निश्चयेन मुच्यते घञ्) ये दो पुं० नाम केचुल के हैं समौ=समानार्थौ समानलिङ्गौ ।

[६]क्ष्वेडः (क्ष्वेडते मोहयति, अच्) गरलम् (गरं लातीति कः) विषम् (वेवेष्टि व्याप्नोति कायम् , कः) ये तीन नाम विष के हैं जिनमें 'क्ष्वेडः' पु० है, शेष दो नपुं० हैं ॥९॥

[७]काकोलः (ईषत् कोलतीति अच् कादेशः) कालकूटः (कालमपि कूटयति, दहति अच् कालस्य कर्मणो मृत्योर्वा कूटो राशिरिव इति वा) [८]हलाहलः (हलति जठरम् न हलति

१. भोगी भुजंगमेऽपि स्याद्ग्राममात्रे नृपे पुमान् । विहाय महिषीमन्यराजयोषिति भोगिनी । २. जिह्मगोऽहौ च मन्दगे । इति विश्वः । ३. फटा तु कितके फणे । ४. कञ्चुको वारवाणे स्यान्निर्मोके कवचेऽपि च । वर्धापकगृहीताङ्गस्थितवस्त्रे च चोलके । कञ्चुक्यौषधिभेदे च । इति विश्वमेदिन्यौ । ५. निर्मोको मोचने व्योम्नि संनाहे सर्पकञ्चुके । ६. क्ष्वेडो ध्वनौ कर्णामये विषे । क्ष्वेडा वंशशलाकायां सिंहनादे च योषिति । लोहितार्कपर्णफले घोषपुष्पे नपुंसकम् । दुरासदे च कुटिले वाच्यलिङ्गः प्रकीर्तितः । गरलं पन्नगविषे तृणपूलकमानयोः । इति हैमः । गरले विष मम्भसि च, स्त्रियामतिविषायाम् । इति ऊष्मविवेकान्मूर्धन्यान्तम् । ७. काकोलो नरकान्तरे, नाकुलाले द्रोणकाके, विषभेदे च न स्त्रियाम् । ८. हालाहलं हालहलं वदन्त्यपि हलाहलम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्र-प्रदीपनः ॥ १० ॥
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव।
विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

॥ इति पातालभोगिवर्गः ॥

९—अथ नरकवर्गः

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम्।
तद्भेदास्तपनावीचि महारौरव-रौरवाः ॥ १ ॥

आहलति वा अच् अहलम् आहलम् वा ततः कर्मधारयः) सौराष्ट्रिकः (सुराष्ट्रे भवः ठञ्) शौक्लिकेयः (शुक्लिके देशे भवः ठञ्) [१]ब्रह्मपुत्रः (ब्रह्मणः पुत्र) प्रदीपनः (प्रदीपयतीति, ल्युः) [२]दारदः (दरदि देशे भवः अण्) वत्सनाभः (वत्सान् नभ्नाति कर्मण्यण्) ये ९ नाम विषभेद के हैं जिनमें आदि के तीन नाम पु॰ न॰ हैं, शेष ६ नाम पुंलिङ्ग हैं ॥ $१०\frac{1}{2}$ ॥

विषवैद्यः (विषस्य वैद्यः) [३]जाङ्गुलिकः (जांगुल्या विषविद्यया दीव्यतीति ठक्) ये दो पु॰ नाम विषचिकित्सक के हैं।

[४]व्यालग्राही (व्यालं गृह्णातीति णिनिः) अहितुण्डिकः (अहितुण्डेन दीव्यतीति, ठक्) ये दो पु॰ नाम सर्प पकड़ने वाले (संपेरा) के हैं ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्गः ॥

[५]नारकः (नरतीति संज्ञायां वुनि, अणि च नारः) वुनि मात्रे—नरकः, निरयः (निर्गतः अयात् शुभावहविधेः, घः) [६]दुर्गतिः (दुष्टा गतिः) ये ४ नाम नरक के हैं, इनमें ३ शब्द प्रारम्भ के पु॰ है और चौथा दुर्गति शब्द स्त्रीलिंग हैं।

तस्य=नरकस्य भेदाः—तपनः[७] (तपतीति—ल्युः) अवीचिः[८] (नास्ति वीचिः सुखमत्र) महारौरवः (रुरोरयम्, अण्, महांश्चासौ रौरवः) [९]रौरवः (रुरोरयम्) [१०]संघातः (सम्यग् घातोऽत्र, घञ्) कालसूत्रम् (कालानि लौहमयानि सूत्राण्यत्र) आदि शब्द से—तामिस्रम्, अन्धतामिस्रम्, संजीवनम्, संप्रतापनम् इन ४ नपुं॰ महाविचिः स्त्री॰ शब्दों का संग्रह है] ये ६ नाम पृथक् पृथक् नरक विशेष के हैं, जिनमें—'अवीचिः' स्त्री॰ 'कालसूत्रम्' नपुं॰ शेष ४ पुं॰ हैं ॥ १ ॥

इति द्विरूपकोषः। गोनासगोनसौ, हालाहलं हालहलं विषम्। इति त्रिकाण्डशेषः। हलाहलस्तु हयलालोरगे विषे। ज्येष्ठ्यां च। इति हैमः। १. ब्रह्मपुत्रः क्ष्वेडभेदे नदभेदे च पुंस्ययम्। २. दारदो विषभेदे स्यात्पारदे हिङ्गुले पुमान्। ३. परीक्षितं समश्नीयाज्जाङ्गुलीभिर्भिषग्वृतः। ४. व्यालग्राहोऽहितुण्डिकः। इत्यमरमाला। इति पातालभोगिवर्गः।

५. नरकः पुंसि निरयदेवारातिप्रभेदयोः। इति विश्वमेदिन्यौ। ६. दुर्गतिः नरके निःस्वतायां च। इति हैमः। ७. तपनोऽरुष्करेऽपि स्याद्भास्करे निरयान्तरे। ८. वीचिः स्वल्पतरङ्गे स्यादवकाशे सुखेऽपि च। इति विश्वः। अवीचिस्त्वन्तरे। इति हैमः। ९. रौरवौ नरके घोरे। इति मेदिनी। १०. संघातः पुंसि घाते च संहतौ नरकान्तरे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संघातः कालसूत्रं चेत्याद्या सत्वास्तु नारकाः।
प्रताः, वैतरणी सिन्धुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥
विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना।

दुःखस्य नव नामानि

पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥
स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्।

॥ इति नरकवर्गः ॥

नरक में रहने वाले जीव के—नारकः (नरके भवः अण्) [१]प्रेतः (प्रागात् इतः, प्रकर्षेण अगात् वा, क्तः) ये दो पुं० नाम हैं।

सिन्धुः (स्यन्दते आपोऽत्रेति नारकोनदी)—[२]वैरतणी (वितरणेन दानेन लङ्घते इति अण्, ङीप्, विगत तरणिः नौ यत्र, तत्र भवा) यमपुरी के नजदीक बहने वाली नदी का यह एक स्त्री० नाम है।

अलक्ष्मीः (न लक्ष्मीः) निर्ऋतिः[३] (निर्गता ऋतेः शुभात्) ये दो स्त्री० नाम नरक की कुशोभा के हैं ॥ २ ॥

[४]विष्टिः (विशति क्लेशम्, क्तिच्) आजूः (आजवते आगच्छतीति क्विप् दीर्घः) ये दो स्त्री० नाम नरक में हठात् प्रक्षेप के हैं।

[५]कारणा (कारयतीति, कृ+णि+युच्) यातना (यातयतीति, यत्+णि+युच्) तीव्रवेदना (वेदयते इति वेदना तीव्रा चासौ वेदना चेति) ये तीन स्त्री० नाम कठोर-क्लेश के हैं ॥ २ ॥

[६]पीडा (पीडयतीति अङ्) [७]बाधा (बाधते, अः) व्यथा (व्यथते, अङ्) दुःखम् (दुःख-यतीति, अच्) आमनस्यम् (अमनसो भावः, ष्यञ्) [८]प्रसूतिजम् (प्रसूतेर्जातम् डः) [९]कष्टम् (कषतीति, क्तः) [१०]कृच्छ्रम् (कृन्ततीति रक्, छ च) [११]आभीलम् (आ समन्तात् भियं लातीति कः) ये ९ नाम दुःख के हैं, जिनमें आदि के तीन नाम स्त्री० हैं, शेष ६ नाम नपुं० हैं।

एषां यत् भेद्यगामि तत् त्रिष्विति सम्बन्धः। इनमें जो द्रव्यवाचक (विशेषण) होंगे

---

१. प्रेतो भूतान्तरे पुंसि मृते स्याद्वाक्यलिङ्गकः। २. नारका जन्तवः प्रेता नदी वैतरणी स्मृता। इति त्रिकाण्डशेषः। वैतरणी नद्यां प्रेतानां, यातुमातुरि। ३. ऋतिर्गतौ घृणायां च स्पर्धायां च शुभेऽपि च। इति रभसः। निर्ऋतिः स्यादलक्ष्म्यां स्त्री दिशां पालान्तरे पुमान्। ४. विष्टिः कर्मकरे मूल्ये भद्राजूप्रेषणेषु च। इति हैमः। ५. कारणं करणे हेतुवधयोश्च नपुंसकम्। स्त्री यातनायां च। ६. पीडातिमर्दनोत्तंसकृपासु सरलद्रुमे। इति हैमः। ७. बाधा दुःखे निषेधे च। इति मेदिनी। आबाधावेदना दुःखम्। इति हलायुधात् आकारच्छेदोऽपि। ८. प्रसूतिजमनामस्यं कृच्छ्रं कष्टं कलाकलम्। इति वाचस्पतिः। दुःखप्रसूतिजे क्लीबे पीडा बाधा च वेदना इतिमाला। ९. कष्टं तु गहने कृच्छ्रे। १०. कृच्छ्रमंहसि। कष्टे सान्तपने। इति हैमः। ११. आभीलं भीषणे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०—अथ वारिवर्गः

समुद्रस्य पञ्चदश नामानि

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावार सरित्पतिः।
उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान् सागरोऽर्णवः॥ १॥
रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः।
तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे॥ २॥

जलस्य सप्तविंशतिर्नामानि

आपःस्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम्।

उनका त्रिलिंग में प्रयोग होगा। यथा—सर्वमिदं दुःखम्, दुःखः निर्गुणः पुमान्, दुःखा सेवा॥ १–३½॥ इति नरकवर्गः॥

समुद्रः (समुनत्तीति, रक्) १अब्धिः (अपो धीयन्तेऽस्मिन्, किः) २अकूपारः (कुं पृथ्वीं पिपर्तीति, अण् दीर्घश्च, कूपारः, न कूपारः) ३पारावारः (पारमावृणोतीति, अण्) सरित्पतिः (सरितां पतिः) उदन्वान् (उदकानि सन्त्यत्र, मतुप्) उदधिः (उदकानि धीयन्तेऽत्र, किः उद्भावश्च) ४सिन्धुः (स्यन्दते आपोऽत्र,) ५सरस्वान् (सरोनीरं गतिरस्त्यस्मिन्, मतुप्) सागरः (सगरस्येदम्) अर्णवः (अर्णांसि जलानि सन्त्यत्र वः सलोपश्च) रत्नाकरः (रत्नानामाकरः) जलनिधिः (जलानि निधीयन्तेऽस्मिन्) यादः पतिः (यादसां जलचराणां पतिः) अपपितिः (षष्ठ्या अलुक्) ये १५ पुं० नाम समुद्र के हैं॥ १½॥

तस्य समुद्रस्य प्रभेदाः–क्षीरोदः (क्षीरं उदकं यस्य, उदकस्योदादेशः) लवणोदः (लवणमुदकं यस्य) तथा अपरे प्रभेदा—इक्षुरसोदः, सुरोदः, दधिमण्डोदः, स्वादूदः, घृतोदः ये ७ पुं० नाम समुद्र विशेष के एक-एक हैं॥ २॥

६आपः (आप्नुवन्तीति क्विपि ह्रस्वत्वं दीर्घं च असुनि सान्तं क्लीबं च) वाः (वारयतीति इति, वृञो ण्यन्तात्, क्विपि वाः वारी, वारि रूपाणि) ७वारि (वारयतीति, इञ्) ८सलिलम् (सलति गच्छतीति, इलच्) ९कमलम् (कम्यते, कलच्) १०जलम् (जलति

कृच्छ्रेऽपि। इति हैमः। इति नरकवर्गः।

१. अब्धिर्ना सरसि वारिधौ। २. अकूपारः कूर्मराजसमुद्रयोः। ३. पारावारः पयोराशौ पारावारं तटद्वये। ४. सिन्धुर्वमथुदेशाब्धिनदे ना सरिति स्त्रियाम्। इति विश्वमेदिन्यौ। ५. सरो नीरे तडागे च। इति रुद्रः। सरस्वांस्तु नदे वार्धौ ना, न्यवद्रसिके स्त्रियाम्। वाणीस्त्रीरत्नवाग्देवीगोनदीषु नदीभिदि। मनुपत्न्यामपि। ६. कबन्धमुदकमापोनीरवार्वारिनारम्। क्लीबमपि। इति संसारावर्तः। ७. वारि ह्रीवेरनीरयोः। वारिर्घट्यां सरस्वत्यां गजबन्धनभुव्यपि। ८. सरिलं सलिरं सलिलम्। इति वाचस्पतिः। ९. कमला श्रीर्जलं पद्मं कमलं कमलो मृगः। इति धरणिः। कमलं क्लोम्नि भेषजे। पङ्कजे सलिले ताम्रे कमलस्तु मृगान्तरे कमला श्रीवरनार्योः। इति हेमचन्द्रः। १०. जलं गोकलले नीरे ह्रीवेरेऽप्यन्यवज्जडे। इति मेदिनी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥
कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।
अम्भोर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशम्बरम् ॥ ४ ॥
मेघपुष्पं घनरसः, त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

अपवारयतीति, अच्) [1]पयः (पयते गच्छति, असुन्) [2]कीलालम् (कीलां ज्वालामलति वारयति इति अण्) [3]अमृतम् (प्राणस्यापो मयत्वात् न मृतं मरणमस्त्यस्मिन्) [4]जीवनम् (जीव्यतेऽनेन इति ल्युटि) [5]भुवनम् (भूयते, भू प्राप्तौ अस्मात् क्युनि) [6]वनम् (वन्यते सेव्यते इति घञ्) [7]कबन्धम् (कं सुखं बध्नातीति अण्) उदकम् (उनत्तीति निपा०) पाथः (पातीति, असुन् थुट् च, पाथः पाथसी, पाथांसीति रूपाणि) [8]पुष्करम् (पुष्णातीति, करन्) [9]सर्वतोमुखम् (सर्वतः मुखान्यस्य) अम्भः (अम्भते, असुन्) अर्णः (ऋच्छतीति, असुन्, नुडागमश्च) तोयम् (तौति आवृणोतीति, यः) [10]पानीयम् (पीयते, इति अनीयर्) [11]नीरम् (नीयते इति रक्) [12]क्षीरम् (क्षियतीति क्रिन्, दीर्घश्च) अम्बु (अम्बते शब्दं करोतीति, उः) [13]शम्बरम् (शं वृणोतीति, अच्) [14]मेघपुष्पम् (मेघस्य पुष्पमिव) [15]घनरसः (घनस्य रसः) ये २७ नाम जल के हैं जिनमें आपः शब्द नित्य स्त्री० एवं बहुवचनान्त है, शेष पच्चीस शब्द नपुं० हैं और 'घनरस' शब्द पुंलिंग नपुं० दोनों हैं।

आप्यम् (अपां विकारः, अणन्तात्स्वार्थे ष्यञ्) अम्मयम् (विकारार्थे मयट) ये दो त्रि० नाम जल के विकार पत्थर (ओला) आदि के हैं ॥ ३—४½ ॥

---

१. पयः क्षीरे च नीरे च। इति हैमः। २. कीलालं रुधिरे तोये। इति हैमः। ३. अमृतं यज्ञशेषे स्यात्पीयूषे सलिले घृते। अयाचिते च मोक्षे च ना धन्वन्तरिदेवयोः। अमृता मागधी-पथ्यागुडूच्यामलकीषु च। ४. जीवनं वर्तने नीरप्राणधारणयोरपि। जीवनी जीवना चापि जीवन्तीभेदयोः क्रमात्। ५. भुवनं विष्टपेऽपि स्यात्सलिले गगने जले। ६. वनं प्रस्रवणे गेहे प्रवासेऽम्भसि कानने। इति हैमः। ७. कबन्धं सलिले रुण्डे। इति शाश्वतः। कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरे। क्लीबं जले, पुंस्युदरे राहुरक्षोविशेषयोः। ८. पुष्करं पङ्कजे व्योम्नि पयः करिकराग्रयोः। ओषधी द्वीपविहगतीर्थराजोरगान्तरे। पुष्करं तूर्यवक्त्रे च काण्डे खड्गफलेऽपि च। ९. सर्वतोमुख उग्रे च चैत्रज्ञब्रह्मणोः पुमान्। नपुंसकं तु पानीये सुरवर्त्मन्यपि स्मृतम्। १०. पानीयं पेयजलयोः। इति हैमः। ११. नारस्तर्णकनीरयोः इति मेदिनी। १२. क्षीरं पानीय-दुग्धयोः। इति हैमः। १३. शंबरं सलिले, पुंसि मृगदैत्यविशेषयोः। शंबरी चाखुपर्ण्यां स्यात्। इति विश्वः। १४. मेघपुष्पं पिण्डाभ्राम्बुनादेये ना हरर्हये। १५. पुंलिंग स्याद् घनरसः सान्द्रनिर्यास-नीरयोः। इति रभसः। नारं घनरसः पुमान्। इति शब्दार्णवः। अप्स्वपि शंव (शम्ब) रपिप्पल-कुशकमलकाण्डविषवनपयांसि। घनरसमम्बु क्षीरं घृतममृतं जीवनं भुवनम्। इति रत्नकोषात् क्लीबमपि। प्रोक्तं प्राज्ञैर्भुवनममृतं जीवनीयं दकं च। इति हलायुधः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ॥ ५ ॥
महत्सूल्लोलकल्लोलौ स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः।
पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसौ विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
चक्राणि पुटभेदाः स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः।
कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

---

[1]भङ्गः (भज्यते आमर्द्यते, घञ्) तरङ्गः (तरतीति, अङ्गच) [2]ऊर्मिः (ऋच्छति गच्छति, मिः, अतेरुदादेशश्च) [3]वीचिः (वयति तन्तूनेकत्रीकरोतीति ईचिः) ये ४ नाम जल की लहर के हैं, इनमें भगः, तरंगः ये दो पुंलिंग है और ऊर्मिः, वीचिः ये दो स्त्री० पुं० दोनों हैं। 'वा स्त्रियाँ' का काकाक्षिगोलकन्याय से वीचिः और ऊर्मिः दोनों के साथ सम्बन्ध है ॥ ५ ॥

महत्तु ऊर्मिषु—उल्लोलः (उत् डोडयति उन्मादययीति, अच्) कल्लोलः (कं जलं तस्य लोलः उन्मादः अनुस्वारस्य लकारः) ये दो पुं० नाम बड़ी लहर के हैं।

अम्भसां भ्रमः—[4]आवर्तः (आवर्तनम्, घञ्) यह एक पुं० नाम जल के घूमने का है।

[5]पृषत् (पर्षति सिञ्चतीति, निपापनात्) [6]बिन्दुः (बिन्दति अवयवं करोतीति, डः) [7]पृषतः (पर्षतीति, अतच्) विप्रुट (विगता प्रुट् दाहोऽस्मात्, क्विप्) ये ४ नाम बुन्द के हैं जिनमें पृषत् नपुं०, बिन्दुः, पृषतः पुं० और विप्रुट् स्त्रीलिंग है।

[8]चक्रम् (चक्राकारेण भ्रमतीति) [9]पुटभेदः (पुटं संपृक्तं भिनत्तीति) [10]भ्रमः (भ्रमत्यत्र, घञ्) जलनिर्गमः (जलानां निर्गमः) ये ४ नाम घूमते हुए जल को नीचे जाने के हैं, जिनमें 'चक्रम्' नपुं० हैं, शेष ३ पुं० हैं ॥ ६ ॥

[11]कुलम् (कूलयति आवृणोतीति, अच्) [12]रोधः (रुणद्धीति, असुन्) [13]तीरम्

---

१. भङ्ग स्तरंगेभेदे च रुग्विशेषे पराजये। कौटिल्ये भयविच्छित्त्योः। भङ्गाशाणे इति हैमः।
२. पुलिङ्गस्त्री लिङ्गयोर्वान्मिमणियष्टिमुष्टयः अशनित्रुटिशमिपाटलितरणिश्रेण्यूर्मयः। वस्तिश्च। इति वामनः। ऊर्मिः पीडाजवोत्कण्ठाभङ्गप्राकाश्यवीचिषु। वस्त्रसंकोचलेखायाम्। इति हैमः।
३. वीचिः स्वल्पतरंगे स्यादवकाशे सुखे द्वयोः।

४. आवर्तश्चिन्तने वारिभ्रमे चावर्तने पुमान्। ५. पृषन्मृगे पुमान्, बिन्दौ न द्वयोः, पृषतोऽपि ना। अनयोश्च त्रिषु। श्वेतबिन्दुयुक्तेऽप्युभाविनौ। ६. बिन्दुर्दन्तक्षतान्तरे। भ्रुवोर्मध्ये रूपकाव्यकृतौ च पृषते पुमान्। वेदितर्यन्यलिङ्गः स्यात्। ७. पृषतस्तु मृगे बिन्दौ खरोहिते। श्वेतबिन्दुयुतेऽपि स्यात्। इति हैमः। ८. वक्रं पुटभेदे वक्रः कुटिलेक्रूरभौमयोः। इति हैनाद् वक्राणि इति पाठः। वक्रः शनैश्चरे पुंसि, पुटभेदे नपुंसकम्। त्रिषु क्रूरे च कुटिले। चक्रः कोके पुमान्, क्लीवं व्रजे सैन्यरथाङ्गयोः। राष्ट्रे दम्भान्तरे कुम्भकारोपकरणास्त्रयोः। जलावर्तेऽपि। इति मेदिनीतश्चक्रमिति पाठः। ९. पुटभेदस्तु नगरातोद्ययोस्तटिनी मुखे। इति हैमः। १०. भ्रमोऽम्बुनिर्गमे भ्रान्तौ कुन्दभ्रमणयोरपि। ११. कूलं तटे सैन्यपृष्ठे तडागस्तूभयोरपि इति हैमः। १२. रोधः प्रोक्तश्च रोधसि। इति संसारावर्तः। १३. तीरो वङ्गे तीरं पुनस्तटे। इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पारावारे परार्वाची तीरे पात्रं तदन्तरम् ।
द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ।
निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥
जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।

(तीरयति कर्म समाप्नोतीति अच्) प्रतीरम् (प्रातिरिक्तोपसर्गनिवृत्यर्थम्) तटम् (तटति ऊर्ध्वं गच्छतीति, अच्) ये ५ नाम तीर के हैं, जिनमें ४ प्रारम्भ के शब्द नपुं० हैं, शेष 'तटम्' त्रिलिंग है ॥ ७ ॥

[१]पारम् (परं तीरम्) अवारम् (अर्वाक् तीरम् घञ्) ये दो नदी के इस पार उस पार वाले किनारे का एक-एक नपुं० नाम है ।

दोनों किनारों के मध्य प्रवाह का [२]पात्रम् (पिबत्यत्र, ष्ट्रन्) यह एक नपुं० नाम है ।

द्वीपः (द्विर्गता अन्तर्गता वा आपोऽत्र अः) अन्तरीपम् (अन्तर्गता अपोऽत्र अपः ईत्) ये दो नपुं० और पुं० नाम जलमध्यस्थ स्थान (टापू) के हैं । 'अस्त्रियाम्' का 'देहली दीप-न्याय' से दोनों के साथ सम्बन्ध है ॥ ८ ॥

जल से शीघ्र निकले हुए किनारे का–[३]पुलिनम् (पुलति महत्त्वं गच्छतीति इनन्)— यह एक नपुं० नाम है ।

वालुकामय तट का—सैकतम् (सिकताः बालुकाः सन्त्यत्र, अण्)–यह एक नपुं० नाम है ।

[४]निषद्वरः निषीदन्त्यत्र ष्वरच् षत्वं च । निषीदनं क्विप् निषद् आसनस्य वरः आवारकः पचाद्यच्) [५]जम्वालः (जमति अत्तीति बालन्) [६]पङ्कः (पञ्च्यते विस्तारं गम्यतेऽनेनेति, घञ्) [७]शादः (श्यति तनुकरोतीति दः प्रत्ययः) कर्दमः (कर्दति कुत्सितं शब्दं करोतीति अमः प्रत्ययः) ये ५ नाम कीचड़ के हैं इनमें पंक शब्द पुं० नपुं० दोनों हैं शेष ४ नाम पुंलिंग है ॥ ९ ॥

जलोच्छ्वासः (जलमुच्छ्वसति परिवहत्यनेन, घञ्) [८]परीवाहः (परि वहनम् भावे घञि, दीर्घः) ये दो पुं० नाम बढ़े हुए पानी निकलने के मार्ग (मोड़ी) के हैं ।

[९]कूपकः (कुत्सिः कूपः, कः,) विदारकः (विनार्यते इति कर्मणि ण्वुल्) ये दो पुं० नाम सूखी नदी में किये हुए गढे के हैं ।

---

१. पारं प्रान्ते परतटे । २. पात्रं तु कूलयोर्मध्ये पर्णे नृपतिमन्त्रिणि । योग्यभाजनयोर्यज्ञ-भाण्डे नाट्यानुकर्तरि । इति हैमः । ३. पुलिनं द्वीपमुच्यते इति त्रिकाण्डशेषः । ४. निषद्वरः स्मरे पङ्के निशायां तु निषद्वरी । इति विश्वः । ५. जम्बालः शैवले पङ्के । ६. पङ्कोऽस्त्री कर्दमे पापे । इति मेदिनी । ७. शादः कर्दमशष्पयोः । इति हैमः । ८. परीवाहो जलोच्छ्वासे महीभृद्योग्य-वस्तुनि । ९. कूपको गुणवृक्षे स्यात्तैलपात्रे कुकुन्दरे । उदपाने चितायां च कूपिकाम्भोगतोपले ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥ १० ॥
उडुपं प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः।
आतरस्तरपण्यं स्याद् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
सांयात्रिकः पोतवणिक् कर्णधारस्तु नाविकः।
नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

नाव से पार करने योग्य जल का—नाव्यम् (नावा तार्यम्)—यह एक त्रिलिं० नाम है। नौः (नुद्यते प्रेर्यते इति डौः) [1]तरणिः (तरन्त्यनया, अनिः, इप्रत्यये [2]तरिः) ये ३ स्त्रीलिंग नाम नौका के हैं ॥ १० ॥

[3]उडुपम् (उडुनो जलात् पातीति, कः) [4]प्लवः (प्लवते गच्छतीति अच्) [5]कोलः (कोलति संघातं करोतीति, णः) ये ३ नाम तैरने के लिए तृणादि निर्मित साधन विशेष के हैं, जिनमें उडुपम् नपुं० है, शेष दो पुं० हैं।

प्राकृतिक जलनिःसरण मार्ग का—[6]स्रोतः (स्रवतीति, असुन् तुट् च) यह एक सान्त नपुं० नाम है। स्रोतसी, स्रोतांसि इति रूपाणि।

[7]आतरः (आतरन्त्यनेनेति, घः) तरपण्यम् (तरस्य पण्यम्) ये दो नाम पार उतराई के हैं, जिनमें प्रथम पुं० और द्वितीय नपुं० हैं।

[8]द्रोणी (द्रवतीति, निः ङीष् च) काष्ठाम्बुवाहिनी (पुनः पुनः अम्बु वहतीति णिनिः) ये दो स्त्री० नाम काठ के बने हुए नौकाकार पात्र विशेष के हैं ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः (समुदितानां गमनं संयात्रा सा प्रयोजनमस्यास्तीति, ठञ्) पोतवणिक् (पोतेन युक्तः वणिक्) ये दो पुं० नाम नाव से व्यापार करने वाले के हैं।

[9]कर्णधारः (कर्णः=नौपृष्ठस्थचालनकाष्ठं धरतीति, अण्) नाविकः (नावातरतीति, ठन्) ये दो पुं० नाम पतवार पकड़ने वाले के हैं।

[10]नियामकः (नियच्छतीति, ण्वुल्) पोतवाहः (पोतं वहतीति, घञ्) ये दो पुं० नाम

१. तरणिस्तरणेऽर्केऽशौ कुमार्योषधिनौकयोः। यष्टावब्धौ। इति हैमः। २. तरिर्दशायां वेडायां वस्त्रादीनां च पेटके। इति हैमः। ३. उडुपश्चन्द्रभेलयोः। इति धरणिः। ४. प्लवः प्लक्षे प्लुतौ कपौ शब्दे कारण्डवे म्लेच्छजातौ भेलकभेकयोः। क्रमनिम्नमहीभागे कुलके जलवायसे। जलान्तरे प्लवं गन्धतृणे मुस्तकभिद्यपि। इति हैमः। ५. पोतृप्लवकयोः कोलः कोलं तु बदरीफलम्। इति शाश्वतः। कोलो भेलक उत्सङ्गेऽङ्कपाल्यां चित्रके करौ। कोलं तु बदरे कोला पिप्पल्यां चव्यभेषजे। इति हैमः। ६. स्रोतः सद्यः सकलसलिलं। इति दन्त्यादिषूष्मविवेकः। स्रोतोऽम्बुवेग इन्द्रिये इति ॥ ७. आतरस्तरपण्यं स्नादनुत्तरम्। इति बोपालितः। ८. द्रोणिः काष्ठाम्बुसेचनी, द्रुणिश्च। इति रूपरत्नाकरः। द्रुण्यम्बुद्रोणिकच्छप्योः। इति मेदिनी। द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिन्यां गवादन्यामपीष्यते। ९. कर्णः श्रोत्रमरित्रं च। इति दुर्गः। १०. नियामकः पोतवाहे कर्म (र्ण) धारे नियन्तरि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।
अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥
क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।
त्रिष्वागाधात् प्रसन्नोऽच्छकलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥
निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।

नाव को नियन्त्रित रखने वाले के हैं ।

कूपकः (कूपे कायति शब्दं करोतीति, कः) गुणवृक्षकः (गुणानां वृक्षः इति, कन्) ये दो पुं० नाम नाव के मस्तूल (पाल टागने के लिए नाव के मध्य खड़े किए हुए खम्भ) वा नाव बाँधने की खूँटी के हैं ॥ १२ ॥

नौकादण्डः (नौकायाः दण्डः) [1]क्षेपणी (क्षिप्यतेऽनया, अनिः ङीष् च कित्वाद् गुणाभावः क्षिपणी, बाहुलकाद्गुणे ङीष् च कृते क्षेपणी) ये दो नाम डाँड़ा के हैं जिनमें प्रथम पुं० और दूसरा स्त्रीलिंग है ।

अरित्रम (ऋच्छत्यनेन, इत्रः) केनिपातकः (के जले निपातोऽस्य सप्तम्या अलुकि) ये दो नाम पतवार के हैं, जिनमें 'अरित्रम्' नपुं० और 'केनिपातकः, पुंलिंग है ।

अभिः (अभतीति, इन्) काष्ठकुद्दालः (कुम् उद्दालयतीति कर्मण्यण् पररूपे काष्ठस्य कुद्दालः) ये दो नाम नाव से कतवार हटाने के लिए लकड़ी के बने कुदालनुमा साधन विशेष के हैं, जिनमें अभिः स्त्री० काष्ठकुद्दालः पुंलिंग है ।

सेकपात्रम् (सेकस्य पात्रम्) [2]सेचनम् (सिच्यतेऽनेन, ल्युट्) ये दो नपुं० नाम नाव में एकत्र हुए पानी को हटाने के लिए बने पात्र विशेष के हैं ॥ १३ ॥

नावोऽर्धे—अर्धनावम् (नावोऽर्धम् टचि) यह एक नपुं० नाम नाव के आधे हिस्से का है ।

अतीतनौकनः (अतीता नौ येन कप्) अतिनु (नावमतिक्रान्तम्) ये दो त्रिलिंग नाम नाव को अतिक्रमण करने वाले जलादि के है । यहाँ से 'अगाधम' तलपर्श तक त्रिषु का अधिकार है, इसलिए मध्य के सब नाम त्रिलिग हैं । अगाधमभिव्याप्य त्रिष्विति सम्बन्धः ।

[3]प्रसन्नः (प्रासदत, क्तः) [4]अच्छः (न छयति दृष्टिम् , कः) ये दो त्रि० नाम निर्मल जल के हैं ।

[5]कलषुः (लुषतीतिलुषः कस्य जलस्य लुषो घातकः) अनच्छः (अच्छात् भिन्नः) आविलः (आविलति भिनत्तीति, कः) ये तीन त्रिलिंग नाम मैले जल के हैं ॥ १४ ॥

निम्नम् (निमनतीति कः) गभीरम् , गम्भीरम् (गच्छति जलजन्तुरत्रार्थे निपात्येते,

---

१. क्षेपणं प्रेरणे, नौकादण्डजालभिदोः स्त्रियाम् । २. सेचनं रक्षणे सेके नौकायां सेकभाजने । इति विश्वमेदिन्यौ । ३. प्रसन्ना स्त्री सुरायां स्यादच्छसंतुष्टयोस्त्रिषु । ४. अच्छो भल्लूकेस्फटिकेऽमलेऽच्छाऽभिमुखोऽव्ययम् । इति हैमः । ५. कलुषं त्वाविले पापे । इति विश्वः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगाधमतलस्पर्शे कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥
आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ।
मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

मत्स्यसामान्यस्याष्टौ नामानि

पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।

गम् धातोः इरन् प्रत्ययः भकारान्तादेशः णभीसकश्चेति निपातनात् पक्षे नुमागमश्च) ये तीन त्रिलिंग नाम गम्भीर (गहरे) के हैं ।

तद्विपर्यये = तस्य गम्भीरस्य विपर्यये विरुद्धे—[1]उत्तानम् (उन्गतस्तानी विस्तारोऽस्मात्) यह एक त्रिलिङ्ग नाम उथले का है ।

[2]अगाधम् (नास्ति गाधः स्थितिरत्र) अतलस्पर्शम् (तलस्य स्पर्शः, न तलस्पर्शोऽत्र) ये दो त्रिलिंग नाम बहुत गहरे के हैं ।

कैवर्तः (के जले वर्तते इति केवर्तः, केवर्तानामयं घातकः, अण्) [3]दाशः (दाश्यते मूल्यादिकमस्मै) धीवरः (दधाति मत्स्यान् ष्वरचि, आकारस्य ईत्वं निपात्यते) ये तीन पुं० नाम मल्लाह के हैं ॥ १५ ॥

आनायः (नयनम् घञ् , आसमन्तान्नायोऽनेन आनयन्ति मत्स्याननेन घञन्तो निपातितो वा) [4]जालम् (जले क्षियते इति, अण्) ये दो नाम जाल के हैं इनमें आनायः पुं० जालम् नपुं० है ।

शणसूत्रम् (शणस्य सूत्रम्) पवित्रकम् (पवित्रमुपवीतम् तद्वदिव कन्) ये दो नपुं० नाम सुतरी के बने जाल के हैं ।

मत्स्याधानी (मत्स्या आधीयन्तेऽत्र इति ल्युट्) कुवेणी (कुत्सितं वेणते गच्छति अस्यां मत्स्यः घञ् , गौरादित्वान्ङीष्) ये दो स्त्री० नाम मछली रखने के पात्र (झपोली) के हैं ।

बडिशम् (बलिनो मत्स्यान् श्यति तनूकरोतीति, कः, डलयोरैक्यात् बलिशमपि) मत्स्यवेधनम् (विध्यते अनेनेति, ल्युट् , मत्स्यानां वेधनम्) ये दो नपुं० नाम बंसी (मछली फसाने के साधन विशेष) के हैं ॥ १६ ॥

पृथुरोमा (पृथूनि रोमाण्यस्य, नान्तः) [5]झषः (झषतीति, अच्) [6]मत्स्यः (माद्यति, हर्षं प्राप्नोतीति, स्यन्) [7]मीनः (मीनाति हन्तीति, नकि) वैसारिणः (विविधं सरतीति णिनिः, बिसारी नान्तः, ततःस्वार्थे अण्) [8]अण्डजः (अण्डाज्जायते, डः) विसारः (विशेषेण

---

१. उत्तानमगभीरेस्यादूर्ध्वास्यशयिते त्रिषु । २. अगाधमतलस्पर्शे त्रिषु, श्वभ्रे, नपुंसकम् । ३. शालो झषे, धीवर एव दाशः । इति शभेदात्तालव्यान्तः । कैवर्तेभृत्ययोर्दासो दासो वाणा च चेटिका । इति रुद्राद्दन्त्यान्तः । दासो भृत्ये च शूद्रे च शानेऽर्थिनि च धीवरे । ४. जालं वृन्दगवाक्षयोः । क्षारकानादम्भेषु, नीपे ना, स्त्री तु धोषके । इति रभसः । ५. झषा नागबलायां स्त्री, तापमत्स्याटवीषु ना । ६. मत्स्यो मीनेऽथ पुंभुम्नि देशे । ७. मीनोराश्यन्तरे झषे । ८. अण्डजो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विसारः शकली चाथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
सहस्रदंष्ट्रः पाठीनः, उलूपी शिशुकः समौ।
नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥
क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झषाः।
रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

सरतीति, घञ्) [1]शकली (शकलं वल्कलमस्यास्तीति, इनिः) ये ८ पुं० नाम सामान्य मछली के हैं।

[2]गडकः (गडतीति, क्वुन्) शकुलार्भकः (शकुलस्य मत्स्यस्य अर्भकः) ये दो पुं० नाम मत्स्य विशेष के हैं ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः (सहस्रं दंष्ट्रा यस्य) [3]पाठीनः (पाठीं पृष्ठदेशं, नमयतीति, ण्यन्ताद् डः दीर्घश्च) ये दो पुंलिंग नाम बहुत दांत वाली मछली के हैं।

उलूपी (ओः शिवस्य रूपम्, उरूपम्, अस्यास्तीति, इनिः रलयोरैक्यात्) [4]शिशुकः (शिशोः शिशुमारस्य प्रतिकृतिरिव, कन्) ये दो पुं० नाम सोंस नामक जलचर विशेष के है। समौ=समानार्थ समानालिङ्गौ च।

[5]नलमीनः (नलवनस्थो मीनः) चिलिचिमः (चिलिं चिलिं मिमीते, चिल विलसने धातो इनि प्रत्यये कित्वे च चिलिः, वीप्सायां द्वित्वे, तं मिमीते, कः) ये दो पुं० नाम नरकट में रहने वाली मछली के हैं।

प्रोष्ठी (प्रकृष्टः ओष्ठोऽस्याः पररूपे, ङीष्) शफरी (शकं खुरः राति ददातीति, कः, ङीष् च) ये दो नाम पोठिया (पोठी) मछली के हैं। इनमें प्रथम स्त्री० है और दूसरा स्त्री० पुं० दोनों हैं ॥ १८ ॥

अण्डे से तुरन्त निकले हुए मछली समुदाय का—क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः (क्षुद्राण्जाज्जाताः मत्स्यां, तेषां संघातः) पोताधानम् (पोतः अर्भकः आधीयतेऽत्र) ये दो नाम हैं जिनमें प्र० पुं० द्वितीय नपुंसक हैं।

अब मत्स्यविशेष के नाम बताते हैं—झषाः=मत्स्यविशेषाः [6]रोहितः (रोहणम् घञ् रोहो जातोऽस्य, इतच्) मद्गुरः (माद्यतीति, उरच् गुगागमश्च निपातनात्) [7]शालः (शाड्यते

मृगनाभौ, ना सरटेऽह्नौ खगे झषे। इति मेदिनी। १. शकलं वल्कलेऽर्धे च। इति तालव्यादावजयः। २. गडो मीनान्तरायययोः। ३. पाठीनो गुग्गुलद्रुमे। पाठके मीनभेदे च। इति हैमः। ४. शिशुकः शिशुमारे स्याद्बालकोलूपिनोरपि। ५. नलमीनश्चिलीचिमो वृहन्मीनोऽब्धिजस्तिमिः। इति रत्नमाला। लक्ष्मणा सारसी क्रौञ्ची नलमीनचिलीचिमिः। इति वोपालिताच्चितुरिकारवान्मध्य दीर्घः इदन्तोऽपि। ६. रोहितं कुङ्कुमे रक्ते ऋजुशक्रशरासने। पुंसि स्यान्मीनमृगयोर्भेदे लोहितकद्रुमे। ७. शालो झषे धीवरं एव दाशः। इत्यूष्मभेदात्तालव्यादिः। कैवर्त इव वद्धराजीयोत्पलसालो बसन्तकालः इतिवास वदत्ताश्लेषाद्दन्त्यादिश्च सालो मत्स्य इति कैवर्तपक्षे, वसन्त-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिमिंगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।
तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्कवो मकरादयः ॥ २० ॥
स्यात् कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठकच्छपौ ।
ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥

श्लाघाक्रियते घञ्, डलयोरैक्यात्) [1]राजीवः (राजी रेखाः ऽस्यास्तीति, वः) शकुलः (वेगेन गन्तुं शक्नोतीति, ऊलच्) तिमिः (ताम्यति ग्लायतीति इनिः) तिमिंगिलः (तिमिं गिरतीति कः लत्वं च) ये ७ नाम मत्स्य विशेष के पृथक् पृथक् हैं, पर्याय नहीं। आदि पद से तिमिङ्गिल-गिल, नन्दीवर्त्त का संग्रह है ॥ १९ ॥

अथ—यादः (यातीति क्विप्, यामत्तीति, असुन्) जलजन्तुः (जलस्य जन्तुः) ये दो नाम जल में रहने वाले जीव मात्र के हैं, जिनमें यादः नपुं० और जलजन्तुः पुं० है।

तेषां जलजन्तूनां भेदाः तद्भेदाः उच्यन्ते इति सम्बन्धः। अब जल जीवों के भेद कहते हैं—[2]शिशुमारः (शिशून् मारयतीति, ण्यन्तादण्) उद्रः (उनत्तीति, रक्) [3]शङ्कुः (शङ्कतेऽस्मात् निपा०) [4]मकरः (मकं भूषणं राति ददातीति, कः) ये ५ पुं० नाम जलजन्तु विशेष के है। आदि पद से ग्राह, कुम्भीर आदि का संग्रह है ॥ २० ॥

कुलीरः (कौ पृथिव्यां लीयते इति, बाहुलकात् रक्) [5]कर्कटकः (कृणातीति कर् विच्, कटतीति पचाद्यच् कटः। कर् चासौ कटश्च स्वार्थे कनि) ये दो पुं० नाम केकड़ा के हैं।

[6]कूर्मः (कुत्सित ऊर्मिः वेगोऽस्य अच् इति योगविभागात्समासान्तः) [7]कमठः (के जले मठति निवसति, अच्) [8]कच्छपः (कच्छेन पिबतीति कः) ये ३ पुं० नाम कछुए के हैं।

[9]ग्राहः (गृह्णातीति, णः) [10]अवहारः (अवहरतीति णः) ये दो पुं० नाम घरियाल के हैं।

[11]नक्रः (न क्रामति दूरस्थलम् डः) कुम्भीरः (कुम्भिनम् हस्तिनमीरयतीति, अण्) ये दो पुं० नाम नकार (जलचर विशेष) के है ॥ २१ ॥

पद्मे सालं पुष्पम्। शालोहाले मत्स्यभेदे शालौकस्तत्प्रदेशयोः। इति हैमः। १. अथ राजीवो मीनसारङ्गभेदयोः। राजीवमब्जे। इति हैमः। २. शिशुमारीऽम्बुसंभूतजन्तौ तारात्मकाच्युते इति विश्वमेदिन्यौ। ३. शङ्कुः पत्रशिराजाले संख्याकीलकशंभुषु। यादोऽस्त्रभेयोर्मेढ्रे। इति हैमः। ४. मकरो निधौ। नक्रं राशिविशेषे च। इति हैमः।

५. कर्कटः। कुलीरे करणे स्त्रीणां राशौ खगे। इति हैमः। ६. ऊर्मिः स्त्रीपुंसयोर्वीच्यां प्रकाशे वेगभङ्गयोः। इति रभसः। ७. कमठः कच्छपे पुंसि भाण्डभेदे नपुंसकम्। ८. कच्छपी वल्लकीभेदे डुलौ क्षुद्रगदान्तरे। पुंसि विध्यन्तरे कूर्मे मल्लबन्धान्तरेऽपि च। इति विश्वमेदिन्यौ। ९. ग्राहो ग्रहे जलचरे। इति हैमः। १०. अवहारस्तु युद्धादिविश्रान्तौ ग्राह चौरयोः निमन्त्रणोपनेतव्ये। इति हैमः। ११. नक्रं नासाग्रदारुणोः। नक्रो यादसि। इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गण्डूपदः किञ्चुलकः निहाका गोधिका समे।
रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः॥ २२॥
मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शङ्खःस्यात् कम्बुरस्त्रियौ।
क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः॥ २३॥
भेके मण्डूक-वर्षाभू शालूरप्लव-दर्दुराः।

अथ—मही लता (मह्या लता इव) गण्डूपदः (गण्डवः ग्रन्थयः पदान्यस्य) किंचुलकः (किंचित् चुलुम्पतीति, डः उकारमकारपकाराणां डित्वाल्लोपे कनि) ये ३ पुं० नाम केचुआ के हैं।

निहाका (नियतं जहातीति कन्) [1]गोधिका (गुध्यति परिवेष्टयतीति, ण्वुल्) ये दो स्त्री० नाम गोह के हैं।

[2]रक्तपा (रक्तं पिबतीति, कः) [3]जलौका (जलं ओकोऽस्याः, अदन्तो निपातित ओकशब्दः) जलौकसः (जलं ओको यासां ताः ब. व., सान्तः जलौकसः, जलौकोभिः, जलौसोभ्यः जलौकसाम् जलौकस्सु इति रूपाणि) ये ३ स्त्री० नाम जोंक के हैं॥ २२॥

मुक्तास्फोटः (मुक्ताः स्फुटन्त्यत्र, घञ्) [4]शुक्तिः (शोचतीति, क्तिः) ये दो नाम सितुही के हैं इनमें मुक्तास्फोटः पुं० और शुक्तिः स्त्री० है।

[5]शङ्खः (शं कल्याणं खनति जनयतीति डः) [6]कम्बुः (काम्यते इति, जत्वादित्वान्निपातनात्) ये दो पुं० नपुं० नाम शङ्ख के हैं।

क्षुद्रशङ्खः (क्षुद्रश्चासौ शङ्खश्चेति) शङ्खनखः (शङ्खस्य नखाः इव) ये दो पुं० नाम छोटे शङ्ख के हैं।

[7]शम्बूकः (शाम्यतीति, उलूकादित्वात् निपातनात्) जलशुक्तिः (जलजा शुक्तिः) ये दो नाम जल में होने वाली सभी प्रकार की सुतुही के हैं, इनमें शम्बूकः पुं० और जलशुक्तिः स्त्री० है॥ २३॥

भेकः (बिभेतीति कन्) [8]मण्डूकः (मण्डयति भूषयति जलाशयमिति, ऊकण्)

---

१. गोधा तल निहाकयोः। २. रक्तपा स्याज्जलौकायां डाकिन्यां, ना तु राक्षसे। ३. जलोरगी जलोका तु जलौका च जलौकसि। इति संसारावर्तः। जलौकापि जलोका स्याज्जलूका जलजन्तुका। इति तारपालः। ४. शुक्तिः कपालशकले शङ्खे शङ्खनखेऽपि च। नख्यश्चावर्तदुर्नाममुक्तास्फोटेषु च स्त्रियाम्॥ ५. शङ्खः कम्बौ न योषित्, ना भालास्थिनिधिभिन्नखे। ६. कम्बुर्वलयशङ्खयोः। गजे शम्बूके कचू रे ग्रीवायामलिकेऽपि च इति हैमः। ७. शम्बूकपिण्याकमधूकफेनः। इति अमरमालायां पुंलिङ्गः। शम्बूको गजकुम्भान्ते घोङ्घे च शूद्रतापसे। जलजन्तुविशेषे च शम्बूका न नपुंसके। इति मेदिनेर्द्विलिङ्गता। शम्बूकः शम्बुकश्चैव पूर्वः कान्तस्तु सर्वदा। कारणेन विना शेषो शम्बुः दृश्यते ग्रन्थविस्तरे। इत्युत्पलिनी। ८ मण्डूकी मण्डूकपर्ण्यां मण्डूको भेकशोणयोः। इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी दुलिः ॥ २४ ॥
मद्गुरस्य प्रिया शृंगी दुर्नामा दीर्घकोशिका।
जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो ह्रदः ॥ २५ ॥
आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये।

[1]वर्षाभूः (वर्षासु भवतीति, क्विप्) शालूरः (शालते गच्छतीति, ऊरः) [2]प्लवः (प्लवते अयते, अच्) [3]दर्दुरः (दृणाति विदारयति शब्दैः कर्णौं, निपात०) ये ६ पुं० नाम मेढक के हैं।

[4]शिली (शिलतीति कः ङीष्) गण्डूपदी (गण्डूः ग्रन्थिः पदमस्याः) ये दो स्त्री० नाम केचुए की स्त्री के हैं।

भेकी (भेकस्य स्त्री) [5]वर्षाभ्वी (वर्षासु भवतीति वर्षाभूरित्येव, ङीप् विधायकाभावात् स्त्रियामपि वर्षाभूरित्येव, वर्षाभ्वी इत्यसाधु) ये दो स्त्री० नाम मेढकी के हैं।

कमठी (कमठस्य स्त्री) [6]दुलिः (दोलति उत्क्षिपतीति, किः) ये दो स्त्री० नाम कछुए की स्त्री के हैं ॥ २४ ॥

मद्गुरस्य प्रिया—[7]शृंगी (शृणातीति, गन् ह्रस्वत्वं कित्वं नुडागमङीपौ) यह एक स्त्री० नाम मगर की स्त्री० का है।

[8]दुर्नामा (दुष्टं नाम अस्याः) दीर्घकोशिका (दीर्घः कोशो यस्याः, ङीष्, कनि, ह्रस्वे टापि च) ये दो नाम जोंक के आकार वाले जलचर विशेष के हैं जिनमें 'दुर्नामा' पु० है र दीर्घकोशिका स्त्री० है।

[9]जलाशयः (जलं आशयो हृदयं यस्य घः) जलाधारः (आध्रीयते इति घञ् आधारः, जलस्य आधारः) ये दो नपुं० नाम तालाब वगैरह के हैं।

ह्रदः (ह्रादते अव्यक्तं शब्दं करोतीति, अचि, पृषोदरादित्वात् ह्रस्वे च) यह एक पुं० नाम अथाह जल वाले जलाशय का है ॥ २५ ॥

उपकूपजलाशये—आहावः (आहूयन्तेऽत्र, ह्वेञ् धातोः सम्प्रसारणमप्, वृद्धिश्चेति

१. वर्षाभूः स्त्री च शोथघ्न्यां भूतलाप्लयो पुमान्। इति विश्वमेदिन्यौ। २. प्लवः प्लक्षे प्लुतौ कपौ। शब्दे कारण्डवे म्लेच्छजातौभेलकभेकयोः। क्रमनिम्नमहीभागे कुलके जलवायसे। कैवर्तीमुस्तके गन्धतृणेऽपि स्यान्नपुंसकम्। ३. दर्दुरस्तोयदे भेके वाद्यभाण्डाद्रिभेदयोः। दर्दुरी चण्डिकायां स्याद्ग्रामजाले नपुंसकम्।

४. शिलमुञ्छे स्याद्, गण्डूपद्यां शिली मता। स्तम्भशीर्षे शिलाशिल्यौ शिला तु प्रस्तरे मता तथा मनःशिलायां च द्वाराधः स्थितदारुणि। ५. भेक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दर्दुरे पुमान्। इति यादवः। ६. दुलिः स्त्रियाम्। कमठ्यां, ना मुनौ। ७. भार्या भेकस्य वर्षाभ्वी शृङ्गी स्यान्मद्गुरस्य तु। इत्यमरमाला। शृङ्गी स्वर्णमीनविशेषयोः विषायामृषभौषध्याम्। ८. दुर्नाम क्लीबमर्शसि। स्याद्दीर्घकोषिकायां स्त्री। १४. तालव्या मूर्धन्याश्चैते शटी च परिवेशः। विश्वक्सेनो भ्रेशः प्रतिष्कशः कोशविशदौच। इत्यूष्मविवेकः। ९. जलाशयो जलाधारे स्यादुशीरे नपुंसकम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥
नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत्।
पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥
पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः।
वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥

निपातनात्) निपानम् (नियतं पिबन्त्यस्मिन्, ल्युटि) ये दो नाम कुएँ के समीप बनाए हुए हौज के हैं। जिनमें 'आहावः' पुं० और निपानम् नपुंसक है।

अन्धुः (अन्धयति, दृष्टिमुपघातयति इति कुः) प्रहिः (प्रहियते, इः डित्वाट्टिलोपे) [1]कूपः (कौति, शब्दं करोति, पः दीर्घश्च, कुत्सिता आपोऽत्रेति अः वा) पुंसि वा—उदपानम् (उदकं पिबन्त्यस्मिन्, ल्युट्) ये ४ नाम कूओं के हैं जिनमें उदपानम् पुं० न० दोनों हैं, शेष ३ नाम पुंलिङ्ग हैं ॥ २६ ॥

अस्य कूपस्य—[2]नेमिः (नयत्यनया मिः) [3]त्रिका (तिस्रोऽस्रयोऽस्याः कनि) ये दो स्त्री० नाम गड़ारी (यन्त्र विशेष कुएँ के बीच रस्सी गिरने के लिए लकड़ी या लोहे का बना हुआ चक्राकार) के हैं।

अस्य कूपस्य यन्मुखबन्धनं तत्—वीनाहः (विनह्यते अनेन, घञ्युपसर्गदीर्घे च) यह एक पुं० नाम कुएँ के जगत का है।

[4]पुष्करिणी (पुष्कराणि सन्त्यस्याम्) खातम् (अखानि, क्तः, आत्वे) ये दो नाम छोटी पोखरी के हैं, इनमें पुष्करिणी स्त्री० और खातम् नपुं० लिंग है।

[5]अखातम् (न खातम्) देवखातकम् (देवेन् खातम्, स्वार्थे कन्) ये दो नपु० नाम अकृत्रिम जलाशय या देवालय समीपस्थ जलाशय के हैं ॥ २७ ॥

पद्माकरः (पद्मानामाकरः) [6]तडागः (तड्यते इति निपातनात्) ये दो पु० नाम कमल वाले अगाध जलाशय के हैं।

कासारः (कासते, इति आरन्) [7]सरसी (स्त्रियते गम्यते असुन् स्त्रियां ङीष्) [8]सरः (स्त्रियते इति असुन्) ये तीन नाम कमल वाले कृत्रिम तालाव के हैं जिनमें 'कासारः' पुं० 'सरसी' स्त्री० और सरस्' नपुंसक हैं।

[9]वेशन्तः (विशन्त्यत्र मण्डूकादयः, झच्) पल्वलम् (पलति गच्छतीति वलच्) अल्पसरः (अल्पं च तत् सरश्च) ये तीन नाम पानी के छोटे छोटे गढे के हैं।

---

१. कूपः कूपकः—मृन्माने गर्तान्धुगुणवृक्षके। २. नेमिर्ना तिनिशे, कूपत्रिकाचकान्तयोः स्त्रियाम्। ३. त्रिका कूपस्य नेमौ स्यात्त्रिकं पृष्ठधरे त्रये। इति विश्वमेदिन्यौ। ४. पुष्करिणी नद्यां सरोजिन्यां जलाशये। ५. अखातो देवखातकः। इति अमर मालया पुंस्यपि। ६. तडागस्तु जलाधारविशेषे यन्त्रकूपके। इति मेदिनी। ७. सरसी विश्वकासारे। ८. सरी नीरतडागयोः। ९. वेशन्तः पल्वलेऽस्त्री। इति वाचस्पतिः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खेयं तु परिखाऽऽधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम्।
स्यादालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित्॥ २९॥
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रदिनी धुनी।
स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा॥ ३०॥
कूलङ्कषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती॥ प्र०॥
अष्टौ नामानि गङ्गायाः
गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि॥ ३१॥

---

[1]वापी (उप्यते कमलाद्यस्याम्, इञि) दीर्घिका (दीर्घैव कनि) ये दो स्त्रीलिंग नाम बावली के हैं॥ २८॥

खेयम् (खन्यते इति, क्यपि इकारश्चान्तादेशः) परिखा (परितः खन्यते, डः) ये दो नाम दुर्ग (किला) की चारों तरफ बनायी गयी खाई के हैं, जिनमें खेयम् नपुं० परीखा स्त्री० है।

[2]आधारः (आध्रियते जलमस्मिन् घञि) वह एक पुं० नाम पानी के बाँध का है।

आलवालम् (आ समन्तात् जलस्य लवम् आलातीति कः) आवालम्-((आ वलते संवृणोति अम्भोऽनेन घञ्) [3]आवापः (आ वपति जलमत्र घञ्) ये ३ नाम वृक्ष की जड़ में सींचने के लिए बनाए गए घेरे का है, जिनमें 'आलवालम्' और आवालम्' ये दो नपुं० हैं, शेष 'आवापः' पुं० है।

अथ—[4]नदी (नदति अव्यक्तं शब्दं करोतीति टित्वनिपातनात् ङीप्) सरित् (सरति गच्छतीति इतिः इकारोच्चारणात्तलोपो न) तरङ्गिणी (तरङ्गाः सन्त्यस्याम्) शैवलिनी (शैव-लिनी (शैवलमस्त्यस्याम् नान्तत्वान्ङीप) तटिनी (तटमस्त्यस्याः) ह्रदिनी (ह्रदाः सन्त्य-स्याम्, ह्रादिनीति पाठे-ह्रायते अव्यक्तं शब्द करोतीति) धुनी (धुनोतीति, क्विपि, नुकि ङीप् च) स्रोतस्वती (स्रोतांसि सन्त्यस्याम् मतुपि) द्वीपवती (द्वीपमस्त्यस्याम्, मतुपि) स्रवन्ती (स्रवतीति शतृ, नुमि, ङीपि, च) निम्नगा (निम्नं गच्छतीति डः,) [5]आपगा (अपां समूहः आपम् तेन गच्छतीति डः) ये १२ स्त्री० नाम नदी के हैं॥ ३०॥

कूलंकषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा; सरस्वती ये ४ स्त्री० नाम नदी के प्रक्षिप्त हैं।

गङ्गा (गच्छतीति, गनि) [6]विष्णुपदी (विष्णुः पदं स्थानं यस्याः, ङीषि) जह्नुतनया

---

१. वाप्यां वापिरपि स्मृता। इति द्विरूपकोषः। २. आधारश्चाधिकरणेऽप्यालवालेऽम्बु-धारणे। ३. आवापो भाण्डपचने परिक्षेपालवालयोः। ४. नदी सरिति, शोणादौ ना। ५. विषाद-गारमपगामापगामपि। इति द्विरूपकोषः। ६. विष्णुपदं नभोऽब्जयोः। विष्णुपदस्तु क्षीरोदे विष्णुपदी सुरापगा। संक्रान्तिर्द्वारिका चापि। इति हैमः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यमुनायाश्चत्वारि नामानि

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

नर्मदायाश्चत्वारि नामानि

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।

शतद्रुस्तुशुतुद्रिःस्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ।

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥

(जह्नोः तनया) सुरनिम्नगा (सुराणां निम्नगा डः) भागीरथी (भागीरथस्यम्) [1]त्रिपथगा (त्रिपथेन गच्छतीति, डः) [2]त्रिस्रोता (त्रीणि स्रोतांसि यस्याः) भीष्मसूः (भीष्मं सूते क्विपि) ये ८ स्त्री० नाम गङ्गा के हैं ॥ ३१ ॥

यमुना के—कालिन्दी (कलिन्दस्य इयम्) सूर्यतनया (सूर्यस्य तनया) यमुना (यच्छतीति, यमधातोरुनन्) शमनस्वसा (शमयस्तीति), ल्युः शमनी यमः तस्य स्वसा) ये ४ स्त्री० नाम हैं ।

नर्मदा के—रेवा (रेवतो प्लवते इत्यच्) [3]नर्मदा (नर्म=क्रीडा, तं ददातीति कः) सोमोद्भवा (सोमाद्रुद्राद्भवतीति, अच्) मेकलकन्यका (मेकलस्य ऋषेः कन्यका) ये ४ स्त्री० नाम हैं ॥ ३२ ॥

गौरी विवाह काल में शंकर के हाथ से कन्या दान के जल से निकली हुई नदी विशेष के—[4]करतोया (करतोयमत्रास्तीति, अच्) सदानीरा (सदा नीरं यस्याः सा) ये दो स्त्री० नाम हैं ।

कार्तवीर्य द्वारा अवतारित नदी के—बाहुदा (बाहुदस्य कार्तवीर्यस्येयम् अण् टाप्) सैतवाहिनी (सितस्य=अर्जुनस्य इयम् , सैती चासौ वाहिनी=नदी च) ये दो स्त्री० नाम हैं ।

सतलज नदी के—शतद्रुः (शतधा द्रवतीति शतोपपदात् द्रुगताविरयस्मात् उः, डित्) [5]शुतुद्रिः (शु पूजितं तुदतीति, इन् , रुगागमश्च) ये दो स्त्री० नाम हैं ।

विपाशा नदी के—विपाशा (पाशं विमोचयतीति णिजन्तात् पचाद्यच्) विपाट् (तस्मादेव क्विपि) ये दो स्त्रीलिंग नाम हैं ॥ ३३ ॥

---

१. क्षिती तारयते मर्त्यान्नागांस्तारयतेऽप्यधः दिवि तारयते देवास्तेन त्रिपथगा स्मृता ॥ २. त्रिस्रोता जह्नुकन्यायां । स्रोतस्वत्यन्तरे स्त्रियाम् । ३. नर्मदः केलिसचिवे नर्मदा सरिदन्तरे । इति विश्वमेदिन्यौ । ४. प्रथम कर्कटे देवी त्र्यहं गङ्गा रजस्वला । सर्वारक्तवहा नद्यः करतोयाम्बुवाहिनी इति स्मृतेः । ५. इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि । इति हि ऋ. १०.७५. ५) श्रुतिः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कावेरी सरितोऽन्याश्च सम्भेदः सिन्धुसंगमः ।
द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषुतूत्तरौ ॥ ३५ ॥
देविकायां सरय्वां च भवे दाविकसारवौ ।
सौगन्धिकं तु कल्हारं हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥ ३६ ॥

शोण (सोन) नामक नद के—[1]शोणः (शोणति पचाद्यच्) हिरण्यवाहः (हिरण्यं वहतीति, कर्मण्यण्) ये दो पुं० नाम हैं।

अल्पकृत्रिमा सरिदिति सम्बन्धः—कुल्या[2] (कुले जीवगणे साधुः, यत्) यह एक स्त्री० नाम कृत्रिम छोटी नदी (नहर) का है।

नदी विशेष के पृथक् पृथक्—शरावती (शराः सन्त्यस्मिन्) वेत्रवती (वेत्रमस्त्यस्याम्) [3]चन्द्रभागा (चन्द्रभागयोः पर्वतयोरियम्, अण्, संज्ञापूर्वकत्वाद् वृद्ध्यभावः चन्द्रभागान्नद्यामिति ङीपो निषेधात्,) [4]सरस्वती (सरांसि सन्त्यस्याम् मतुप्) [5]कावेरी (कस्य जलस्य वेरं शरीरन्तस्येयम्)—ये ५ स्त्री० नाम हैं। अन्याः—कौशिकी, गण्डकी, चर्मण्वती, गोदावरी आदि सरितः = नदियाँ हैं।

नदियों के सङ्गम के—[6]सम्भेदः (सम्भिद्यन्ते मिलन्त्यत्र, घञ्) सिन्धुसङ्गमः (सिन्ध्वोः संगमः) ये दो पुं० नाम हैं ॥ ३४½ ॥

पयसः पदव्यां द्वयोः इति सम्बन्धः—प्रणाली (प्रकर्षेण नल्यते बन्ध्यते कर्मणि घञ्) यह एक पुं० स्त्री० नाम पनारे या नाली का है।

देविका और सरयू नदी में होने वाले पदार्थ का क्रमश–त्रिषु उत्तरौ, देविकायां सरय्वां च भ = वेऽर्थे दाविकः (दीव्यतीति ण्वुल् देविका तस्यां नद्यां भवः अणि, अचामादेरात्वन् च) सारवः (सरतीति, अयुः सरयुः, दीर्घ ऊकारान्तो वा अयूः सरयू च तत्र भवः अणि, युलोपे च) एक-एक त्रि० नाम है।

सायंकाल फूलने वाले श्वेतकनइल या मुण्डी के—[7]सौगन्धिकम् (सुगन्ध्येव, स्वार्थे ठक्) कह्लारम् (कस्य जलस्य हार इवेति अच् पृषोदरादिः) ये दो नपुं० नाम हैं।

---

१. शोणः कृशानौ स्योनाके लोहिताश्वे नदे पुमान्। त्रिषु कोकनदच्छाये। २. कुल्या नदी कुल्यमस्थि कुल्या वारिप्रणालिका। इति धरणेर्नदीमात्रेऽपि। कुल्य स्यात्कीकसेऽप्यष्टद्रोणीशूर्पामियेषु च। कुल्या पयः प्रणाल्यां च नद्यां जीवन्तिकौषधौ। कुलोद्भवे कुलहिते त्रिषु मान्ये पुनः पुमान्। ३. तापी तु तपती सैत्या, चान्द्रभागी तु चन्द्रिका। चान्द्रभागा, शारदा तु कश्मीरेषु सरस्वती। इति शब्दार्णवः। चन्द्रभागा चान्द्रभागा चान्द्रभागी च सा मता। चन्द्रभागी च सैवोक्ता। इति द्विरूपकोषः। ४. सरस्वांस्तु नदे वार्धौ नाऽन्यवद्रसिके, स्त्रियाम्। वाणी–स्त्रीरत्नवाग्देवीगो–नदीषु नदीभिदि। मनुपत्न्यामपि। ५. कावेरी स्यात्सरिद्भेदे पण्यनारीहरिद्रयोः। ६. संभेदः स्फुटने संगे। ७. सौगन्धिकं तु कल्हारे पद्मरागे च कत्तृणे। पुंलिङ्गो गन्धपाषाणे सुगन्धव्यवहारिणि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन् सिते कुमुदकैरवे॥ ३७॥
शालूकमेषां कन्दःस्याद् वारिपर्णी तु कुम्भिका।
जलनीली तु शेवाल शैवालोऽथ कुमुद्वती॥ ३८॥
कुमुदिन्यां नलिन्यां तु बिसिनीपद्मिनीमुखाः।

रक्तवर्ण त्रिकाल फूलने वाले पुष्पविशेष के—हल्लकम् (हल्लति विकसतीति, ण्वुल्) रक्तसन्ध्यकम् (रक्तं सन्ध्या इवेति कः ह्रस्वे च) ये दो नपुं० नाम हैं॥ ३५–३६॥

कमल और कुमुदिनी सामान्य के—उत्पलम् (उत् ऊर्ध्वं पलति गच्छतीति अच्) [१]कुवलयम् (शोभाधायकत्वात्–कोः पृथिव्याः वलयमिव) ये दो न० नाम हैं। चन्द्रोदय होनेपर कुवलय खिलता है और सूर्योदय होने पर उत्पल, यही दोनों में भेद है।

नीलकमल के—नीलाम्बुजन्म (नीलं च तदम्बुजन्म चेति) [२]इन्दीवरम् (इन्द्याः लक्ष्म्याः वरमिष्टम्) ये दो न० नाम हैं।

सफेद कमल के—[३]कुमुदम् (कौ मोदते हृष्टो भवतीति, कः) [४]कैरवम् (के जले रौति शब्दं करोतीति अचि, सप्तम्या अलुकि, केरवः हंसः तस्येव प्रियम्) ये दो न० नाम हैं॥ ३७॥

सौगन्धिकादि कमलमात्र के मूल (कन्द=जड़) का—शालूकम् (शलति=चलति संवृणोतीति, ऊकणि वृद्धौ, च) यह एक न० नाम है।

जलकुम्भी के—वारिपर्णी (वारिणि पर्णान्यस्याः ङीषि) कुम्भिका (कुम्भीऽस्ति अस्याः, ठन्) ये दो स्त्री० नाम हैं।

सेवाल के—जलनीली (जलं नीलयतीति; ण्यन्तादण्) [५]शेवालम् (शेत तिष्ठति इति, वालन्) शैवलः (शेते इति, वलच्) ये तीन नाम हैं जिनमें शेवालम् न० जलनीली स्त्री० शैवलः पुं० है।

कुमुदिनी (कोई) के—[६]कुमुद्वती (कुमुदान्यत्र देशे सन्तीति, ड्मतुपि वत्वम्) कुमुदिनी (पुष्करादित्वादिनिः) ये दो स्त्री० नाम हैं।

---

१. कुवलं तूत्पलं कुवम्। इति त्रिकाण्डशेषः। कुवलं चोत्पले मुक्ताफलेऽपि बदरीफले। इन्दीवरे मांसशून्ये उत्पलं कुष्टभूरुहे। इति रभसः। श्यामं शितिकण्ठनीलं कुवलयमिन्दीवरं च नीलाब्जम्। इति नाममाला। २. इन्दीवरं कुवलये शतावर्यां च योषिति। कुवलयं स्यादिन्दीवारमित्यपि। इति व्याडेरिन्दीवारमपि। ३. कुमुदं कैरवे रक्तपद्मे, स्त्री कुम्भिकौषधौ। गम्भार्यां, पुंसि दिङ्नागे नागशाखामृगान्तरे। त्रिष्वपि—कुमुद् त्रिषु स्यात्कृपणे कैरवे तु नपुंसकम्। इति मेदिनी। ४. कैरवं चन्द्रकान्तं गर्दभं कुमुदं कुमुदे। इति माधवः। कैरवं कितवे रिपौ। नपुंसकं च कुमुदे, चन्द्रिकायां तु कैरवी। चन्द्रकान्तं तु कैरवे। चन्द्रकान्तो रत्नभेदे। ५. शेवलश्चैव शेवालः शैवलो जलनीलिका। इति वाचस्पतिः। ६. कुमुद्वती कैरविण्यां दयितायां कुशस्य च।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद्मसामान्यस्य षोडश नामानि

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दमहोत्पलम् ॥ ३९ ॥
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्करुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
बिसप्रसून राजीव-पुष्कराम्भोरुहाणि च ।
पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

कमलिनी या कमल समूह के—¹नलिनी (नलमत्रास्तीतीनिः) बिसनी (बिसमस्त्यस्याः, इनिः) ²पद्मिनी (पद्ममस्ति अस्याः) [मुखाः = आदयः,) आदि पद से—मृणालिनी, सरोजिनी, कमलिनी, पुटकिनी, उत्पलिनी का संग्रह है] ये ३ स्त्री० नाम हैं।

कमल सामान्य के—³पद्मम् (पद्यते, मन) ⁴नलिनम् (नलतीति, इनन्) अरविन्दम् (अराकाराणि पत्राणि विन्दतीति शः नुम् च) ⁵महोत्पलम् (महच्च तदुत्पलम्) सहस्रपत्रम् (सहस्रं पत्राण्यस्य) ⁶कमलम् (कं जलमलति भूषयतीति, कः) ⁷शतपत्रम् (शतं पत्राण्यस्य) कुशेशयम् (कुशे जले शेते, अच् सप्तम्या अलुक् च) पङ्केरुहम् (पके रोहति प्रादुर्भवतीति, कः, अलुकि) ⁸तामरसम् (तामरे घृते सस्ति शेते' डः, तामं च तद् रसं चेति वा) ⁹सारसम् (सरसि भवम्) सरसीरुहम् (सरस्यां रोहतीति, कः) बिसप्रसूनम् (बिसस्य प्रसूनम्) ¹⁰राजीवम् (रीजो रेखा अस्यास्तीति वः) ¹¹पुष्करम् (पुष्णातीति करन्) अम्भोरुहम् (अम्भांसि रोहतीति) ये १६ पुं० और न० नाम हैं।

श्वेतकमल के—¹²पुण्डरीकम् (पुण्डयति भूषयतीति, अरीकन्) सिताम्भोजम् (सितं स्वच्छं च तदम्भोजं च)—ये दो नपु० नाम हैं।

लाल कमल के—रक्तसरोरुहम् (रक्तं च तत् सरोरुहं चेति) रक्तोत्पलम् (रक्तं च तदु-

---

१. नलः पोटगले राज्ञि पितृदेवे कपीश्वरे नली मनः शिलायां तु नलिनेऽपि नलं मतम्। इति विश्वः। नलिनी पुनः। पद्माकरे गङ्गाब्जिन्योः। इति हैमः। २. पद्मिनी योषिदन्तरे। 'अब्जेऽब्जिन्यां सरस्यां च। इति हैमः। ३. पद्मोऽस्त्री पद्मके व्यूहनिधिसंख्यान्तरेऽम्बुजे। ना नागे, स्त्री फञ्जिकाश्रीचोर्वाटीपन्नगीषु च। ४. नलिनं नलिकातोयाम्बुजेषु। ५. उत्पलं कुष्ठभूरुहे। इन्दीवरे मांसशून्ये। इति हैमः। ६. कमलं क्लोम्नि भषजे। पङ्कजे सलिले ताम्रे कमलस्तु मृगान्तरे। कमला श्रीवरनार्योः। इति हैमः। ७. शतपत्रः शिखण्डिनि। दार्वाघाटे सारसे च कमले तु नपुंसकम्। इति विश्वमेदिन्यौ। ८. तामरं घृतमर्णश्च। इति रुद्रः। तामरसं पद्मे ताम्रकाञ्चनयोरपि। ९. सारसं सरसीरुहे। सारसः पुष्कराख्येन्द्वोः। इति हैमः। १०. राजीवं नलिने, ना तु भेदे हरिणमीनयोः। ११. पुष्करं द्वीपतीर्थाहिखगरागौषधान्तरे। तूर्यास्येऽसिफले काण्डे शुण्डाग्रे खे जलेऽम्बुजे। इति हैमः। १२. पुण्डरीकं सिताम्भोजे सितच्छत्रे च भेषजे। पुंसि व्याघ्रेऽग्निदिग्वर्गे कोषकारान्तरेऽपि च।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रक्तोत्पलं कोकनदं नालो नालमथास्त्रियाम् ।
मृणालं बिसमब्जादिकदम्बे षण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
करहाटः सिफाकन्दः किञ्जल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।
संवर्तिका नवदलं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥
॥ इति वारिवर्गः ॥

त्पलञ्च) [१]कोकनदम् (कोकते कोकश्चक्रवाकं नदति, अन्तर्भावितण्यर्थः, क) ये तीन नपुं० नाम है।

कमलनाल (डंठी) के—[२]नालः नालम् (नलति बध्नातीति णः) ये दो नाम हैं जिनमें नालः पुं० और नालम् नपुं० है, नाला, नाली स्त्री० शब्द भी मिलते हैं।

कमलमूल (जड़) के—[३]मृणालम् (मृण्यते हन्यते इति, कालम्) बिसम् (बिस्यति प्रेरयतीति, कः) ये दो नपुं० नाम हैं।

कमल के समस्त अवयव (फूल, पत्ती, डंठी, जड़ आदि) के—षण्डम् (सनोति ददातीति, समन्तात् डः बाहुलकात् 'धात्वादेः षः सः, इत्यथयस्याप्रवृत्तेः) यह एक पुं० नपुं० नाम हैं ॥ ४२ ॥

कमल की जड़ के—करहाटः (करं हाटयति दीपयतीति कर्मण्यण्) शिफाकन्दः (शिफा मूलतरुप्ररोहः तत्सहितः कन्दः) ये दो पुं० नाम हैं। (शिफा स्त्री०, कन्दम् नपुं० ये पृथक् पृथक् नाम हैं ऐसा भी किसी का मत है)।

कमलफूल की पराग (धूलि) के—किंजल्कः (किंचित् जलति अपवारयतीति बाहुलकात्कः) [५]केसरः (के जले सरति गच्छतीति, पचाद्यच्, सप्तम्या अलुकि) ये दो पुं० नपुं० नाम हैं। शीर्यते—शॄ हिंसायां धातु से अप् करने पर तालव्यशकारवान् भी केशरशब्द हैं।

कमल के नवीन पत्ते के—[५]संवर्तिका (संवर्तते इति इनिः, स्वार्थे कनि, टापि च) नवदलम् (नवं च तत् दलं चेति)—ये दो नाम हैं, जिनमें संवर्त्तिका स्त्री० और नवदल नपुंसक है।

---

१. रक्तकुमुदे—अथ कोकनदं रक्तकुमुदे रक्तपङ्कजे । इति मेदिनी । २. नालं न ना पद्मदण्डे नाली शाककलम्बके । ३. मृणालं नलदे क्लीबं, पुंनपुंसकयोर्विसे । इति मेदिनी । ४. मृणाले तु विसं बिशम् । इति द्विरूपकोशः । ५. षण्डः स्मृतो बलीवर्दे भवेत् षण्डं तु कानने भवेत् । इति मूर्धन्यादावजयः । षण्डं पद्मादिसंघाते न स्त्री स्यात् गोपतौ पुमान् । तालव्योमूर्धन्योऽब्जादिकदम्बे शण्डशब्दोऽयम् । मूर्धन्य एवं वृषभे पूर्वाचार्यैर्विनिर्दिष्टः । इत्यूष्मविवेकः । मुकुरमुकुरौ दर्पणे, षण्डः समूहे दारदोऽम्बुधौ । इति सारस्वतकोशः । ६. करहाटः पद्मकन्दे पुष्पद्रुमदशषयोः । इति हैमः । ५. सवितृकि-सलयकसरसभाः । इति सभेदाव् । केसरं हिङ्गुनि क्लीवं, किंजल्के न स्त्रियां, पुमान् । सिंहच्छटायां पुंनागे वकुले नागकेसरे । ५. संवर्तिकावपत्रिका । इति वोपालितः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वोदितान् वर्गान् संगृह्णाति—

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादिसनाट्यकम् ।
पातालभोगिनरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ ४४ ॥
इत्यमरसिंह-कृतौ नाम-लिङ्गानुशासने ।
स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ ४५ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते नामलिङ्गानुशासने (अमरकोषे)
प्रथमः स्वरादिकाण्डः समाप्तः ।

कमल गट्टे का छाता के—बीजकोशः (बीजस्य कोशः) [६]वराटकः (व्रियते आच्छाद्यते, देलैरिति, आटच् कनि) ये दो पुं० नाम हैं ॥ ४३ ॥ इति वारिवर्गः ॥

मया अमरसिंहेनोक्तमिति सम्बन्धः—मैं (अमरसिंह) ने स्वर, व्योम, दिक्, काल, धी, शब्दादि, नाट्य, पातालभोगि, नरक और वारि इन दश वर्गों को, साथ ही इनके प्रसङ्ग से प्राप्त देवता आदि को भी कहा है ॥ ४४ ॥

अमरसिंह के बनाये हुए नाम (प्रतिपादक) लिंग (स्त्री० पुं० न० और अव्यय) को बतलाने वाला—नामलिङ्गानुशासन (अमरकोष) नामक इस ग्रन्थ में स्वर आदि वर्गों का यह प्रथम काण्ड, साङ्ग (अङ्गों सहित) समर्थित (सम्पूर्ण) हुआ ॥ ४५ ॥

आसीत्कवीन्द्रो नृपमाननीयो वाणीशशर्मेति बुधो वरिष्ठः ।
तवात्मजेनैव कृता सुधेयं सुधेव यायाद्धृदि सज्जनानाम् ॥

दरभङ्गा-मण्डलान्तर्गत'अकौर'ग्रामाभिजन-कविमूर्धन्य-श्रीवाणीशशर्मात्मज-
श्रीविश्वनाथशर्मविरचितायां सुधाख्यायाममरकोष-टीकायां
प्रथमः स्वरादिकाण्डः समाप्तः ॥ शुभमिति ॥

---

६. वराटकः पद्मबीजकोशे रज्जौ कपर्दके । इति वारिवर्गः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीगणेशाय नमः

अमरकोशप्रथमकाण्डस्थशब्दानामनुक्रमणिका

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
अंशु	३	३३	अच्छ	१०	१४	अदितिनंदन	१	८
अकूपार	१०	१	अजगर	८	५	अदृष्टि	७	३७
अक्षान्ति	७	२४	अजगव	१	३५	अद्भुत	७	१७
अखात	१०	२७	अजस्र	१	६६	,,	७	१९
अगस्त्य	३	२०	अज्जुका	७	११	अद्वयवादिन्	१	१४
अगाध	१०	१५	अज्ञान	५	७	अधोक्षज	१	२१
अग्नि	१	५३	अञ्जन	३	३	अधोभुवन	८	१
अग्निकण	१	५७	अञ्जनावती	३	५	अध्यवसाय	७	२९
अग्निभू	१	३९	अणिमन्	१	३६	अध्याहार	५	३
अग्न्युत्पात	४	१०	अण्डज	१०	१७	अनक्षर	६	२१
अघ	४	२३	अतलस्पर्श	१०	१५	अनङ्ग	१	२५
अङ्क	३	१७	अतिनु	१०	१४	अनच्छ	१०	१४
अङ्गना	३	५	अतिमात्र	१	६६	अनन्त	२	१
अङ्गविक्षेप	७	१६	अतिवाद	६	१४	,,	८	४
अङ्गहार	७	१६	अतिवेल	१	६६	अनन्यज	१	२६
अङ्गारक	३	२५	अतिशय	१	६६	अनल	१	५४
अङ्गीकार	५	५	अत्तिका	७	१५	अनवधानता	७	३०
अच्युत	१	१९	अत्यर्थ	१	६६	अनवरत	१	६६
अच्युताग्रज	१	२३	अत्रि	३	२७	अनादर	७	२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
अनारत	१	६५	अपदिश	३	५	अभिलाष	७	२८
अनिरुद्ध	१	२७	अपदेश	७	३३	अभिशाप	६	११
अनिल	१	१०	अपभ्रंश	६	२	अभ्यन्तर	३	६
,,	१	६२	अपराह्ण	४	३	अभ्याख्यान	६	१०
अनिश	१	६५	अपर्णा	१	३७	अभ्युपगम	५	५
अनुकम्पा	७	१८	अपलाप	६	१७	अभ्र	२	१
अनुक्रोश	७	१८	अपवर्ग	५	७	,,	३	६
अनुताप	७	२५	अपवाद	६	१३	अभ्रमातङ्ग	१	४६
अनुपमा	३	४	अपवारण	३	१२	अभ्रमु	३	४
अनुभाव	७	२१	अपशब्द	६	२	अभ्रमुवल्लभ	१	४६
अनुमति	४	८	अपांपति	१०	२	अभ्रि	१०	१३
अनुयोग	६	१०	अपान	१	६३	अभ्रिय	३	८
अनुलाप	६	१६	अपिधान	३	१३	अमर	१	७
अनूरु	३	३२	अप्पति	१	६१	अमरावती	१	४५
अनेहस्	४	१	अप्पित्त	१	५६	अमर्त्य	१	८
अन्तक	१	५९	अप्सरस्	१	११	अमर्ष	७	२६
अन्तराल	३	६	,,	१	५२	अमावस्या	४	८
अन्तरिक्ष	२	१	अबद्ध	६	२०	अमृत	१	४८
अन्तरीप	१०	८	अब्ज	३	१४	अमृत	५	६
अन्तर्धा	३	१२	अब्जयोनि	१	१७	,,	६	२२
अन्तर्धि	३	१२	अब्द	४	२०	,,	१०	३
अन्धकरिपु	१	३४	अब्धि	१०	१	अमृतान्धस्	१	८
अन्धकार	८	३	अब्रह्मण्य	७	१४	अम्बर	२	१
अन्धु	१०	२६	अभिधान	६	८	अम्बा	७	१४
अप् (आप)	१०	३	अभिध्या	७	२४	अम्बिका	१	३७
अपकारगिर्	६	४४	अभिनय	७	१६	अम्बु	१०	४
अपत्रपा	७	२३	अभिमान	७	२२	अम्बुभृत	३	७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
अम्बूकृत	६	२०	अल्पसरस्	१०	२८	अश्विन्	१	५१
अम्भस्	१०	४	अवग्रह	३	११	अश्विनी	३	२१
अम्भोरुह	१०	४१	अवग्राह	३	११	अश्विनीसुत	१	५१
अम्मय	१०	५	अवज्ञा	७	२३	असित	५	१४
अम्ल	५	९	अवट	८	२	असुर	१	१२
अय	४	२७	अवतमस	८	३	असूर्क्षण	७	२३
अयन	४	१३	अवदात	५	१३	असूया	७	२४
अर	१	६४	अवमानना	७	२३	अस्रप	१	५९
अरविन्द	१०	३९	अवर्ण	६	१३	अस्वप्न	१	८
अरित्र	१०	१३	अवश्याय	३	१८	अहङ्कार	७	२२
अरुण	३	२९	अवस्था	४	२९	अहन्	४	२
,,	३	३२	अवहार	१०	२१	अहंमति	५	७
,,	५	१५	अवहित्था	७	३४	अहर्पति	३	३०
अर्क	३	२९	अवहेलन	७	२३	अहर्मुख	४	२
अर्कबन्धु	१	१५	अवाची	३	१	अहस्कर	३	२८
अर्चिस्	१	५७	अवाच्य	६	२१	अहि	८	६
अर्चिष	१	५७	अवार	१०	७	अहितुण्डिक	८	११
अर्जुन	५	१३	अविद्या	५	७	अहोरात्र	४	१२
अर्णव	१०	१	अविरत	१	६५	[आ]		
अर्णस्	१०	४	अविलम्बित	१	६५	आकारगुप्ति	७	३४
अर्घ	३	१६	अविस्पष्ट	६	२१	आकारणा	६	८
,,	३	१६	अवीचो	९	१	आकाश	२	२
अर्धनात्र	१०	१४	अव्यक्तराग	५	१५	आक्षारणा	६	१५
अर्धरात्र	४	६	अशनि	१	४७	आक्षेप	६	१३
अर्यमन्	३	२८	अश्रान्त	१	६५	आखण्डल	१	४४
अलका	१	७०	अश्लील	६	१९	आख्या	६	८
अलगर्द	८	५	अश्वयुज्	३	२१	आख्यायिका	६	५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
आगू	५	५	आन्वीक्षिकी	६	५	आशीविष	८	७
आग्रहायणिक	४	१४	आपगा	१०	३०	आशु	१	६५
आग्रहायणी	३	२३	आप्य	१०	५	आशुग	१	६२
आङ्गिक	७	२६	आभाषण	६	१५	आशुशुक्षणि	१	५५
आङ्गिरस	३	२४	आभास्वर	१	१०	आश्चर्य	७	१९
आच्छादन	३	१३	आभील	९	४	आश्रयाश	१	५४
आच्छुरितक	७	३४	आमगन्धिन्	५	१२	आश्रव	५	५
आजू	९	३	आमनस्य	९	३	आश्वयुज	४	१७
आतप	३	३४	आमोद	४	२४	आश्विन	,,	,,
आतर	१०	१२	,,	५	१०	आश्विनेय	१	५१
आतोद्य	७	५	आमोदिन्	५	११	आषाढ	४	१६
आत्मन्	४	२९	आम्नाय	६	३	आसार	३	११
आत्मभू	१	१६	आम्रेडित	६	१२	आहत	६	२१
,,	१	२६	आरव	६	२३	आहाव	१०	२६
आदिकारण	४	२८	आराव	६	२३	आहेय	८	९
आदितेय	१	८	आर्य	७	१४	आह्वय	६	७
आदित्य	१	८	आलवाल	१०	२९	आह्वान	६	७
,,	१	१०	आलाप	६	१५	[इ]		
,,	३	२८	आलिङ्ग्य	७	५	इच्छा	७	२७
आधार	१०	२९	आवर्त	१०	६	इतिहास	६	४
आधि	७	२८	अवाप	१०	२९	इन्दीवर	१०	३७
आध्यान	७	२९	आवाल	१०	२९	इन्दु	३	१३
आनक	७	६	आविल	१०	१४	इन्द्र	१	४१
आनकदुन्दुभि	१	२२	आवुक	७	१२	,,	३	२
आनद्ध	७	३	आवुत्त	१०	१२	इन्द्राणी	१	४५
आनन्द	४	२५	आशर	१	५९	इन्द्रायुध	३	१०
आनाय	१०	१६	आशा	३	१	इन्द्रारि	१	१२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
इन्द्रावरज	१	२०	उत्तान	१०	१५	उपरक्त	४	१०
इन्द्रिय	५	८	उत्पत्ति	४	३०	उपराग	४	९
इन्द्रियार्थ	५	८	उत्पल	१०	३७	उपलब्धार्था	६	५
इरमद	३	१०	उत्सर्जन	७	२९	उपलब्धि	५	१
इल्वला	३	२३	उत्सव	७	३८	उपसूर्यक	३	३२
इष	४	१७	उत्साह	७	२९	उपाधि	७	२८
इष्टगन्ध	५	१५	उत्साहवर्धन	७	१८	उपाहित	४	१०
[ई]			उदक	१०	४	उपेन्द्र	१	२०
ईर्ष्या	७	२४	उदधि	१०	१	उपोद्धात	६	९
ईश	१	३०	उदन्त	६	७	उमा	१	३६
ईशान	१	३०	उदन्वत्	१०	१	उमापति	१	३४
ईश्वर	१	३०	उदपान	१०	२६	उरग	८	८
ईश्वरी	१	३६	उदात्त	६	४	उर्वशी	१	५१
ईषत्पाण्डु	५	१३	उदान	१	६३	उलूपिन्	१०	१८
ईहा	७	२७	उदाहार	६	९	उल्लोल	१०	५
[उ]			उदीची	३	२	उशनस्	३	२५
उक्ति	६	१	उद्गाढ	१	६६	उषर्बुध	१	५४
उग्र	१	३२	उद्ध	४	२७	उषस्	४	२
,,	७	२०	उद्धर्ष	७	३८	उषापति	१	२७
उच्चैश्श्रवस्	१	४५	उद्धव	७	३८	उष्णरश्मि	३	२९
उच्चैर्घुष्ट	६	१२	उद्भव	४	३०	उस्र	३	३३
उज्ज्वल	७	१७	उद्र	१०	२०	[ऊ]		
उडु	३	२१	उन्माद	७	२६	ऊर्ज	४	१८
उडुप	१०	११	उपक्रोश	६	१३	ऊर्ध्वक	७	५
उत्कण्ठा	७	२९	उपधि	७	३०	ऊर्मि	१०	५
उत्कलिका	७	२९	उपनाह	७	७	ऊष्मागम	४	१९
उत्तर	६	१०	उपन्यास	६	९	ऊह	५	३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
[ऋ]		
ऋक्ष	३	२१
ऋच्	६	३
ऋजुरोहित	३	१०
ऋत	६	११
ऋतु	४	१३
,,	४	१९
ऋभु	१	८
ऋभुक्षिन्	१	४४
ऋषभ	७	१
[ए]		
एकताल	७	३
एकदन्त	१	३८
एकपिङ्ग	१	६९
एकान्त	१	६७
एत	५	१७
एनस्	४	२३
[ऐ]		
ऐरावण	१	४६
ऐरावत	१	४६
,,	३	३
ऐरावती	१	९
ऐलविल	१	६९
ऐश्वर्य	१	३६
[ओ]		
ओघ	७	९
ओषधीश	३	१४
ओंकार	६	४
[औ]		
औत्तानपादि	३	२०
और्व	१	५६
[क]		
कंसाराति	१	२१
ककुभ्	३	१
ककुभ	७	७
कच्छप	१०	२१
कञ्चुक	८	९
कटु	५	९
कडार	५	१६
कथा	६	६
कदुष्ण	३	१५
कद्रु	५	१६
कन्दर्प	१	२५
कपट	७	३०
कपर्द	१	३५
कपर्दिन्	१	३२
कपिल	५	५६
कपिला	३	४
कपिश	५	१६
कबन्ध	१०	४
कमठ	१०	२१
कमठी	१०	२४
कमल	१०	३
कमल	१०	४०
कमला	१	२७
कमलासन	१	१७
कम्प	७	३८
कम्बु	१०	१३
कर	३	३३
करक	३	१२
करतीया	१०	३३
करहाट	१०	४३
करुण	७	१७
करुणा	७	१८
कर्कटक	१०	२१
कर्णधार	१०	१२
कर्दम	१०	९
कर्बुर	१	६०
,,	५	१७
कर्मेन्द्रिय	५	८
कल	७	२
कलकल	६	२५
कलङ्क	३	१७
कला	३	१५
,,	४	११
कलानिधि	३	१४
कलुष	४	२३
,,	१०	१४
कल्प	४	२१
,,	४	२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
कल्पवृक्ष	१	५०	कार्तिक	४	१७	किल्विष	४	२३
कल्पान्त	४	२२	कार्तिकिक	४	१८	कीर्ति	६	११
कल्मष	४	२३	कार्तिकेय	१	३९	कील	१	५७
कल्माष	५	१७	काल	१	५९	कीलाल	१०	३
कल्य	४	२	काल	४	१	कुज	३	२५
कल्या	६	१८	,,	५	१४	कुण्डलिन्	८	७
कल्याण	४	२५	कालकूट	८	१०	कुतुक	७	३१
कल्लोल	१०	६	कालसूत्र	९	२	कुतूहल	७	३१
कवि	३	२५	कालिन्दी	१०	३२	कुत्सा	६	१३
कवोष्ण	३	३५	कालिन्दीभेदन	१	२४	कुबेर	१	६८
कषाय	५	९	काली	१	३६	,,	३	३
कष्ट	९	४	कावेरी	१०	३५	कुमार	१	४०
कल्हार	१०	३६	काव्य	३	२४	,,	७	१२
काकली	७	२	काश्यपि	३	३२	कुमुद	३	३
काकु	६	१२	काष्ठकुद्दाल	१०	१३	कुमुद	१०	३७
काकोदर	८	७	काष्ठा	३	१	कुमुदबान्धव	३	१३
काकोल	८	१०	,,	४	११	कुमुदिनी	१०	३९
कात्यायनी	१	३६	कासार	१०	२८	कुमुद्वती	१०	३८
कादम्बिनी	३	८	किंवदन्ती	६	७	कुम्भसम्भव	३	२०
काद्रवेय	८	४	किञ्चुलक	१०	२२	कुम्भिका	१०	३८
कान्ति	३	१७	किञ्जल्क	१०	४३	कुम्भीर	१०	२१
काम	१	२५	किन्नर	१	११	कुलिश	१	४७
,,	८	२७	किन्नर	१	७१	कुलीर	१०	२१
कामपाल	१	२३	किन्नरेश	१	६९	कुल्या	१०	३४
कारण	४	२८	किम्पुरुष	१	७१	कुवलय	१०	३७
कारणा	९	३	किरण	३	३३	कुवेणी	१०	१६
कारुण्य	७	१८	किर्मीर	५	१७	कुशल	४	२६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
कुशेशय	१०	४०	कैटभजित्	१	२२	क्लिष्ट	६	१९
कुसुमेषु	१	२६	कैतव	७	३०	क्वण	६	२४
कुसृति	७	३०	कैरव	१०	३७	क्वणन	६	२४
कुहर	८	१	कैलास	१	७०	क्वाण	६	२४
कुहू	४	९	कैवर्त	१०	१५	क्षण	४	११
कूप	१०	२६	कैवल्य	५	६	क्षण	७	३८
कूपक	१०	१०	कोक	५	२२	क्षणदा	४	४
,,	१०	१२	कोकनद	१०	४२	क्षणप्रभा	३	९
कूर्दन	७	३३	कोकनदच्छवि	५	१५	क्षपा	४	४
कूर्म	१०	२१	कोण	७	६	क्षपाकर	३	१५
कूल	१०	७	कोप	७	२६	क्षय	४	२२
कृच्छ	९	४	कोरक	४	१६	क्षान्ति	७	२४
कृतान्त	१	५८	कोल	१०	११	क्षिप्र	१	६४
कृत्तिवासस्	१	३१	कोलम्बक	७	७	क्षोर	१०	४
कृपा	७	१८	कोलाहल	६	२५	क्षीरोद	१०	२
कृपीटयोनि	१	५३	क्रतुध्वंसिन्	१	३४	क्षुद्रशङ्ख	१०	२३
कृशानु	१	५४	क्रतुभुज्	१	९	क्षेत्रज्ञ	४	२९
कृशानुरेतस्	१	३३	क्रन्दित	७	३५	क्षेपणा	१०	१३
कृष्ण	१	१८	क्रव्याद्	१	५९	क्षेम	४	२६
,,	४	१२	क्रव्याद	१	५९	क्ष्वेड	८	९
,,	५	१४	क्रिया	६	२			
कृष्णलोहित	५	१६	क्रीडा	७	३२	[ख]		
कृष्णवर्त्मन्	१	५४	,,	७	३३	ख	२	१
केनिपातक	१०	१३	क्रुध्	७	२६	खगेश्वर	१	२९
केलि	७	३२	क्रुष्ट	७	३५	खण्ड	३	१६
केशव	१	१८	क्रोध	७	२६	खण्डपरशु	१	३१
केसर	१	४३	क्रौञ्चदारण	१	४०	खर	३	३५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
खात	१०	२७	गर्व	७	२२	ग्रह	४	९
खेय	१०	२९	गर्हण	६	१३	ग्रहपति	३	३०
खेला	७	३३	गाढ	१	६७	ग्राम्य	६	१९
[ग]			गान	६	२६	ग्राह	१०	२१
गगन	२	१	गान्धार	७	१	ग्रीष्म	४	१८
गङ्गा	१०	३१	गिर्	६	१			
गङ्गाधर	१	३४	गिरिश	१	३१	ग्लौ	३	१४
गजानन	१	३८	गिरीश	१	३१	[घ]		
गडक	१०	१७	गीत	६	२६	घन	३	७
गणरात्र	४	६	गीष्पति	३	२४	,,	७	३
गणाधिप	१	३८	गीर्वाण	१	९	,,	७	९
गण्डूपद	१०	२२	गुणवृक्षक	१०	१२	घनरस	१०	५
गण्डूपदी	१०	२४	गुरु	३	२४	घर्म	७	३३
गन्ध	५	७	गुह	१	३९	घस्र	४	२
गन्धर्व	१	११	गुह्यक	१	११	घृणा	७	१८
गन्धवह	१	६२	गुह्यकेश्वर	१	६८	घृणि	३	३३
गन्धवाह	१	६२	गूढपाद्	८	७	घोर	७	२०
गभस्ति	३	३३	गोचिर	५	८	घोषणा	६	१२
गभीर	१०	१५	गोत्रभिद्	१	४२	घ्राणतर्पण	५	११
गम्भीर	१०	१५	गोधिका	१०	२२	[च]		
गरल	८	९	गोनस	८	४	चक्र	१०	७
गरुड	१	२९	गोविन्द	१	१९	चक्रपाणि	१	२०
गरुडध्वज	१	१९	गौतम	१	१५	चक्रवाल	३	६
गरुडाग्रज	३	३२	गौर	५	१३	चक्रिन्	८	७
गरुत्मत्	१	२९	,,	५	१४	चक्षुःश्रवस्	८	७
गर्जित	३	८	गौरी	१	३६	चञ्चला	३	९
गर्त	८	२	ग्रस्त	६	२०	चण्डिका	१	३७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
चतुरानन	१	१६	चैत्ररथ	१	७०	जलमुच्	३	७
चतुर्भुज	१	२०	चैत्रिक	४	१५	जलव्याल	८	५
चन्द्र	३	१३	[छ]			जलाधार	१०	२५
चन्द्रभागा	१०	३४	छद्मन्	७	३०	जलाशय	१०	२५
चन्द्रमस्	३	१३	छवि	३	१७	जलोच्छ्वास	१०	१०
चन्द्रशेखर	१	३०	,,	३	३४	जलौकस्	१०	२२
चन्द्रिका	३	१६	छिद्र	८	२	जव	१	६४
चपल	१	६५	[ज]			जह्नुतनया	१०	३१
चपला	३	९	जगत्प्राण	१	६२	जाङ्गलिक	८	११
चर्चा	५	२	जड	३	१९	जात	४	३१
चित्	५	१	जनन	४	३०	जातवेदस्	१	५३
चित्त	४	३१	जनश्रुति	६	७	जाति	४	३१
चित्तविभ्रम	७	२६	जनार्दन	१	१९	जाल	१३	१६
चित्ताभोग	५	२	जनि	४	३०	जिन	१	१३
चित्र	५	१७	जनुस्	४	३०	जिष्णु	१	४२
चित्र	७	१९	जन्मन्	४	३०	जिह्मग	८	८
चित्रभानु	१	५६	जन्मिन्	४	३०	जीमूत	३	७
,,	३	३०	जन्यु	४	३०	जीव	३	२४
चित्रशिखण्डिज	३	२४	जम्बाल	१०	९	जीवन	१०	३
चित्रशिखण्डिन्	३	२७	जम्भभेदिन्	१	४३	जुगुप्सा	६	१३
चिन्ता	७	२९	जयन्त	१	४६	जृम्भ	७	३५
चिर्लिचिम	१०	१८	जल	१०	३	जृम्भण	७	३५
चिह्न	३	१७	जलजन्तु	१०	२०	जैवातृक	३	१४
चेतन	४	३०	जलधर	३	७	ज्ञप्ति	५	१
चेतना	५	१	जलनिधि	१०	२	ज्ञान	५	६
चेतस्	४	३१	जलनिर्गम	१०	६	ज्येष्ठ	४	१६
चैत्र	४	१५	जलनीली	१०	३८	ज्योत्स्ना	३	१६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
ज्योत्स्नी	४	५	तपन	९	१	तार्क्ष्य	१	२९
ज्वलन	१	५	तपस्	४	१५	ताल	७	९
ज्वाल	१	५७	तपस्य	४	१५	तालाङ्क	१	२४
	[झ]		तम	३	२६	तिक्त	५	९
झर्झर	७	८	तमस्	४	२९	तिग्म	३	३५
झष	१०	१७	,,	८	३	तितिक्षा	७	२४
	[ड]		तमस्विनी	४	४	तिथि	४	१
डमरु	७	८	तमिस्र	८	३	तिमि	१०	१९
डिण्डिम	७	८	तमिस्रा	४	५	तिमिङ्गिल	१०	२०
डुण्डुभ	८	५	तमी	४	४	तिमिर	९	३
डुलि	१०	२४	तरङ्ग	१०	५	तिरस्क्रिया	७	२२
	[ढ]		तरङ्गिणी	१०	३०	तिरोधान	३	१३
ढक्का	७	६	तरणि	३	३०	तिलित्स	८	५
	[त]		,,	१०	१०	तिष्य	३	२२
तट	१०	७	तरपण्य	१०	११	तीक्ष्ण	३	३५
तटिनी	१०	३०	तरस्	१	६४	तीर	१०	७
तडाग	१०	२८	तरि	१०	१०	तीव्र	१	६७
तडित्	३	९	तर्क	५	३	तीव्रवेदना	९	३
तडित्वत्	३	७	तर्ष	७	२८	तुरङ्गवदन	१	७१
तत	७	३	तल्लज	४	२७	तुरासाह	१	४४
तत्त्व	७	९	ताण्डव	७	१०	तुवर	५	९
तथागत	१	१३	तामरस	१०	४०	तुषार	३	१८
तथ्य	६	२२	ताम्रपर्णी	३	५	,,	३	१९
तनूनपात्	१	५३	तार	७	२	तुषित	१	१०
तन्द्री	७	३७	तारकजित्	१	४०	तुहिन	३	१८
तप	४	१९	तारका	३	२१	तूर्ण	१	६५
तपन	३	३१	तारा	३	२१	तृष	७	२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
तैष	४	१५	दण्डधर	१	५९	दिव्	१	६
तोय	१०	४	दण्डनीति	६	५	,,	२	१
तौर्यत्रिक	७	१०	दनुज	१	१२	दिवस	४	२
त्रपा	७	२३	दन्दशूक	८	८	दिवस्पति	१	४२
त्रयी	६	३	दमुनस्	१	५६	दिवाकर	३	२८
,,	६	३	दम्भ	७	३०	दिविषद्	१	८
त्रास	७	२१	दम्भोलि	१	४७	दिविकस्	१	७
त्रिका	१०	२७	दया	७	१८	दिश्	३	१
त्रिदश	१	७	दर	७	२१	दिश्य	३	१
त्रिदशालय	१	६	दर्दुर	१०	२४	दिष्ट	४	१
त्रिदिव	१	६	दर्पक	१	२५	,,	४	२८
त्रिदिवेश	१	७	दर्वीकर	८	८	दीधिति	३	३३
त्रिपथगा	१०	३१	दर्श	४	८	दीपित	३	३४
त्रिपुरान्तक	१	३३	दशबल	१	१४	दीर्घकोशिका	१०	२५
त्रियामा	४	४	दस्र	१	५१	दीर्घपृष्ठ	८	८
त्रिलोचन	१	३२	दहन	१	५५	दीर्घिका	१०	२८
त्रिविक्रम	१	२०	दाक्षायणी	३	२१	दुःख	९	३
त्रिविष्टप	१	६	दानव	१	१२	दुन्दुभि	७	६
त्रिसन्ध्य	४	३	दानवारि	१	९	दुरित	४	२३
त्रिस्रोतस्	१०	३१	दामोदर	१	१८	दुर्गति	९	१
त्र्यम्बक	१	३३	दारद	८	११	दुर्गन्ध	५	१२
त्र्यम्बकसख	१	६८	दारुण	७	२०	दुर्गा	१	३७
त्वरित	१	६४	दाविक	१०	३६	दुर्दिन	३	१३
त्विष्	३	३४	दाश	१०	१५	दुर्नामन्	१०	२५
त्विषाम्पति	३	३०	दितिसुत	१	१२	दुश्च्यवन	१	४४
[द]			दिन	४	२	दुष्कृत	४	२३
दण्ड	३	३१	दिनान्त	४	३	दृढ	१	६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
देव	१	७	द्वापर	५	३	धूम्र	५	१६
देव	७	१३	द्विजराज	३	१५	धूर्जटि	१	३३
देवकीनन्दन	१	२१	द्वीप	१०	८	धूसर	५	१३
देवखातक	१०	२७	द्वीपवती	१०	३०	धैवत	७	१
देवता	१	९	द्वैमातुर	१	३८	ध्रुव	३	२०
देवसभा	१	४८	[ध]			धृष्णि	३	३३
देवी	७	१५	धनञ्जय	१	५३	ध्वनि	६	२२
दैतेय	१	१२	धनद	१	६८	ध्वान	६	२२
दैत्य	१	१२	धनाधिप	१	६८	ध्वान्त	८	३
दैत्यगुरु	३	२५	धर्मिष्ठा	३	२२	[न]		
दैत्यारि	५	१९	धर्म	४	२४	नक्र	१०	२१
दैव	४	२८	,,	६	३	नक्षत्र	३	२१
दैवत	१	९	धर्मचिन्ता	७	२८	नक्षत्रेश	३	१५
दैवत (अहोरात्र)	४	२१	धर्मराज	१	१३	नटन	७	१०
दोहद	७	२७	,,	१	५८	नदी	१०	२९
द्युति	३	१७	धवल	५	१३	नन्दक	१	२८
,,	३	३४	धातृ	१	१७	नन्दन	१	४५
द्युमणि	३	३०	धाराधर	३	७	नभस्	२	१
द्यो	१	६	धारासम्पात	३	११	,,	४	१६
,,	२	१	धिषण	३	२४	नभस्य	४	१७
द्योत	३	३४	धिषणा	५	१	नभस्वत्	१	६३
द्रव	७	३२	धी	५	१	नमुचिसूदन	१	४३
द्रुत	१	६८	धीन्द्रिय	५	८	नरक	९	१
द्रुहिण	१	१७	धीवर	१०	१५	नरवाहन	१	६९
द्रोणी	१०	११	धुनी	१०	३०	नर्तकी	७	८
द्रोहचिन्तन	५	४	धूमयोनि	३	७	नर्तन	७	१०
द्वादशात्मन्	३	२८	धूमल	५	१६	नर्मदा	१०	३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
नर्मन्	७	३२	नितान्त	१	६७	निर्वाद	६	१३
नलकूबर	१	७०	नित्य	१	६६	निर्व्यथन	८	२
नलमीन	१०	१८	निदाघ	४	१९	निर्हारिन्	५	११
नलिन	१०	३९	,,	७	३३	निर्ह्राद	६	१३
नलिनी	१०	३९	निदान	४	२८	निशा	४	४
नवदल	१०	४३	निद्रा	७	३६	निशापति	३	१४
नष्टचेष्टता	७	३३	निधि	१	७१	निशीथ	४	६
नाक	१	६	निनद	६	२२	निशाथिनी	४	४
नाग	८	४	निन्दा	३	१३	निश्चय	५	३
नागलोक	७	१	निपान	१०	२६	निषद्वर	१०	९
नागान्तक	१	९	निमेष	४	११	निषाद	७	१
नाट्य	७	१०	निम्न	१०	१५	निषूदन	८	११३
नाद	६	२३	निम्नगा	१०	३०	निष्ठुर	४	१९
नामघेय	६	८	नियति	४	२८	निसर्ग	७	३८
नामन्	६	८	नियम	५	५	निस्वन	६	२३
नारक	९	१	नियामक	१०	१२	निस्वान	६	२३
नारायण	१	१८	निरय	९	१	निहाका	१०	२२
नाल	१०	४२	निरस्त	६	२०	निह्नव	६	१७
नात्रिक	१०	१२	निर्ऋति	९	२	नीर	१०	४
नाव्य	१०	१०	निर्घोष	६	२३	नील	५	१४
नासत्य	१	५१	निर्जर	१	७	नीललोहित	१	३३
नास्तिकता	५	४	निर्णय	५	३	नीलाम्बर	१	२४
निःश्रेयस	५	६	निर्भर	१	६६	नीलाम्बुजन्मन्	१०	३७
निकषात्मज	१	६०	निर्मुक्त	८	६	नीहार	३	१८
निकृति	७	३०	निर्मोक	८	९	नुति	६	११
निक्वण	६	२४	निर्वहण	७	१५	नृत्य	७	१०
निक्वाण	६	२४	निर्वाण	५	६	नैर्ऋत	१	६०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
नैर्ऋत	३	२	परमेष्ठिन्	१	१६	पाटल	५	१५
नौ	१०	१०	परिखा	१०	२९	पाठीन	१०	१८
नौकादण्ड	१०	१३	परिदेवन	६	१६	पाण्डर	५	१२
			परिधि	३	३२	पाण्डु	५	१३
	[प]		परिभव	७	२२	पाण्डुर	५	१३
पक्ष	४	१२	परिभाषण	६	१४	पाताल	८	१
पक्षति	४	१२	परिमल	५	१९	पात्र	१०	७
पक्षान्त	४	७	परिवादिनी	७	३	पाथस्	१०	४
पक्षिणी	४	५	परिवेष	३	३२	पानीय	१०	४
पङ्क	४	२३	परीभाव	७	२२	पाप	४	२३
,,	१०	९	परीवाद	६	१३	पाप्मन्	४	२३
पङ्केरुह	१०	४०	परीवाह	१०	१०	पार	१०	७
पञ्चदशी	४	७	परीहास	७	३२	पारावार	१०	१
पञ्चम	७	१	परुष	६	१९	पारिजातक	१	५०
पञ्चशर	१	२५	परेतराज्	१	५८	पारिषद	१	३५
पटह	७	६	पर्वन्	४	७	पारुष्य	६	१४
पणव	७	८	पल्वल	१०	१८	पार्वती	१	३७
पद्म	१	७१	पवन	१	६३	पार्वतीनन्दन	१	३४
,,	१०	३९	पवनाशन	८	८	पालाश	५	१४
पद्मनाभ	१	२०	पवमान	१	६३	पावक	१	५४
पद्मा	१	२७	पवि	१	४७	पाशिन्	१	६१
पद्माकर	१०	२८	पवित्रक	१०	१६	पिङ्ग	५	१६
पद्मालया	१	२७	पशुपति	१	३०	पिङ्गल	३	३१
पद्मिनी	१०	३९	पश्चात्ताप	७	२५	,,	५	१६
पन्नग	८	८	पाकशासन	१	४१	पिङ्गला	३	४
पन्नगासन	१	२९	पाकशासनि	१	४६	पितामह	३	१६
पयस्	१०	३	पाञ्चजन्य	१	२८	पितृपति	१	५८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
पितृपति	३	२	पुष्कर	१०	४	प्रकाण्ड	४	२७
पितृप्रसू	४	३	,,	१०	४१	प्रकाश	३	३४
पिधान	३	१३	पुष्करिणी	१०	२७	प्रकृति	४	२९
पिनाक	१	३५	पुष्पक	१	७०	,,	७	३७
पिनाकिन्	१	३१	पुष्पदन्त	३	४	प्रक्वण	६	२५
पिशङ्ग	५	१६	पुष्पधन्वन्	१	२६	प्रक्वाण	६	२५
पिशाच	१	११	पुष्पवत्	४	१०	प्रचेतस्	१	६१
पीडा	९	३	पुष्पसमय	४	१८	प्रजापति	१	१७
पीत	५	१४	पुष्य	३	२२	प्रज्ञा	५	१
पीताम्बर	१	१९	पूतिगन्धि	५	१२	प्रणव	६	४
पीयूष	१	४८	पूर्णिमा	४	७	प्रणाद	६	११
पुटभेद	१०	७	पूर्वदेव	१	१२	प्रणाली	१०	३५
पुण्डरीक	३	३	पूषन्	३	२९	प्रतिघा	७	२६
,,	१०	४१	पृच्छा	६	१०	प्रतिज्ञान	५	५
पुण्डरीकाक्ष	१	१९	पृथगात्मता	४	३१	प्रतिध्वान	६	२६
पुण्य	४	२४	पृथुरोमन्	१०	१७	प्रतिपत्	४	१
पुण्यजन	१	६०	पृदाकु	८	६	,,	५	१
पुण्यजनेश्वर	१	६९	पृषत्	१०	६	प्रतिभय	७	२०
पुरन्दर	१	४१	पृषत	१०	६	प्रतिवाक्य	६	१०
पुराण	६	५	पृषदश्व	१	६२	प्रतिश्रव	५	५
पुरावृत्त	६	४	पैत्र (अहोरात्र)	४	२१	प्रतिश्रुत्	६	२६
पुरुष	४	२९	पोतवणिज	१०	१२	प्रतीची	३	१
पुरुषोत्तम	१	२१	पोतवाह	१०	१२	प्रतीर	१०	७
पुरुहूत	१	४१	पोताधान	१०	१९	प्रत्युषस्	४	२
पुलिन	१०	९	पौर्णमासी	४	७	प्रत्यूष	४	२
पुलोमजा	१	४५	पौलस्त्य	१	६६	प्रदीपन	८	१०
पुष्कर	२	१	पौष	४	१५	प्रदोष	४	६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
प्रद्युम्न	१	२५	प्रहेलिका	६	६	बर्हिस्	१	५४
प्रधान	४	२९	प्राची	३	१	बल	१	२४
प्रभञ्जन	१	६३	प्राण	१	६३	बलदेव	१	२३
प्रभा	३	३४	प्राणिन्	४	३०	बलभद्र	१	२३
प्रभाकर	३	२८	प्रालेय	३	१८	बलाराति	१	४३
प्रभात	४	३	प्रावृष्	४	१९	बलाहक	३	६
प्रमथ	१	२५	प्राह्ण	४	३	बलिध्वंसिन्	१	२१
प्रमथाधिप	१	३१	प्रियता	७	२७	बलिसद्मन्	८	१
प्रमद	४	२४	प्रीति	४	२३	बाडव	१	५६
प्रमाद	७	३०	प्रेक्षा	५	१	बाढ	१	६७
प्रमीला	७	३३	प्रेत	९	२	बाधा	९	३
प्रमोद	४	२४	प्रेमन्	७	२७	बाला	७	१४
प्रलम्बघ्न	१	२२	,,	७	२७	बाहुदा	१०	३३
प्रलय	४	३३	प्रोष्ठपदा	३	२२	बाहुल	४	१८
,,	७	३२	प्रोष्ठी	१०	१८	बाहुलेय	१	४०
प्रलाप	६	१५	प्रोष्ठपद	४	१७	बिन्दु	१०	६
प्रवल्हिका	६	६	प्लव	१०	११	बिम्ब	३	१५
प्रवाल	७	७	,,	१०	२४	बिल	८	१
प्रवृत्ति	६	७	[फ]			बिलेशय	८	८
प्रश्न	६	१०	फणा	८	९	बिसप्रसून	१०	४१
प्रसन्न	१०	१४	फणिन्	८	७	बिसिनी	१०	३९
प्रसन्नता	३	१६	फाल्गुन	४	१५	बिस	१०	४२
प्रसाद	३	१६	फाल्गुनिक	४	१५	बीज	४	२८
प्रसूतिज	९	३	[ब]			बीजकोश	१०	४३
प्रसेवक	७	७	बडवानल	१	५६	बीभत्स	७	१७
प्रहर	४	६	बडिश	१०	१६	,,	७	१९
प्रहि	१०	२६	बहिर्मुख	१	९	बुद्ध	१	१३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
बुद्धि	५	१	भवानी	१	३७	भीम	७	२०
बुध	३	२६	भविक	४	२६	भीषण	७	२०
बृहद्भानु	१	५४	भव्य	४	२६	भीष्म	७	२०
बृहस्पति	३	२४	भा	३	३४	भीष्मसू	१०	३१
ब्रध्न	३	२८	भागधेय	४	२८	भुजग	८	६
ब्रह्मन्	१	१६	भागीरथी	१०	३१	भुजङ्ग	८	६
ब्रह्मपुत्र	८	१०	भाग्य	४	२८	भुजङ्गम	८	६
ब्रह्मसू	१	२७	भाद्र	४	१७	भुवन	१०	३
ब्राह्मी	१	३५	भाद्रपद	४	१७	भूत	१	११
,,	६	१	भाद्रपदा	३	२२	भूति	१	३६
[भ]			भानु	३	३१	भूतेश	१	३१
भ	३	३१	,,	३	३३	भृंश	१	६६
भगवत्	१	१३	भारती	६	१	भेक	१०	२४
भङ्ग	१०	५	भार्गव	३	२५	भेकी	१०	२४
भट्टारक	७	१३	भाव	७	१२	भेरी	७	६
भट्टिनी	७	१३	,,	७	२१	भैरव	७	१९
भद्र	४	२५	भावुक	४	२६	भोगिन्	८	८
भय	७	२१	भाषा	६	१	भौम	३	२५
भयङ्कर	७	२०	भाषित	६	१	भ्रकुंस	७	११
भयानक	७	१७	भास्	३	३४	भ्रकुटि	७	३७
,,	७	२०	भास्कर	३	२८	भ्रम	५	४
भर	१	६६	भास्वत्	३	२९	,,	१०	७
भर्ग	१	३३	भित्त	३	१६	भ्रान्ति	५	४
भर्तृदारक	७	१२	भिदुर	१	४७	भ्रुकुंस	७	११
भर्तृदारिका	७	१३	भी	७	२१	भ्रुकुटि	७	३७
भर्त्सन	६	१४	भीति	७	२१	भ्रूकुंस	७	११
भव	१	३४	भीम	१	३४	भ्रूकुटि	७	६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
[म]			मनुष्यधर्मन्	१	६८	महेश्वर	१	३०
मकर	१०	२०	मनोरथ	७	२७	महोत्पल	१०	३९
मकरध्वज	१	२६	मन्दाकिनी	१	४९	माघ	४	१५
मघवत्	१	४१	मन्दाक्ष	७	२३	माठर	३	३१
मङ्गल	४	२५	मन्दार	१	५०	मातरिश्वन्	१	६१
मचर्चिका	४	२७	मन्दोष्ण	३	३५	मातलि	१	४५
मड्डु	७	८	मन्द्र	७	२	मातुलाहि	८	६
मण्डल	३	६	मन्मथ	१	२५	मातृ	१	३५
,,	३	१५	मन्यु	७	२५	,,	७	१४
,,	३	३२	मन्वन्तर	४	२२	माधव	१	१८
मण्डूक	१०	२४	मयु	१	७१	,,	४	१६
मतल्लिका	४	२७	मयूख	३	३३	मान	७	२२
मति	५	१	मरीचि	३	२७	मानस	४	३०
मत्स्य	१०	१७	,,	३	३३	मायादेवीसुत	१	१५
मत्स्यवेधन	१०	१६	मरीचिका	३	३५	मार	१	२५
मत्स्याधानी	१०	१६	मरुत्	१	६२	मारजित्	१	१३
मदन	१	२५	,,	३	२	मारिष	७	१४
मद्गुर	१०	१९	मरुत्वत्	१	४१	मारुत	१	६२
मधु	४	४५	मर्दल	७	८	मार्ग	४	१४
मधुर	५	९	मर्मर	६	२३	मार्गशीर्ष	४	१४
मधुरिपु	१	२०	मह	७	३८	मार्तण्ड	३	२९
मध्यम	७	१	महादेव	१	३२	मालुधान	८	६
मध्याह्न	४	३	महाराजिक	१	१०	मास	४	१२
मनस्	४	३१	महारौरव	९	१	मित्र	३	३०
मनसिज	१	२६	महासेन	१	३९	मिथ्यादृष्टि	५	४
मनस्कार	५	२	महीलता	१०	२१	मिथ्याभियोग	६	१०
मनीषा	५	१	महीसुत	३	२५	मिथ्याभिशंसन्	६	१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
मिथ्यामति	५	४	मेघज्योतिस्	३	१०	यादसांपति	१	६१
मिहिका	३	१८	मेघनिर्घोष	३	८	याम	४	६
मिहिर	३	२९	मेघपुष्प	१०	५	यामिनी	४	४
मीन	१०	१७	मेघमाला	३	८	युवराज	७	१२
मीनकेतन	१	२५	मेघवाहन	१	४४	[र]		
मुक्तकञ्चुक	८	६	मेचक	५	१४	रहस्	१	६४
मुक्तास्फोट	१०	२३	मेधा	५	२	रक्त	५	१४
मुक्ति	५	६	मेरु	१	४९	रक्तपा	१०	२२
मुखवासन	५	११	मैत्रावरुणि	३	२०	रक्तसन्ध्यक	१०	३६
मुद	४	२४	मोक्ष	५	७	रक्तसरोरुह	१०	४१
मुदिर	३	७	म्लिष्ट	६	२१	रक्तोत्पल	१०	४२
मुनि	१	१४	[य]			रक्षस्	१	११
मुरज	७	५	यक्ष	१	११	,,	१	६०
मुसलिन	१	२४	,,	१	६९	रजनी	४	४
मुहुर्भाषा	६	१६	यक्षराज	१	६८	रजनीमुख	४	६
मुहूर्त	४	११	यजुस	६	३	रजस्	४	२९
मृगतृष्णा	३	३५	यम	१	५८	रतिपति	१	२६
मृगशिरस्	३	२३	यमराज्	१	५८	रत्नसानु	१	४९
मृगशीर्ष	३	२३	यमुना	१०	३२	रत्नाकर	१०	२
मृगाङ्क	३	१४	यमुनाभ्रातृ	१	५८	रन्ध्र	८	२
मृड	१	३१	यशःपटह	७	६	रय	१	६४
मृडानी	१	३७	यशस्	६	११	रव	६	२२
मृणाल	१०	४२	यातना	९	३	रवि	३	३१
मृत्युञ्जय	१	३१	यातु	१	६०	रस	५	७
मृदङ्ग	७	५	यातुधान	१	६०	रस	५	९
मेकलकन्यका	१०	३२	यादःपति	१०	२	,,	७	१७
मेघ	३	६	यादस्	१०	२०	रसातल	८	१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
रसित	३	८	रोक	८	२	लवणोद	१०	२
राका	४	८	रोचिस्	३	१४	लाञ्छन	३	१७
राजराज	१	६८	रोधस्	१०	७	लालसा	७	२८
राजिल	८	५	रोमहर्षण	७	३५	लासिका	७	८
राजीव	१०	१९	रोमाञ्च	७	३५	लास्य	७	१०
,,	१०	१९	रोष	७	२६	लिप्सा	७	२७
रात्रि	४	४	रोहित	५	१५	लोला	७	३२
रात्रिञ्चर	१	६०	,,	१०	१९	,,	७	३२
राद्धान्त	५	४	रोहिताश्व	१	५५	लेख	१	८
राध	४	१५	रौद्र	७	१७	लेखपत्र	१	४२
राधा	३	२२	,,	७	२०	लोकजित्	१	१३
राम	१	२३	रौरव	९	१	लोकेश	१	१६
राष्ट्रिय	७	१४	रौहिणेय	१	२४	लोपामुद्रा	३	२०
राहु	३	२६	,,	३	२६	लोहित	५	१५
रिङ्गण	७	३६	[ल]			लोहिताङ्ग	३	२५
रीढा	७	२३	लक्षण	३	१७	[व]		
रुच्	३	३४	लक्ष्मन्	३	१७	वचन	६	१
रुचि	३	३४	लक्ष्मी	१	२७	वचस	६	१
रुदित	७	३५	लक्ष्म	७	३३	वज्र	१	४७
रुद्र	१	१०	लग्न	३	२७	वज्रनिर्घोष	३	१०
,,	१	३४	लघु	१	६४	वज्रिन्	१	४२
रुद्राणी	१	३७	लज्जा	७	२३	वत्सनाम	८	११
रुष्	७	२६	लपित	६	१	वत्सर	४	१३
रुषती	६	१८	लम्बोदर	१	३८	,,	४	२०
रूप	५	७	लय	७	९	वन	१०	३
रेवतीरमण	१	२३	ललित	७	३१	वनमालिन्	१	२१
रेवा	१०	३२	लवण	५	९	वपा	८	२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
वराटक	१०	४३	वामदेव	१	३२	,,	४	२८
वरुण	१	६१	वामन	३	३	विधु	१	२२
,,	३	२	वायु	१	६१	,,	३	१४
वर्ष	३	११	वायुसख	१	५५	विधुन्तुद	३	२६
वर्षा	४	१९	वार	१०	३	विनायक	१	१४
वर्षाभू	१०	२४	वारि	१०	३	,,	१	३८
वर्षाम्वी	१०	२४	वारिद	३	७	विपञ्ची	७	३
वर्षापल	३	१२	वारिपर्णी	१०	३८	विपाद्	१०	३३
वलक्ष	५	१३	वारिवाह	३	६	विपाशा	१०	३३
वल्लकी	७	३	वार्ता	६	७	विप्रतीसार	७	२५
वसन्त	४	१८	वस्तोष्पति	१	४३	विप्रलम्भ	७	३६
वसु	१	१०	वाहस	८	५	विप्रलम्भ	६	६१
वसुदेव	१	२२	विकर्तन	३	२९	विप्रुष्	१०	६
वह्नि	१	५३	विकृत	७	१९	विबुध	१	१०
,,	३	२	विघ्नराज	१	३८	विभाकर	३	२८
वाक्पति	१	३५	विचारणा	५	२	विभावरी	४	४
वाक्य	६	२	विचिकित्सा	५	३	विभावसु	१	५६
वाङ्मुख	६	९	विज्ञान	५	६	,,	३	३०
वाच्	६	१	विडौजस्	१	४१	विभूति	१	३६
वाचस्पति	३	२४	वितथ	६	२१	विभ्रम	७	३१
वाचिक	६	१७	विदारक	१०	१०	विमान	१	४८
वाञ्छा	७	२७	विदिश	३	५	वियत्	२	२
वाणी	६	१	विद्याधर	१	४१	वियद्गङ्गा	१	४९
वात	१	६३	विद्युत्	३	९	विरञ्च	१	१७
वादित्र	७	५	विद्वेष	७	२५	विराव	६	२३
वाद्य	७	४	विधात्	१	१७	विरूपाक्ष	१	३२
वापी	१०	२८	विधि	१	१७	विरोचन	३	३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
विरोध	७	२५	विष्णुरथ	१	२९	वेपथु	७	३८
विरोधोक्ति	६	१६	विष्वक्सेन	१	१९	वेशन्त	१०	२८
विलाप	६	१६	विसंवाद	७	३६	वैकुण्ठ	१	१७
विलास	७	३१	विसार	१०	१७	वैजयन्त	१	४६
विवर	८	१	विस्मय	७	१९	वैतरणी	९	२
विवस्वत्	३	२९	विसु	५	१२	वैधात्र	१	५१
विवाद	६	९	विहसित	७	३५	वैनतेय	१	२९
विद्योत	७	३१	विहायस्	३	२	वैर	७	२५
विशद	५	१२	वीचि	१०	५	वैरनिर्यातन	८	११०
विशाख	१	४०	वीणा	७	३	वैवस्वत	१	५९
विशाखा	३	२२	वीतिहोत्र	१	५३	वैशाख	४	१६
विश्व	१	१०	वीनाह	१०	२७	वैश्रवण	१	६९
विश्वकेतु	१	२७	वीर	७	१७	वैश्वानर	१	५३
विश्वम्भर	१	२२	,,	७	१८	वैसारिण	१०	१७
विश्वसृज्	१	१७	वीर्य	७	२९	व्यक्ति	४	३१
विष	८	९	वृजिन	४	२३	व्यञ्जक	७	१६
विषधर	८	७	वृत्तान्त	६	७	व्यथा	९	३
विषय	५	७	वृत्रहन्	१	४२	व्यवधा	३	११
विषयिन्	५	८	वृद्धश्रवस्	१	४१	व्यवहार	६	८
विषवैद्य	८	११	वृन्दारक	१	९	व्याज	७	३०
विषुव	४	१४	वृष	४	२४	,,	७	३३
विषुवत्	४	१४	वृषध्वज	३	३४	व्यान	१	६३
विष्टरश्रवस्	१	१७	वृषन्	१	४२	व्यापाद	५	४
विष्टि	९	३	वृष्टि	३	११	व्याल	८	७
विष्णु	१	१८	वेत्रवती	१०	३४	व्यालग्राहिन्	८	११
विष्णुपद	२	२	वेद	६	३	व्याहार	६	९
विष्णुप	१०	३१	वेधस्	१	१७	व्योमकेश	१	३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
व्योमन्	२	१	शफरी	१०	१८	शाक्यसिंह	१	१५
व्योमयान	१	४८	शबल	५	१७	शाठ्य	७	३०
व्रीडा	७	२३	शब्द	५	७	शाद	१०	९
व्रीहि	९	१५	,,	६	२०	शार्ङ्गिन्	१	१९
[श]			,,	६	२२	शाल	१०	१९
शंवर	१०	४	शमन	१	५८	शालूक	१०	३८
शकल	३	१६	शमनस्वसृ	१०	३२	शालू	१०	२४
शकलिन्	१०	१७	शम्पा	३	९	शास्तृ	१	१४
शकुल	१०	१९	शम्ब	१	४७	शिक्षा	६	४
शकुलार्भक	१०	१७	शम्बर	१०	४	शिखा	१	५७
शक्तिधर	१	४०	शम्बरारि	१	२६	शिखावत्	१	५५
शक्र	१	४२	शम्बूक	१०	२३	शिखिवाहन	१	४०
शक्रधनुस्	३	१०	शम्भु	१	३०	शिञ्जित	६	२४
शङ्कर	१	३०	शयन	७	३६	शितिकण्ठ	१	३२
शङ्कु	१०	२०	शयु	८	५	शिफाकन्द	१०	४३
शङ्ख	१	७१	शरजन्मन्	१	३९	शिली	१०	२४
,,	१	२३	शरद	४	१९	शिव	१	३०
शङ्खनख	१०	२३	,,	४	२०	,,	४	२५
शची	१	४५	शरावती	१०	३४	शिवा	१	३७
शचीपती	१	४३	शरीरिन्	४	३०	शिशिर	३	१९
शतकोटि	१	४७	शर्मन्	४	२४	,,	४	१८
शतपत्र	१०	४०	शर्व	१	३०	शिशुक	१०	१८
शतमन्यु	१	४२	शर्वरी	४	३	शिशुमार	१०	१०
शतह्रदा	३	९	शर्वाणी	१	३७	शीघ्र	१	६४
शनैश्चर	३	२६	शशधर	३	१५	शीत	३	१९
शपथ	६	९	शस्त	४	२६	,,	३	१९
शपन	६	९	शाक्यमुनि	१	१४	शीतल	३	१९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
शील	७	२६	शेमुषी	५	१	श्रीपति	१	२१
शुक्ति	१०	२३	शेवधि	१	७२	श्रीवत्सलाञ्छन	१	२२
शुक्र	१	५६	शेवाल	१०	३८	श्रुति	६	३
,,	३	२५	शेष	८	४	श्रेयस्	४	२४
,,	४	१६	शैवलिनी	१०	३०	,,	५	६
शुक्रशिष्य	१	१२	शैवाल	१०	३८	श्वःश्रेयस्	४	२५
शुक्ल	१	१२	शोक	७	२५	श्वभ्र	८	२
,,	५	१२	शोचिष्केश	१	५४	श्वयथु	६	५२
शुच्	७	२५	शोचिस्	३	३४	श्वसन	१	६१
शुचि	१	५६	शोण	५	१५	श्वेत	५	१२
,,	४	१७	,,	१०	३४	श्वेतरक्त	५	१५
,,	५	१२	शोभा	३	१७	[ष]		
,,	७	१७	शौक्लिकेय	८	१०	षडभिज्ञ	१	१४
शुतुद्रि	१०	३३	शौद्धोदनि	१	१५	षडानन	१	३९
शुतुद्रु	१०	३३	शौरि	१	२१	षड्ज	७	१
शुभ	४	२५	श्याम	५	१४	षण्ड	१०	४२
शुभ्र	५	१२	श्यामल	५	१४	षाण्मातुर	१	४०
शुभ्रदन्ती	३	५	श्याव	५	१६	[स]		
शुभ्रांशु	३	१४	श्येत	५	१२	संराव	६	२३
शुषि	८	२	श्रविष्ठा	३	२२	संलाप	६	१६
शुषिर	८	१	श्राद्धदेव	१	५९	संवत्सर	४	२०
,,	८	२	श्रावण	४	१६	संवर्त	४	२२
शुष्मन्	१	५४	श्रावणिक	४	१६	संवर्तिका	१०	४३
शूलिन्	१	३०	श्री	१	२७	संविद्	५	१
शृङ्गार	७	१७	श्रीकण्ठ	१	३२	,,	५	५
,,	७	१७	श्रीघन	१	१४	संवेग	७	३४
शृङ्गी	१०	२५	श्रीद	१	६९	संवेश	७	३६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
संशय	५	३	सप्तार्चिस्	५	५६	सरित्पति	१०	१
संश्रव	५	५	सप्ताश्व	३	२९	सरीसृप	८	७
संसिद्धि	७	३७	समज्ञा	६	११	सर्प	८	६
संहूति	६	८	समन्तभद्र	१	१३	सर्पराज	८	४
सङ्कर्षण	१	२४	समय	४	१	सर्वज्ञ	१	१३
सङ्कल्प	५	२	समवर्तिन्	१	५८	,,	१	३३
सङ्कुल	६	१९	समस्या	६	७	सर्वतोमुख	१०	४
संक्रन्दन	१	४४	समा	४	२०	सर्वमङ्गला	१	३७
सङ्ख्या	५	२	समाकर्षिन्	५	११	सर्वार्थसिद्ध	१	१५
सङ्गत	६	१८	समाधि	५	५	सलिल	१०	७
सङ्ग्रह	६	६	समान	१	६३	सवितृ	३	३१
सङ्घात	९	२	समासार्था	६	७	सहस्	४	१४
सञ्ज्वर	१	५७	समाहृति	६	६	सहस्य	४	१५
सतत	१	६५	समीर	१	६२	सहस्रदंष्ट्र	१०	१८
सत्त्व	४	२९	समीरण	१	६२	सहस्रपत्र	१०	४०
सत्य	६	२२	समुद्र	१०	१	सहस्रांशु	३	३१
सत्वर	१	६५	सम्भेद	१०	३५	सहस्राक्ष	१	४४
सदागति	१	६१	सम्भ्रम	७	३४	सांयात्रिक	१०	१२
सदानीरा	१०	३३	सम्माद	४	२४	सागर	१०	१
सनत्कुमार	१	५१	सम्यक्	६	२२	सात	४	२५
सन्तत	१	६५	सरस्	१०	२८	सात्त्विक	७	१६
सन्तमस	८	४	सरसी	१०	२८	सांध्य	१	१०
सन्तान	१	५०	सरसीरुह	१०	४०	साध्वस	७	२१
सन्ताप	१	५७	सरस्वत्	१०	१	सान्त्व	६	१८
सन्देशवाक्	६	१७	सरस्वती	६	१	सामन	६	३
सन्देह	५	३	,,	१०	३४	सामान्य	४	३१
सन्ध्या	४	३	सरित्	१०	२९	सायम्	४	३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
सारव	१०	३६	सुप्रलाप	६	१७	सेचन	१०	२३
सारस	१०	४०	सुमनस्	१	७	सेनानी	१	४९
सार्वभौम	३	४	सुमेरु	१	४९	सैंहिकेय	३	२६
सिकतामय	१०	९	सुर	१	७	सैकत	१०	९
सित	५	१३	सुरज्येष्ठ	१	१६	सैतवाहिनी	१०	३३
सिताम्भोज	१०	४१	सुरदीर्घिका	१	४९	सोपप्लव	४	१०
सिद्ध	१	११	सुरद्विष्	१	१२	सोम	३	१४
सिद्धान्त	५	४	सुरनिम्नगा	१०	३१	सोमोद्भवा	१०	३२
सिध्य	३	२२	सुरपति	१	४३	सौगन्धिक	१०	३६
सिनोवाली	४	९	सुरभि	४	१८	सौदामनी	३	९
सिन्धु	१०	१	,,	५	११	सौम्य	३	२६
सिन्धुसङ्गम	१०	३५	सुरर्षि	१	४८	सौराष्ट्रिक	८	१०
सीकर	३	११	सुरलोक	१	६	सौरि	३	२६
सीरपाणि	१	२४	सुरवर्त्मन्	२	१	स्कन्द	१	३९
सुकृत	४	२४	सुराचार्य	३	२४	स्खलन	७	३६
सुख	४	२५	सुरालय	१	४९	स्तनयित्नु	३	६
सुगत	१	१३	सुवचन	६	१७	स्तनित	३	८
सुगन्धि	५	११	सुषमा	३	१७	स्तव	६	११
सुत्रामन्	१	४२	सुषिर	७	४	स्तुति	६	११
सुदर्शन	१	२८	सुषीम	३	१९	स्तोत्र	६	११
सुधर्मन्	१	४८	सुनृत	६	१९	स्थाणु	१	३४
सुधा	१	४८	सूर	३	२८	स्नेह	७	२७
सुधाशु	३	१४	सूरसूत	३	३२	स्पर्श	५	७
सुनासीर	१	४१	सूर्य	३	२८	स्पर्शन	१	६१
सुपर्ण	१	२९	सूर्यतनया	१०	३२	स्पृहा	७	२७
सुपर्वन्	१	७	सूर्येन्दुसङ्गम	४	८	स्फटा	८	९
सुप्रतीक	३	४	सेकपात्र	१०	१३	स्फुलिङ्ग	१	५७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०	शब्दाः	वर्गाः	श्लो०
स्फूर्जथु	३	१०	[ह]			हिम	३	१८
स्मर	१	२५	हंस	३	३१	,,	३	१९
स्मरहर	१	३३	हञ्जे	७	१५	हिमसंहति	३	१८
स्मित	७	३४	हण्डे	७	१५	हिमांशु	३	१३
स्मृति	६	६	हर	१	३३	हिमानी	३	१८
,,	७	२९	हरिचन्दन	१	५०	हिरण्यगर्भ	१	१६
स्यद	१	६४	हरिण	५	१३	हिरण्यरेतस्	१	५५
स्रवन्ती	१०	३०	हरित्	३	१	हिरण्यवाह	१०	३४
स्रष्टृ	१	१७	,,	५	१४	हुतभुज्	१	५५
स्रोतस्	१०	११	हरित	५	१४	हूति	६	८
स्रोतस्वती	१०	३०	हरिदश्व	३	२९	हूहू	१	५
स्वन	६	२२	हरिद्राभ	५	४१	हृद्	४	३१
स्वप्न	७	३६	हरिप्रिया	१	२७	हृदय	४	१३
स्वभाव	७	३८	हरिहय	१	४३	हृदयङ्गम	६	१८
स्वभू	१	१८	हर्ष	४	२४	हृषीक	५	८
स्वयम्भू	१	१६	हला	७	१५	हृषीकेश	१	१८
स्वर	६	४	हलायुध	१	२३	हेति	१	५७
स्वरु	१	४७	हलाहल	८	१०	हेतु	४	३८
स्वरूप	७	३८	हलिन्	१	२४	हेमन्त	४	१८
स्वर्ग	१	६	हल्लक	१०	३६	हेमाद्रि	१	४९
स्वर्णदी	१	४९	हव्यवाहन	१	५५	हेरम्ब	१	३८
स्वर्भानु	३	२६	हस	७	१८	हेला	७	३२
स्ववश्या	१	५२	हायन	४	२०	हैमवती	१	३६
स्वर्वैद्य	१	५१	हार्द	७	२४	ह्रद	१०	२५
स्वान	६	२३	हाव	७	३२	ह्रादिनी	१	४७
स्वान्त	४	३१	हास	७	१९	,,	१	३९
स्वाप	७	३६	हास्य	७	१७	,,	१०	३०
स्वाराज्	१	४३	,,	७	१९	ह्री	७	२३
स्वेद	७	३३	हाहा	१	५२			

●●●

22258

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे महत्त्वपूर्ण छात्रोपयोगी प्रकाशन

(मूल पाठ के साथ संस्कृत-हिन्दी टीका, भूमिका, टिप्पणी एवं अन्य छात्रोपयोगी सामग्री सहित)

अभिज्ञानशाकुन्तलम्	सुबोधचन्द्र पन्त
उत्तररामचरितम्	आनन्दस्वरूप
कादम्बरी (कथामुख)	रतिनाथ झा
काव्यदीपिका	परमेश्वरानन्द शर्मा
किरातार्जुनीयम् (१-४ सर्ग)	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
चन्द्रालोक	सुबोधचन्द्र पन्त
नागानन्द नाटक	संसारचन्द्र
नीतिशतकम्	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
प्रतिमानाटकम्	श्रीधरानन्द शास्त्री
प्रसन्नराघवम्	रमाशंकर त्रिपाठी
बालचरित	कमलेशदत्त त्रिपाठी
भट्टिकाव्यम् (१-४ सर्ग)	रामअवध पाण्डेय
भट्टिकाव्यम् (५-८ सर्ग)	रामगोविन्द शुक्ल
मृच्छकटिकम्	रमाशंकर त्रिपाठी
मालविकाग्निमित्रम्	संसारचन्द्र
मेघदूत (सम्पूर्ण)	संसारचन्द्र
रघुवंश (१-१९ सर्ग)	धारादत्त शास्त्री
रामाभ्युदययात्रा	श्यामाचरण पाण्डेय
वृत्तरत्नाकरम्	श्रीधरानन्द शास्त्री
वेणीसंहार	रमाशंकर त्रिपाठी
शिशुपालवध (१-४ सर्ग)	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
स्वप्नवासवदत्त	जयपाल विद्यालंकार
साहित्यदर्पण	शालिग्राम शास्त्री
सौन्दरनन्दकाव्य	सूर्यनारायण चौधरी
हितोपदेश-मित्रलाभः	विश्वनाथ शर्मा

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर, वाराणसी, पुणे, पटना

M L B D

मूल्य : रु 48.00

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu